Annual Subscription ₹ 480 | Vol.25, Issue 4

फरवरी 2026

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

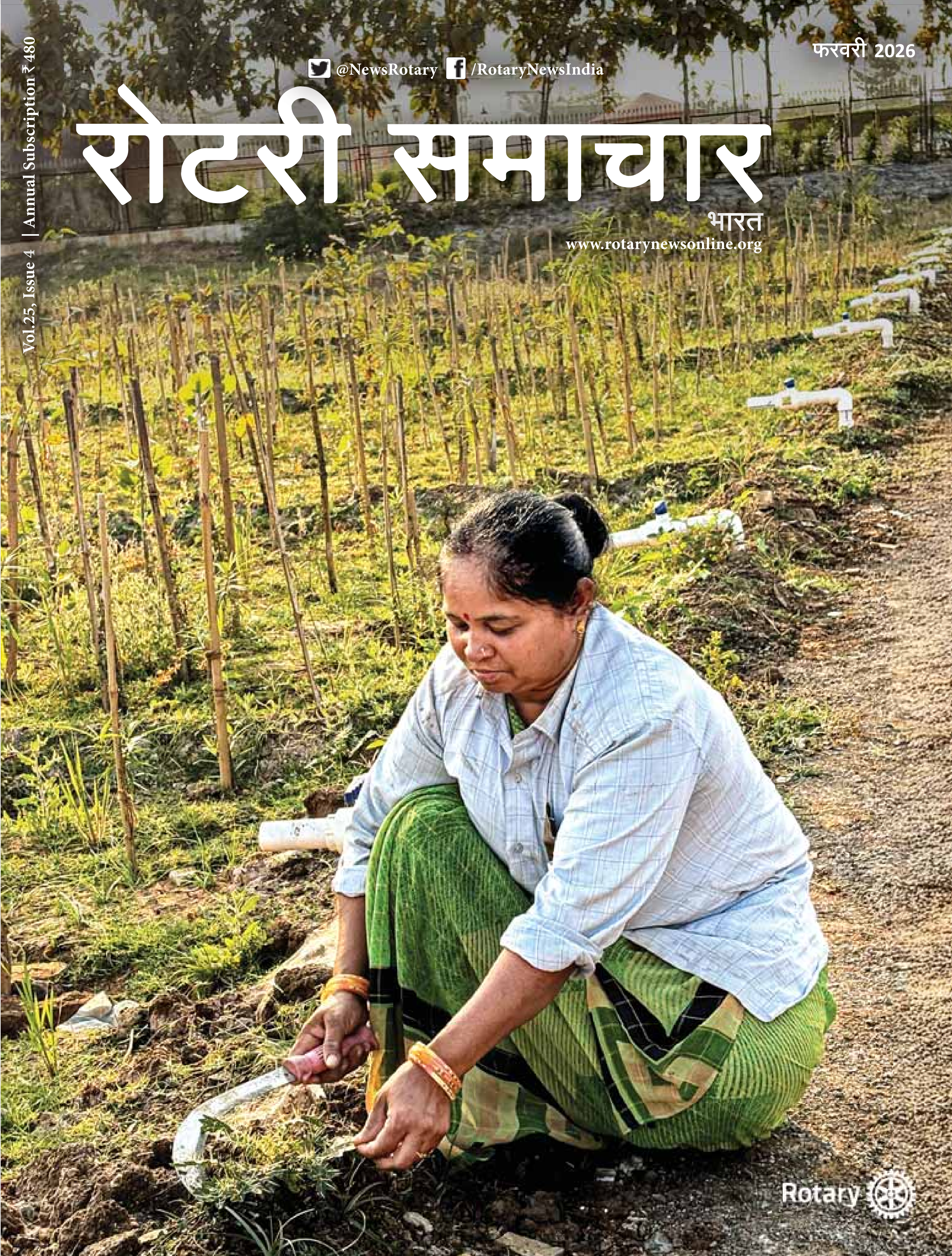

Rotary

ADVT.

DPIIT
#startupindia
TEDXYOUTH@RJM
GOT AN IDEA THAT SPARKS CHANGE IN WASTE MANAGEMENT?
Share it-you could be our next TEDx Speaker
TOPIC:
MY GARBAGE, MY RESPONSIBILITY
1 RECORD YOUR SPEECH
SPEAK ON "MY GARBAGE, MY RESPONSIBILITY"
KEEP IT 15 MINUTES MAX
GOOD QUALITY VIDEO (720P OR HIGHER)
VERTICAL OR SQUARE FORMAT (9:16 OR 1:1)
2 SEND IT TO US
EMAIL THE VIDEO LINK TO:
rjgarbagebank@gmail.com
SUBJECT: TEDX TALK SUBMISSION
INCLUDE YOUR NAME & CITY
3 GET SELECTED
AFTER A RIGOROUS SCRUTINY BY
OUR PANEL ,GET YOUR VOICE AMPLIFIED
AND CREATE A GLOBAL IMPACT
LAST DATE TO SUBMIT YOUR VIDEO :
30TH MARCH 2026
Event co-partnered by
GARBAGE BANK
+91 84388 52866

विषयसूची

12
रोटरी क्लब भावनगर की स्थायी परियोजनाएँ

20
डीजीई डकोजू और पाओला का ₹500 करोड़ का योगदान

28
गाँव से आसमान तक: बच्चों की उड़ान

34
साड़ी की भव्यता का उत्सव

36
स्वच्छता की नई ऊँचाई: 13,000 फीट पर

42
दृष्टिबाधितों के लिए एक शतरंज टूर्नामेंट

46
भारतीय सशस्त्र बल निडर क्यों हैं

ई-संस्करण अपनाएं। पर्यावरण बचाएं।

ई-संस्करण दर हुई कम

1 जुलाई 2024 से हमारी ई-संस्करण सदस्यता ₹420 से संशोधित कर ₹324 कर दी गई हैं।

Rotary

A publication of Rotary Global Media Network

एक अद्भुत पूरी-भाजी परियोजना

रोटरी क्लब देओलाली के महाराज बिरमानी और उनकी पत्नी रोमा पिछले 28 वर्षों से कामकाजी समुदाय को पूरी-भाजी उपलब्ध कराकर अद्भुत सेवा कर रहे हैं (जनवरी कवर स्टोरी)। वे जो काम कर रहे हैं, उसकी वजह से बिरमानी गर्व से कह सकते है कि, ''देओलाली में कोई भी भूखा नहीं सोता।''

आइए इस दंपती को उनके शानदार कार्य के लिए बधाई दें और ईश्वर से प्रार्थना करें कि उन्हें दीर्घायु प्रदान करें। रो ई निदेशक मुरुगानंदम ने *चमकते रहो, बढ़ते रहो* शीर्षक के साथ एक सार्थक संदेश लिखा है।

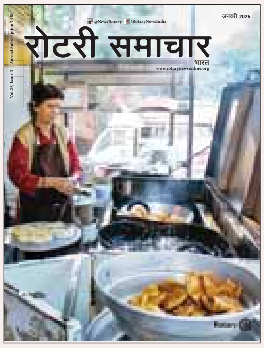

सदस्यता, रोटरी संस्थान और सेवा के साथ-साथ सार्वजनिक छवि रोटरी के महत्वपूर्ण स्तंभों में से एक है। वह सही कहते हैं, ''हमें दुनिया का साथ तभी मिलेगा जब दुनिया हमें देखेगी और समझेगी।'' हमें रोटरी का ध्वज सदैव ऊँचा रखना चाहिए।

एस मोहन, रोटरी क्लब मदुरई वेस्ट - मंडल 3000

नवनियुक्त रो ई अध्यक्ष की विषयवस्तु *स्थायी प्रभाव पैदा करें* रोटरी कलब देओलाली के महाराज बिरमानी पर आधारित कवर स्टोरी के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। उनके नेक कार्य और *स्वयं से ऊपर सेवा* की भावना ने मुझे अत्यंत प्रभावित किया। ऐसी सेवा समाज पर स्थायी प्रभाव डालती है और रोटरी की सार्वजनिक छवि को मजबूत करती है।

साजन सुरेश, रोटरी कलब कलपेट्टा - मंडल 3204

भूख मिटाने के लिए 28 वर्षों के करुणामय प्रयासों पर आधारित कवर स्टोरी ने दिल को छू लिया। बिरमानी वास्तव में एक अद्भुत व्यक्ति हैं। उनकी निरंतर और पौष्टिक भोजन सेवा ने गरीब श्रमिकों के स्वास्थ्य में सुधार किया है। आईकेवायएएम फीडिंग होप में, हम साप्ताहिक भोजन वितरित करते हैं। पिछले वर्ष, हमने 2,556 भोजन वितरित किए। बिरमानी की सेवा प्रेरणादायक है। इस वर्ष, मैं इस सेवा कार्य को और बेहतर बनाने की योजना बना रहा हूँ। इस शानदार लेख के लिए लेखक का धन्यवाद।

शिवा पेरुमल सुब्रमणि

रोटरी क्लब वलाजापेट - मंडल 3231

आपको और आपकी टीम को नए साल की शुभकामनाएं। हम सभी उस प्रतिबद्धता, समर्पण और कुशलता की सराहना करते हैं जिसके साथ आप इतने वर्षों से महीने-दर-महीने रोटरी के जादू को फैला रहे हैं।

आज सुबह, मैंने जनवरी का अंक लिया और हमेशा की तरह सबसे पहले आपका संदेश *शांति की महत्ता* को पढ़ा। हालाँकि मैं शांति के संदेश से पूरी तरह सहमत हूँ, लेकिन मेरा सुझाव है कि रोटेरियन के रूप में हमें दुनिया के किसी भी समूह या समुदायों के पक्ष या विपक्ष में रुख अपनाने से बचना चाहिए। यदि आपको लगता है कि फिलिस्तीनी प्रताड़ित हैं, तो ऐसे लोग भी हैं जो इसके विपरीत सोचते हैं। इसलिए, हमें विवादास्पद रुख लेने से बचना चाहिए। यह केवल मेरी व्यक्तिगत राय नहीं है, बल्कि कई लोगों का विचार है, और मुझे उम्मीद है कि इसे सही भावना से समझा जाएगा।

सुनील गोयल

रोटरी कलब नीलगिरीस - मंडल 3203

रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को ऐरेज़ो का संदेश (दिसंबर अंक) शानदार था। शहर की रक्त की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए 'मोबाइल ब्लड बैंक' उपलब्ध कराने हेतु रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सेंट्रल को बहुत-बहुत बधाई; यह मरीजों, दुर्घटना पीड़ितों और सर्जरी के मामलों में लोगों की जान बचाने में मदद करता है।

रो ई मंडल 3233 को 200 महिलाओं को सिलाई मशीन और कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर उनके आर्थिक सशक्तिकरण के सपने को पूरा करने के लिए बधाई, जिससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकेंगी और अपने परिवार की देखभाल कर सकेंगी।

मुत्तुकुमारन का लेख 'आइए पोलिओ को हमेशा के लिए खत्म करें' लाजवाब था। गीता मथई का लेख *बी12 आपकी नसों की सेहत की चाबी* जानकारीपूर्ण था। इसके लिए उन्हें बधाई। हमें *रोटरी न्यूज़* में नियमित रूप से ऐसे विषयों को शामिल करना चाहिए।

डैनियल चित्तिलापिल्ली

रोटरी कलब कलूर - मंडल 3205

नवंबर के अंक में रोटरी कलब इंफाल की विभिन्न सामुदायिक परियोजनाओं को प्रकाशित करने के लिए आपकी और आपकी मेहनती टीम के प्रति मेरा हार्दिक आभार।

मणिपुर में जीवन परिवर्तन जैसे अर्थपूर्ण लेख के लिए जयश्री को बहुत-बहुत धन्यवाद, जिसमें हमारे क्लब द्वारा की गई पहलों पर प्रकाश डाला गया है। इस कवरेज ने हमारे क्लब के मनोबल को बढ़ाया है और हमें व्यापक दर्शकों तक पहुँचने में मदद की है, जिससे अन्य लोग भी हमारे नेक कार्य से जुड़ने के लिए प्रेरित हुए हैं। सामुदायिक परियोजनाओं को प्रदर्शित करने की आपकी प्रतिबद्धता के लिए हम आभारी हैं और भविष्य में भी ऐसे ही ज्ञानवर्धक लेखों के माध्यम से निरंतर सहयोग की आशा करते हैं।

एन मुहिंद्रो सिंह

रोटरी क्लब इंफाल - मंडल 3240

रोटरी की 121 वर्षों की यात्रा आज की दुनिया को आकार देने में इसके प्रभाव का एक जीवंत प्रमाण है। अध्यक्षीय संदेश स्थायी प्रभाव पैदा करें विश्वभर के 'कार्यवाही करने

वाले लोगों' के लिए स्थानीय और वैश्विक स्तर पर 'प्रभाव डालने के लिए कार्य करने' का एक स्पष्ट आह्वान है।

मुरली कृष्ण, रोटरी क्लब बेरहामपुर - मंडल 3262

परदे के पीछे, जिसमें तेजस संस्थान के कुछ दिलचस्प पलों का हल्के-फुल्के अंदाज में वर्णन किया गया है, पढ़ने में बहुत रोचक है। एक अन्य लेख, *जब विज्ञान दस्तक देता है* में रोटरी की पहल के माध्यम से छात्रों द्वारा प्रयोगों के व्यावहारिक प्रदर्शन को बखूबी दिखाया गया है। रोटरी न्यूज़ को इतना दिलचस्प और पठनीय बनाने के लिए हम संपादक रशीदा भगत और उनकी टीम के प्रयासों की सराहना करते हैं।

राधेश्याम मोदी
रोटरी क्लब अकोला - मंडल 3030

जब विज्ञान दस्तक देता है लेख को पढ़कर हमें बहुत सम्मानित महसूस हुआ, क्योंकि इसमें इदयम के साथ साझेदारी में संचालित रोटरी क्लब विरुधुनगर की सबसे प्रिय परियोजना *विज्ञान रथ* के सार को बखूबी दर्शाया गया है। जयश्री ने विवरणों का बहुत सुंदर संकलन किया है, परियोजना के प्रभाव और लाभों को स्पष्ट रूप से रेखांकित किया है और उन उदार सदस्यों का आभार व्यक्त किया है जिनका योगदान इसकी सफलता में सहायक रहा।

इस पहल को मान्यता देने के लिए आपका धन्यवाद और आभार, क्योंकि यह हमें अपनी सेवा के प्रयासों में और अधिक और बेहतर करने के लिए निरंतर प्रयास करने की प्रेरणा देता है। धन्यवाद, मैडम।

पीडीजी वी आर मुत्तु
रोटरी क्लब विरुधुनगर - मंडल 3212

राहुल डी शाह का लेख *कैसे AI रोटरी के काम को नए रूप में बदल सकती है* बहुत अच्छा और सरल था, लेकिन साथ ही इसमें इस उभरती हुई तकनीक से संबंधित मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई। यह लेख रोटेरियनों को स्पष्ट रूप से समझाता है कि वे अपने क्लबों और नेटवर्किंग गतिविधियों के लिए एआई जैसी डिजिटल तकनीकों का उपयोग कैसे कर सकते हैं। विश्लेषण का समापन एक मर्मस्पर्शी कथन के साथ होता है कि ''एआई एक ऐसा उपकरण है जो हमारी सेवा करने की क्षमता को बढ़ाता है, लेकिन इसे हमारे मूल्यों का विकल्प नहीं होना चाहिए।'' लेखक को बहुत-बहुत बधाई।

पी एस कामराज पिल्लई
रोटरी क्लब सेलम जिमखाना - मंडल 2982

मानसिक स्वास्थ्य पर एक असाधारण लेख

मैंने जनवरी अंक में विध्या सुब्रमण्यन का लेख "अपनी भावनाओं को कैद मत करो" पढ़ा और प्रतिक्रिया दिए बिना नहीं रह सका। किसी प्रसिद्ध निदेशक की जीवनसाथी अक्सर परदे के पीछे रह जाती हैं। लेकिन पीआरआईडी राजू सुब्रमण्यन की जीवनसाथी द्वारा लिखे गए इस लेख ने उन्हें वहीं स्थान दिया जिसकी वे हकदार हैं - असाधारण साहस से भरी एक ऐसी महिला के रूप में, जो दूसरों को सहायता लेने के लिए प्रेरित करती हैं और ज़रूरत पड़ने पर स्वयं उपलब्ध रहती हैं।

आपकी बातें अत्यंत सामयिक और साहसी थी। हम अक्सर सेवा और नेतृत्व की चर्चा तो करते हैं, लेकिन आपके इस लेख ने मुझे याद दिलाया कि हम खाली प्याले से दूसरों की प्यास नहीं बुझा सकते। मैं विशेष रूप से उस बात से प्रभावित हुआ कि कैसे अत्यधिक सहनशीलता वास्तव में आत्मघाती हो सकती है। यह एक ऐसा दृष्टिकोण है जो हमें शायद ही कभी सुनने को मिलता है, खासकर हमारे जैसे परिवेश में जहाँ हमें केवल तालमेल बिठाना और डटे रहना सिखाया जाता है।

मैं मानसिक स्वास्थ्य की इतनी प्रबल समर्थक होने और हमें चुप्पी तोड़ने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए उनका धन्यवाद करना चाहता हूँ। वह और रो ई मंडल 3141 की टीम पॉडकास्ट के माध्यम से जो कार्य कर रहे हैं, वह वास्तव में क्रांतिकारी है। हमें उनकी जैसी और भी आवाजों की आवश्यकता है जो हमें याद दिला सकें कि अपनी मानसिक शांति को प्राथमिकता देना पूरी तरह से सही है।

मुझे पूरी उम्मीद है कि पीआरआईपी गॉर्डन मेकिनली ने यह लेख पढ़ा होगा। वे निश्चित रूप से इसकी सराहना करेंगे।

पीआरआईपी के आर रवींद्रन

मैंने नेतृत्व का अद्भुत सफर को बहुत रुचि के साथ पढ़ा, जिसने कठिन इलाकों में हमारे देश की रक्षा करने वाले हमारे सैनिकों पर प्रकाश डाला। इसे पढ़ते समय मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई; कृपया ऐसे प्रेरणादायक लेख प्रकाशित करते रहें।

ए गुना सीलन
रोटरी कलब भवानी कार्पेट सिटी - मंडल 3203

कवर पर: रोटरी क्लब भावनगर द्वारा विकसित मियावाकी जंगल।
चित्र: रशीदा भगत

क्या आपने रोटरी न्यूज़ प्लस पढ़ा है?

हर महीने हम आपकी परियोजनाओं को प्रदर्शित करने के लिए ऑनलाइन प्रकाशन *रोटरी न्यूज़ प्लस* निकालते हैं। यह महीने के मध्य तक ईमेल के माध्यम से प्रत्येक सदस्य को भेजा जाता है। हमारी वेबसाइट www.rotarynewsonline.org पर *रोटरी न्यूज़ प्लस* पढ़ें।

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं ***rotarynews@rosaonline.org*** या ***rushbhagat@gmail.com*** पर संपादक को मेल कीजिए। ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।

आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा ***rushbhagat@gmail.com*** या ***rotarynewsmagazine@gmail.com*** पर भेजे जाने चाहिए।

WhatsApp **पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।**

अध्यक्ष की ज़बानी

हमारे कार्य ही हमारी पहचान बनें

पिछले महीने की अंतर्राष्ट्रीय सभा में, निर्वाचित अध्यक्ष ओलयिंका यिंका हकीम बाबालोला ने रोटरी जगत के सदस्यों से रोटरी वर्ष 2026-27 के अध्यक्षीय संदेश को जीने का आह्वान किया: *स्थायी प्रभाव पैदा करें।*

इस फरवरी, जब हम शांति निर्माण और संघर्ष रोकथाम माह मना रहे हैं, हमारे पास यिंका के इस आह्वान को वास्तविक बदलाव में बदलने का अवसर है।

शांति का अर्थ केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं है। संघर्ष से मुक्त जीवन, लेकिन भूख, अस्थिरता या अपने परिवार की देखभाल करने में असमर्थता से ग्रस्त जीवन, सच्ची शांति का प्रतीक नहीं है। शांति के लिए स्वतंत्रता, अवसर और मानवीय गरिमा के प्रति सम्मान आवश्यक है। फिर भी डर अक्सर इस रास्ते को रोक देता है - बदलाव का डर, सांस्कृतिक नुकसान का डर, या उन लोगों का डर जिन्हें हम समझ नहीं पाते।

डर को बचाव या आक्रामकता से नहीं जीता जा सकता। ज्ञान ही शांति की ओर पहला कदम है। रोटरी इस विचार में विश्वास रखती है। हमारे रोटरी शांति केंद्र और उनके शांति मित्र अन्य शांति शिक्षा पहलों के साथ मिलकर यह प्रदर्शित करते हैं कि कैसे ज्ञान विश्वास पैदा करता है और समुदायों को संघर्ष के समाधान खोजने में मदद करता है।

कोलंबिया में, दशकों के संघर्ष ने गहरे घाव छोड़े हैं। 2025 रोटरी फाउंडेशन प्रोग्राम्स ऑफ स्केल के विजेता, पाथवेस टू पीस एंड प्रास्पेरिटी, संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम के साथ साझेदारी कर रहे हैं ताकि अवसरों का विस्तार किया जा सके, संघर्ष समाधान में सुधार हो सके और लोगों को सामाजिक सेवाओं से जोड़ा जा सके। इसका लक्ष्य हिंसा, गरीबी और खाद्य असुरक्षा के चक्र को तोड़ना है ताकि शांति अपनी जड़ें जमा सके।

महाराष्ट्र, भारत में, पीपल ऑफ एक्शन से सम्मानित स्वाति हर्कल ने समृद्धि के माध्यम से शांति का निर्माण किया। उनकी परियोजना ने किसानों की गिरती मिट्टी की गुणवत्ता, बढ़ते कर्ज और रासायनिक उर्वरकों के कारण होने वाली बीमारी जैसी समस्याओं का सामना किया। उन्होंने और उनके रोटरी भागीदारों ने एक पुनर्योजी कृषि कार्यक्रम शुरू किया जिसने भूमि को पुनर्जीवित किया, लागत कम की और स्थिरता बहाल की। अब 1,100 से अधिक किसान इसमें भाग ले रहे हैं और 50 से अधिक गांवों ने इस मॉडल को अपनाया है।

रोटरी गरिमा बहाल करके भी शांति को बढ़ावा देती है। चाड में, रोटरी शांति मित्र डोमिनो फ्रैंक ने पाया कि विद्रोह में लड़ने वाली 1,500 से अधिक महिलाओं को पुनर्वास कार्यक्रमों से बाहर कर दिया गया था। उनकी वकालत के कारण चाड को रोटरी संस्थान का पहला वैश्विक अनुदान मिला और ङ्मशांति के गलियारेफका निर्माण हुआ। 100 से अधिक महिलाओं ने - जो कि लक्ष्य से तीन गुना अधिक थीं - साक्षरता और व्यावसायिक प्रशिक्षण पूरा किया और अपने परिवारों की सहायता के लिए एक सहकारी संस्था बनाई।

कोलंबिया से लेकर भारत और चाड तक, सबक स्पष्ट है: शांति कोई सपना नहीं है। यह स्थायी प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करते हुए निरंतर किए गए कार्यों का परिणाम है। इन सफलताओं को दोहराने के लिए, रोटरी क्लब तीन कदम उठा सकते हैं: हमारे संगठन के शांति मित्रों और अन्य शांति विशेषज्ञों से सीखें, सामुदायिक आंकलन में शांति निर्माण के दृष्टिकोण को अपनाएं, और समारोह के बजाय प्रभाव को प्राथमिकता दें।

डर से भरी दुनिया में, रोटरी आधे-अधूरे प्रयासों और खोखले शब्दों से संतुष्ट नहीं हो सकती। यदि हम वास्तव में कार्यवाही करने वाले लोग हैं, तो हमारे कार्य ही हमारी पहचान बनने चाहिए। साथ मिलकर, हम दुनिया भर में, अपने समुदायों में और स्वयं के भीतर *स्थायी प्रभाव पैदा कर* सकते हैं।

फ्रांसेस्को अरेज़ो
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

इंटरनेशनल असेंबली में भारत की गौरवशाली और विजयी उपस्थिति

यह कोई रहस्य नहीं है कि पिछले एक दशक में भारत ने कई मामलों में रोटरी जगत को प्रभावित किया है। ऐसे समय में जब रोटरी के अग्रणी देशों में सदस्य संख्या में चिंताजनक गिरावट देखी जा रही है, भारत में सदस्यता लगातार बढ़ी है। इसके अलावा, जो देश कभी सेवा परियोजनाओं के लिए रोटरी संस्थान से निरंतर सहायता माँगता था, वह आज धीरे-धीरे एक 'दान देने वाला देश' बन गया है और पिछले कुछ वर्षों में टीआरएफ को दान देने वाले देशों में दूसरा सबसे बड़ा दानकर्ता बनकर उभरा है।

लेकिन हाल ही में ऑरलैंडो में संपन्न हुई इंटरनेशनल असेंबली में, जहाँ नव-नियुक्त मंडल गवर्नरों को कठोर प्रशिक्षण दिया गया, भारत वास्तव में एक सुपरस्टार के रूप में उभरा। सबसे पहले रो ई मंडल 3192 के डीजीई रविशंकर डकोजू की वह चौंकाने वाली घोषणा सामने आई, अंतर्राष्ट्रीय सभा जिसमें उन्होंने और उनकी पत्नी पाओला ने अपनी कुल संपत्ति का लगभग 85 प्रतिशत - लगभग 50 से 60 मिलियन अमेरिकी डॉलर - रोटरी संस्थान को दान करने का निर्णय लिया। वर्तमान विनिमय दर के अनुसार यह राशि लगभग ₹500 करोड़ के आसपास बैठती है।

अगर हम कुछ क्षणों के लिए आँकड़ों को अलग रख दें, तो वास्तव में जिस बात ने सबका दिल जीत लिया, वह थी मंच पर डकोजू और पाओला की विनम्रता, और वह गंभीर भाव जिसके साथ डकोजू ने अपना भावनात्मक, बेहद ईमानदार और सरल भाषण दिया। उस भाषण में उन्होंने पृथ्वी पर अपने सात दशकों की जीवन यात्रा को समेट दिया, जिसने वहाँ उपस्थित रोटेरियनों और उनके जीवनसाथियों को भीतर तक छू लिया और भाषण के दौरान तथा उसके बाद खड़े होकर तालियाँ बजाने पर विवश कर दिया।

कई वरिष्ठ रोटेरियनों ने टिप्पणी की कि यह संभवतः संस्थान को दिया गया अब तक का सबसे बड़ा एकल दान है। बेंगलुरु के इस दंपत्ति ने एक ही झटके में रोटेरियनों के दिल और दिमाग में टीआरएफ की शक्ति और इसके मिलियन से अधिक रोटेरियनों की सेना के माध्यम से दुनिया में अच्छाई करने के विश्वास को और मजबूत कर दिया। उनके इस कदम ने एक शांत और सूक्ष्म लहजे में यह संदेश दिया कि यदि आप अपने साथी मनुष्यों की मदद करना चाहते हैं और धरती माँ के खोए हुए गौरव को बहाल करना चाहते हैं, तो टीआरएफ ही वह सही मंच है।

हालाँकि, ऑरलैंडो में भारत की यह विजय डकोजू दंपति की उदारता तक ही सीमित नहीं रही। रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, जो वर्तमान में *रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट* (2025-26) के अध्यक्ष हैं, को आगामी रोटरी वर्ष (2026-27) के लिए रोटरी का उपाध्यक्ष नामित किया गया। वे इस प्रतिष्ठित पद पर पहुँचने वाले चौथे भारतीय बने हैं। इससे पहले बी टी ठाकुर (1946-47), शापूर बिलिमोरिया (1949-50) और नितीश लाहिरी (1953-54) ने रो ई निदेशक रहते हुए यह पद संभाला था। लाहिरी आगे चलकर पहले भारतीय रो ई अध्यक्ष भी बने। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मुरुगनंदन की इस नियुक्ति का ऑरलैंडो में मौजूद उत्साहित भारतीयों ने बहुत खुशी के साथ स्वागत किया।

इंटरनेशनल असेंबली में भारत के इस गौरवपूर्ण क्षण को पूर्व रो ई अध्यक्ष के आर रवींद्रन ने बहुत ही सुंदर शब्दों में समेटा। वरिष्ठ रो ई नेतृत्वकर्ताओं के एक मंच पर उन्होंने लिखा: ''पिछले कुछ दिनों में भारत जिस प्रमुखता के साथ उभरा है, उस पर विचार किए बिना रहना असंभव है - चाहे वह नेतृत्व हो, मिसाल पेश करना हो या वे मूल्य हों जो रोटरी की भावना के साथ गहराई से मेल खाते हैं। रविशंकर, सीधे शब्दों में कहें तो, इस सभा के आकर्षण का केंद्र थे... उनके कार्यों ने रोटरी के प्रति व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के पैमाने को फिर से परिभाषित किया है।'' रवींद्रन ने उनकी हृदय को छू लेने वाली वाकपटुता, साहस, दृढ़ विश्वास और उदारता - ''जो बहुत कम मनुष्यों में देखने को मिलती है की सराहना की। उन्होंने आगे कहा कि मुरुगानंदन की उपाध्यक्ष के रूप में नियुक्ति हमारे लिए एक ऐसे नेतृत्वकर्ता का जश्न मनाने का क्षण है, जिनके रोटरी के दर्शन एवं आदर्शों के प्रति निरंतर प्रयास ने उन्हें इस जिम्मेदारी तक पहुँचाया है।''

रशीदा भगत

ADVT.

Rotary Club of VIRUDHUNAGAR

UNITE FOR GOOD

Project Kalam

Career Guidance Program

"Choose a Career you Love, and you'll never feel like you're Working a single day."

Challenges faced by Students:

- Unaware of Career Choices available
- Career choices influenced by Marks, Parents, Family and Peer Pressure
- Limited self-awareness about self-interests, strengths, and abilities
- Flooded with too much information, resulting in little clarity
- Rapid changes in the Job Market and too many options create
- Confusion choosing the right career has become a major challenge

Targeted for:

- School Students (Grades 9th to 12th)
- College Students (UG/PG)
- Educational Institutions committed to Student Success

PROJECT KALAM- Guiding Today's Student to Build Tomorrow's Nation

Objective:

Empowering students to

- Understand their Interests and Strengths
- Gain clarity in Career Decision-making
- Navigate Career choices with Confidence
- Develop Skills required for future readiness
- Explore real-world and emerging Career Opportunities
- Choose careers aligned with their Passion and Potential

No. of Programs

110

No. of Beneficiaries

28167 (Students)

630 (Teachers)

510 (Parents)

LEKHA ads/FEB 26/ Rotary/NTEN

Project Coordinator

Rtn.K.C.GURUSAMY

Do you want to conduct

Project Kalam

in your Town/City/District?

We are waiting to partner with you.

IDHAYAM

PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

The Coach

Rtn.TENZING PAULRAJAN

63746 44066

निदेशक का संदेश

शांति चुपचाप निर्मित की जाती है

हाल ही में संपन्न अंतर्राष्ट्रीय सभा रोटरी के वास्तव स्वरूप का एक सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है। जब दुनिया के हर कोने से रोटेरियन एक साथ आते हैं, तो बातचीत अलग हो सकती है, संदर्भ भिन्न हो सकते है, लेकिन उद्देश्य स्पष्ट रूप से एक ही होता है। महाद्वीपों और संस्कृतियों से परे, रोटरी स्थिरता, विश्वास और आशा का निर्माण करने वाली एक शक्ति बनी हुई है - अक्सर चुपचाप, और लगभग हमेशा बिना किसी दिखावे के।

फरवरी माह, जो शांति निर्माण और संघर्ष समाधान के रूप में मनाया जाता है, हमें एक ऐसी सच्चाई पर विचार करने के लिए आमंत्रित करता है जिसके बारे में हम अक्सर पर्याप्त रूप से बात नहीं करते: शांति शायद ही कभी किसी एक निर्णायक क्षण में बनती है। यह धैर्यपूर्वक, रोज़मर्रा के उन कार्यों के माध्यम से निर्मित होती है जो असमानता को कम करते हैं, गरिमा को बहाल करते हैं और अवसर सृजित करते हैं। जब किसी समुदाय को स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच मिलती है, जब शिक्षा बहिष्कार की जगह लेती है, जब आजीविका आत्मसम्मान देती है, और जब युवाओं को निराशा के बजाय दिशा मिलती है - तब शांति जड़ पकड़ती है। रोटरी की जमीनी स्तर की परियोजनाएँ - छोटी हों या बड़ी, परंतु उद्देश्य में गहरी - दशकों से यही कार्य करती आ रही हैं।

अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से देखें तो, जो बात सबसे अधिक उभरकर सामने आती है वह यह है कि रोटेरियन लगातार अपनी क्षमता से बढ़कर योगदान देते हैं। हमारे क्लब भले ही हमेशा सुर्खियाँ न बनें, लेकिन उनका प्रभाव ठोस और दीर्घकालिक होता है। समुदायों के बीच हज़ारों बार दोहराए जाने वाले ये स्थानीय प्रयास, सामाजिक ताने-बाने को शांतिपूर्वक मज़बूत करते हैं - पहले जमीनी स्तर पर, और फिर क्षेत्रों और राष्ट्रों के पार। यह शांति की दिशा में एक ऐसा योगदान है जो अधिक पहचान का हकदार है, भले ही इसका आधार हमेशा विनम्रता ही रहता हो।

अंतर्राष्ट्रीय सभा ने रोटरी के भविष्य की दिशा की भी एक झलक प्रस्तुत की है। 2026-27 के लिए अध्यक्षीय संदेश *स्थायी प्रभाव सृजित करने* की बात करता है - यह एक ऐसा संदेश है जो हमारे आज के कार्यों के साथ गहराई से मेल खाता है। अपने क्लबों को भविष्य के लिए तैयार करने के लिए किसी बड़े नाटकीय बदलाव की आवश्यकता नहीं है; बल्कि इसके लिए एकाग्रता की आवश्यकता है। सार्थक सेवा पर ध्यान केंद्रित हो, जो केवल एक बार के प्रयासों के बजाय निरंतरता पर आधारित हो, और उन परियोजनाओं पर केंद्रित हो जो मापने योग्य, विस्तार योग्य और समुदाय की वास्तविक जरूरतों से जुड़ी हों। आज हम जो शुरुआत करेंगे, उसे हम आने वाले वर्षों में और अधिक मजबूती के साथ आगे बढ़ाएंगे।

शांति और स्वास्थ्य एक-दूसरे से अलग नहीं होते हैं, और पोलियो के खिलाफ रोटरी की लड़ाई शांति और मानवता के लिए सामूहिक कार्रवाई के दुनिया के सबसे शक्तिशाली उदाहरणों में से एक है। जैसे-जैसे हम पोलियो उन्मूलन के और करीब पहुँच रहे हैं, हमारी ज़िम्मेदारी कम नहीं होती, बल्कि और बढ़ जाती है। पोलियो प्लस में दिया गया हर योगदान बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के असाधारण 2-से-1 मिलान के सहयोग से कई गुना बढ़ जाता है, जो उदारता को एक व्यापक प्रभाव में बदल देता है। इस नेक कार्य का समर्थन करना केवल एक बीमारी को खत्म करने के बारे में नहीं है; यह उस वादे को निभाने के बारे में है जो पूरी दुनिया ने मिलकर किया था।

जैसे-जैसे हम इस रोटरी वर्ष के शेष महीनों की ओर बढ़ रहे हैं, आगे का रास्ता बिल्कुल स्पष्ट है। अपने प्रभाव को बनाए रखने और उसे कई गुना बढ़ाने के लिए हमें पूरी सावधानी के साथ अपनी सदस्य संख्या बढ़ानी होगी, ईमानदारी के साथ अपने समुदायों से जुड़ना होगा, और हितधारकों को अपनी इस यात्रा में भागीदार बनने के लिए आमंत्रित करना होगा। विकास केवल संख्याओं के बारे में नहीं है; यह इस बारे में है कि जब कोई व्यक्ति रोटरी की बैठक में कदम रखता है तो वह कैसा महसूस करता है, और क्या उसे हमारे कार्यों में कोई उद्देश्य, आत्मीयता और प्रासंगिकता दिखाई देती है।

रोटरी की कहानी शांत नेतृत्व और अटूट सेवा की मिसाल है। यदि हम परिणामों के माध्यम से अपने काम की पुष्टि करना जारी रखते हैं, अपनी कहानी को प्रामाणिकता के साथ बताते हैं, और उच्च-प्रभाव वाली सेवा के प्रति प्रतिबद्ध रहते हैं, तो हम न केवल रोटरी को मजबूत करेंगे; बल्कि हम अधिक शांतिपूर्ण और लचीले समुदायों के निर्माण में भी मदद करेंगे।

और शायद, यही रोटरी का सर्वोत्तम स्वरूप है।

के पी नागेश
रो ई निदेशक, 2025-27

2026
कन्वेंशन

पहली बार का अनुभव लें

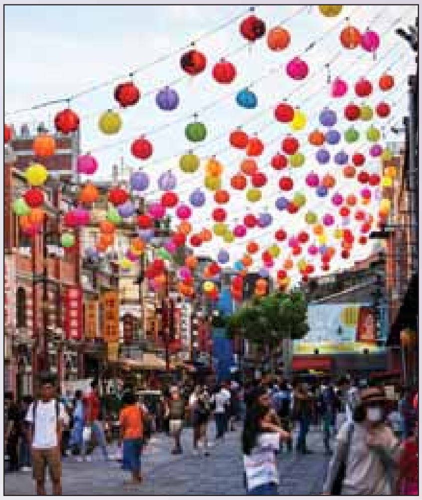

आइए! ताईपे को अपना पहला रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन बनाए। पहली बार आने वालों के लिए पाँच और कारण:

1. **अपने जुनून के लिए समय निकालें**
   दैनिक भागदौड़ से थोड़ा ब्रेक लें और उन विषयों पर गहराई से चर्चा करें जिनमें आपकी सबसे अधिक रुचि है। रोटरी फैलोशिप और रोटरी एक्शन ग्रुप्स से जुड़ने के अवसर तलाशें। सदस्यों के नेतृत्व में होने वाले 'ब्रेकआउट सत्रों' में नई सेवा के अवसरों के बारे में जानें।
2. **अपनी सेवा को प्रभावशाली बनाएं**
   इस सम्मेलन में आप समझ पाएंगे कि यह वैश्विक नेटवर्क कितना विशाल है और यह कैसे किसी एक व्यक्ति के विचार को बड़े प्रभाव में बदल सकता है।
3. **रोटरी को जैसा आप चाहते हैं वैसा बनाएं**
   अपने क्लब के लिए नए विचार एकत्रित करें, रोटरी के अपने पसंदीदा ध्यानकर्षण क्षेत्रों में अपना योगदान बढ़ाएं, और अपने पेशेवर विकास के लिए नेटवर्किंग करें।
4. **आराम करें और नई ऊर्जा पाएं**
   विश्व स्तरीय वक्ताओं और कलाकारों के कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी सकारात्मक ऊर्जा को फिर से भरें। खाली समय में, इसे एक छुट्टियों की तरह बिताएं। आखिर आप ताइपे के केंद्र में होंगे, जो अपनी संस्कृति और अनूठे अनुभवों के लिए प्रसिद्ध है।
5. **अपने नेटवर्क को बढ़ाएं**
   रोटरी में बनी दोस्ती खुशी और सार्थक संबंधों का एक रास्ता होती है, और उन्हें बनाने के लिए सम्मेलन सबसे अच्छी जगह है।

मीना डन्ट इसे बखूबी जानती हैं। घर से काम करते हुए, वह लोगों से मेल-जोल और उनकी ऊर्जा की कमी को महसूस कर रही थीं। अपने वर्क-लाइफ संतुलन को सुधारने के लिए उन्होंने रोटरी क्लब टुआलाटिन, ओरेगन, की सदस्यता ली और पिछले साल कैलगरी, कनाडा, में आयोजित हुए सम्मेलन में पहली बार शामिल हुईं। डन्ट कहती हैं कि ताइवान में 13-17 जून तक आपका समय बहुत अच्छा बीतेगा, भले ही आप वहां बहुत से लोगों को न जानते हों। बस 'हाउस ऑफ फ्रेंडशिप' में कदम रखें और सार्थक बातचीत अपने आप शुरू हो जाएगी। वह कहती है, आप बस अंदर जाते हैं और वहां हर कोई आपका दोस्त बन जाता है।

अधिक जानकारी प्राप्त करें और
convention.rotary.org
पर पंजीकरण कराएं।

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981 लियोन जे
RID 2982 शिवसुंदरम पी
RID 3000 कार्तिक जे
RID 3011 रविंदर गुगनानी
RID 3012 अमिता अनिल मोहिंदरू
RID 3020 कल्याण चक्रवर्ती वाई
RID 3030 ज्ञानेश्वर शेवाळे
RID 3040 सुशील मल्होत्रा
RID 3053 निशा शेखावत
RID 3055 निगमकुमार एल चौधरी
RID 3056 प्रज्ञा मेहता
RID 3060 अमरदीप सिंह बुनेत
RID 3070 रोहित ओबेरॉय
RID 3080 रवि प्रकाश
RID 3090 भूपेश मेहता
RID 3100 नितिन कुमार अग्रवाल
RID 3110 राजेन विद्यार्थी
RID 3120 अशुतोष अग्रवाल
RID 3131 संतोष मधुकर मराठे
RID 3132 सुधीर वी लातुरे
RID 3141 मनीष मोटवानी
RID 3142 हर्ष वीरेंद्र मकोल
RID 3150 राम प्रसाद एस वी
RID 3160 रविंद्र एम के
RID 3170 अरुण डैनियल भांडारे
RID 3181 रामकृष्ण पी कन्नन
RID 3182 पलक्शा के
RID 3191 श्रीधर बी आर
RID 3192 एलिज़ाबेथ चेरियन परमेश
RID 3203 धनासेकर बी
RID 3204 बिजोश मैनुअल
RID 3205 रमेश जी एन
RID 3206 चेल्ला के राघवेन्द्रन
RID 3211 टीना एंटनी कुन्नुमकल
RID 3212 जे धिनेश बाबू
RID 3231 वी सुरेश
RID 3233 डी देवेंद्रन
RID 3234 विनोद कुमार सराओगी
RID 3240 कामेश्वर सिंह एलांगबम
RID 3250 नम्रता
RID 3261 अमित जायसवाल
RID 3262 मनोज कुमार त्रिपाठी
RID 3291 रामेन्दु होमचौधुरी

यह पत्रिका **पी टी प्रभाकर** द्वारा दुगर टावर्स, तीसरी मंझिल, 34, मार्शल्स रोड, एग्मोर, चेन्नई 600 008 से **रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट** की ओर से प्रकाशित की जाती है, इसका संपादन **रशीदा भगत** करती हैं और इसे **रासी ग्राफिक्स** द्वारा 40 पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600 014, भारत में प्रिंट किया जाता है।

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

एम मुरुगानंदम RID 3000
रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट

के पी नागेश RID 3191
रो ई निदेशक

डॉ भरत पांड्या RID 3141
टीआरएफ ट्रस्टी

राजेंद्र के साबू RID 3080
कल्याण बेनर्जी RID 3060
शेखर मेहता RID 3291
अशोक महाजन RID 3141
पी टी प्रभाकर RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई RID 3060
सी भास्कर RID 3000
कमल संघवी RID 3250
डॉ महेश कोटबागी RID 3131
ए एस वेंकटेश RID 3234
राजु सुब्रमण्यन RID 3141
अनिरुधा रॉयचौधरी RID 3291
गुलाम ए वाहनवती RID 3141

कार्यकारी समिति के सदस्य (2025-26)

रोहित ओबेरॉय RID 3070
अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल

ज्ञानेश्वर शेवाळे RID 3030
वाईस चेयरमेन, गवर्नर्स काउंसिल

एम के रविंद्र RID 3160
सचिव, गवर्नर्स काउंसिल

चेल्ला के राघवेन्द्रन RID 3206
कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

शांति की स्थापना

फरवरी शांति निर्माण और संघर्ष रोकथाम का माह होता है। यह रोटरी संस्थान के उस मिशन पर विचार करने का एक सही समय है जिसका उद्देश्य विश्व में समझ, सद्भावना और शांति को बढ़ावा देना है। चाहे वह स्वास्थ्य में सुधार हो, शिक्षा का समर्थन करना हो या गरीबी को कम करना - शांति रोटरी के हर कार्य के केंद्र में है।

रोटरी शांति केंद्र शांति निर्माताओं की अगली पीढ़ी को प्रशिक्षित करके हमारे आदर्शों को दुनिया के समक्ष लाते हैं। 2002 से अब तक, 1,800 से अधिक रोटरी शांति मित्र 140 से अधिक देशों में शांति के उत्प्रेरक बने हैं।

मुझसे अक्सर यह सवाल किया जाता है कि क्या हमारे शांति मित्र अपनी पढ़ाई के बाद भी शांति के लिए काम करना जारी रखते हैं। इसका उत्तर है हाँ, बिल्कुल। उनमें से कई संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों, सरकारों, गैर-सरकारी संगठनों और स्वयं द्वारा स्थापित समूहों में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

हाल ही में, मैंने हमारे नवीनतम प्रोग्राम्स ऑफ स्केल पुरस्कार के प्राप्तकर्ताओं से मुलाकात की, जो कोलंबिया में पाथवेस टू पीस एंड प्रास्पेरिटी परियोजना पर काम कर रहे हैं। वर्ल्ड फूड प्रोग्राम के साथ यह 3 मिलियन डॉलर की साझेदारी चार शांति केंद्र स्थापित कर रही है, जो संघर्ष समाधान में 1,000 लोगों को प्रशिक्षित करेंगे और संघर्ष प्रभावित समुदायों के 700 उद्यमियों को सहायता प्रदान करेंगे।

बैठक के दौरान, मुझे लगा कि मैंने प्रतिभागियों में ब्रिगिटा वॉन मेसलिंग को पहचाना है, जो एक जर्मन शांति मित्र हैं और जिनके साथ मैंने 13 साल पहले बर्लिन में करीब से काम किया था। लेकिन काफी समय बीत जाने के कारण मैं पूरी तरह आश्वस्त नहीं था। जब मैंने कोलंबिया पहल की एक नेतृत्वकर्ता **ग्लेडिस माल्डोनाडो** से पूछा, तो उन्होंने पुष्टि की कि वह ब्रिगिटा ही थीं:

ब्रिगिटा मेरे शहर कुकुटा में रहती हैं और मेरे रोटरी क्लब की एक सक्रिय सदस्य हैं। वह कोलंबिया द्वारा 2016 में विद्रोहियों के साथ हस्ताक्षरित किए गए शांति समझौते के संयुक्त राष्ट्र की पर्यवेक्षक के रूप में अद्भुत काम कर रही हैं। वह कैटाटुम्बो क्षेत्र के दूरदराज के इलाकों की यात्रा भी करती हैं, जो उत्तरी कोलंबिया का एक ऐसा क्षेत्र है जिसने सशस्त्र समूहों की हिंसा का सामना किया है।

मेरे मन में उनके लिए अत्यधिक सम्मान है। मुझे तीन साल पहले उनसे मिलने का सौभाग्य मिला था। वह अविश्वसनीय रूप से बुद्धिमान हैं और उनमें दूसरों की ताकत को पहचानने का हुनर है।

ब्रिगिटा मेरे देश, मेरे शहर और मेरे रोटरी क्लब के लिए अमूल्य हैं। उन्होंने ही मुझे वर्ल्ड फूड प्रोग्राम से जोड़ा जिससे हम प्रोग्राम्स ऑफ स्केल परियोजना बना सकें, जिसने मेरे शहर और देश को आशा से भर दिया है।

ग्लेडिस ने ब्रिगिटा के बारे में जो कहा, वह दुनिया भर के रोटरी शांति मित्रों के बारे में सुनी जाने वाली कई कहानियों की गूँज है: वे अमूल्य हैं। वे हमें याद दिलाते हैं कि शांति का निर्माण एक-एक व्यक्ति करके होता है।

टीआरएफ के लिए आपका समर्थन सकारात्मक परिवर्तन के अनगिनत अवसर खोलता है।

होल्गर नेक
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौउंडेशन

रोटरी क्लब भावनगर की स्थायी और प्रभावशाली परियोजनाएँ

रशीदा भगत

रोटरी क्लब भावनगर के रोटरी सेंटर में बच्चे पढ़ाई करते हुए।

जब मैं रो ई मंडल 3060 के रोटरी क्लब भावनगर द्वारा की गई कुछ प्रतिष्ठित परियोजनाओं पर नज़र डालता हूँ - जैसे उनकी *रे ऑफ होप* परियोजना, जहाँ वे बच्चे जो कभी स्कूल के अंदर तक नहीं गए थे, अब क्लब द्वारा बनाए गए रोटरी सेंटर के एक विशाल हॉल में अलग-अलग समूहों में बैठकर किताबें पढ़ते हुए दिखाई देते हैं; या फिर रोटरी करुणालय में लगभग 25 असाध्य रोगों से पीड़ित वरिष्ठ नागरिक, जिन्हें गरिमापूर्ण और करुणामय देखभाल मिल रही है - तो अनायास ही पूर्व रो ई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी द्वारा एक अनौपचारिक बातचीत में कहे गए शब्द याद आ जाते हैं।

''मैं आपको बताना चाहता हूँ, गुजरात में रोटरी कई मायनों में बेहद विशेष है भले ही वह अधिक प्रसिद्ध या प्रचारित न हो, लेकिन सामुदायिक सेवा परियोजनाओं के मामले में वह हमेशा सक्रिय, ऊर्जावान और समर्पित रहती है। और रोटरी क्लब भावनगर भी इससे अलग नहीं है। आपको कभी वहाँ ज़रूर जाना चाहिए।''

खैर, इसमें मुझे कुछ साल लग गए - कम नहीं, मगर भावनगर से अहमदाबाद एयरपोर्ट तक नई, चिकनी और शानदार एक्सप्रेसवे पर गाड़ी चलाते हुए मैं खुद को तसल्ली देता हूँ... देर आए, दुरुस्त आए!

क्लब अध्यक्ष कौशल सेठ के नेतृत्व में रोटेरियनों के एक समूह, जिसमें पीडीजी प्रदीप गोहिल भी शामिल हैं, ने मुझे उन परियोजनाओं का दौरा कराया जो क्लब द्वारा संचालित की जा रही है। रो ई मंडल 3060 के सबसे बड़े क्लबों में से एक यह क्लब 150 सदस्यों वाला है और इसकी स्थापना 81 वर्ष पहले हुई थी।

रोटरी ई लाइब्रेरी

पहला पड़ाव रोटरी ई-लाइब्रेरी का था, जहाँ युवाओं का एक समूह या तो अपने मोबाइल फोन, कंप्यूटर या पाठ्यपुस्तकों में पूरी तरह डूबा हुआ दिखाई दिया। नहीं, वे न तो फोन में कोई खेल खेल रहे थे और न ही किसी से बातचीत कर रहे थे। वे तो प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी के लिए अध्ययन सामग्री डाउनलोड कर रहे थे या ऑनलाइन पढ़ रहे थे। वर्ष 2015 में ₹15 लाख की लागत से शुरू की गई यह उज्ज्वल और विशाल लाइब्रेरी (जो दस साल पहले एक बड़ी राशि मानी जाती थी) डॉ रमणिकलाल मेहता द्वारा दिए गए ₹3 लाख के दान से सशक्त हुई है, यहाँ लगभग 75 विभिन्न व्यवसायों के लिए तैयारी कर रहे अभ्यर्थी बैंकिंग और बीमा सेवाओं, आईएएस/आईपीएस तथा अन्य पुलिस पदों, सरकारी क्षेत्र में इंजीनियरिंग की नौकरियों जैसी प्रवेश परीक्षाओं के लिए अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। आपके द्वारा किसी भी प्रतियोगी परीक्षा का नाम लेते ही हमारी लाइब्रेरी आपको पाठ्य/संदर्भ पुस्तकों या डाउनलोड की जा सकने वाली ऑनलाइन सामग्री तक पहुँचा देती है, क्लब के पूर्व अध्यक्ष उमंग देसाई कहते हैं।

यह लाइब्रेरी सेवा, जो लगभग निःशुल्क है और जिसके लिए मात्र ₹500 का वार्षिक सदस्यता शुल्क लिया जाता है, शुरुआत में किताबों और मुद्रित अध्ययन सामग्री के साथ शुरू हुई थी। ''समय के साथ हमने कुछ कंप्यूटर भी उपलब्ध कराए, जिनके माध्यम से छात्र ऑनलाइन अध्ययन सामग्री तक पहुँच सकते थे-यहाँ असीमित वाई-फाई सुविधा उपलब्ध है-लेकिन अब हम देखते हैं कि कंप्यूटरों का उपयोग भी कम होता जा रहा है क्योंकि यहाँ आने वाले अधिकांश छात्र अपने मोबाइल फोन पर ही सारी सामग्री डाउनलोड कर लेते हैं। आजकल बहुत-सी परीक्षाएँ ऑनलाइन आयोजित की जा रही हैं।''

पीडीजी गोहेल बताते हैं कि इस केंद्र में समय-समय पर अभ्यास परीक्षाएँ भी आयोजित की जाती हैं। पिछले 10 वर्षों में लगभग 1,500 छात्र इस लाइब्रेरी से लाभान्वित हुए हैं। जहाँ ₹15 लाख की कुल लागत में से आधी राशि कॉर्पोरेट संस्थानों से प्राप्त हुई है वहीं शेष धनराशि दान के माध्यम से जुटाई गई है।

यहाँ बैठी किंजल पीएसआई बनना चाहती है। मेरे हैरान चेहरे को देखकर वह तुरंत स्पष्ट करती है, ''पुलिस सब-इंस्पेक्टर!'' मैं पूछता हूँ - क्यों? वह बेहद सरलता से जवाब देती है: क्योंकि मैंने हमेशा से पुलिस की वर्दी पहनने का सपना देखा है। वह पिछले एक साल से अपनी प्रवेश परीक्षा की तैयारी के लिए इस लाइब्रेरी में आ रही है और स्वीकार करती है, मुझे यहाँ आना सचमुच बहुत पसंद है क्योंकि यहाँ बिना किसी अवरोध के पढ़ने का मौका मिलता है।

कौशल जोशी सीए फ़ाउंडेशन परीक्षा की तैयारी कर रहा हैं; ''यहाँ मुझे बहुत सारी अध्ययन सामग्री मिल जाती है, जिसे मैं ऑनलाइन भी देख सकता हूँ और यहाँ उपलब्ध किताबों के माध्यम से भी पढ़ सकता हूँ... यह वास्तव में छह महीने का कोर्स है लेकिन मैं अपने पहले प्रयास में इसमें सफल नहीं हो पाया इसलिए दोबारा तैयारी कर रहा हूँ। मगर मुझे पूरा भरोसा है कि इस बार मैं सफल हो जाऊँगा,'' वह मुस्कुराते हुए कहता हैं।

बाकी लोगों के साथ दोनों युवा सुबह 8:30 बजे पुस्तकालय खुलते ही यहाँ आ जाते है और गोहेल का

कहना है कि वे संभवतः शाम 7:30 बजे पुस्तकालय बंद होने तक यही रहते है। देसाई आगे कहते हैं, ''आपने ज़रूर भूतल पर रखे टिफ़िन के डिब्बे देखे होंगे। पास ही एक सुंदर बगीचा है; वे सभी सुबह घर से अपना खाना लेकर आते हैं और दोपहर में बगीचे में जाकर अपना लंच ब्रेक लेते हैं।''

मैं पूछता हूँ कि ये युवा कौन हैं, कहाँ से आते हैं और जब उत्तर सुनता हूँ तो मुझे एहसास होता है कि यह जगह नौकरी की तैयारी कर रहे अभ्यर्थियों के लिए कितनी मूल्यवान और सुरक्षित आश्रयस्थली है। इनमें से कई दूर-दराज़ के गाँवों से आते हैं; ये सभी निचले-मध्यम और मध्यम वर्ग से संबंधित हैं। ''इनमें से अधिकांश एक कमरे वाले घरों में रहते हैं और अपने घर पर उन्हें वह निजता या अनुकूल माहौल नहीं मिलता, जो प्रवेश परीक्षा की गंभीर तैयारी के लिए आवश्यक होता है।''

देसाई आगे हैं, ''इस लाइब्रेरी की मदद से कई छात्र अपनी परीक्षाएँ पास कर चुके हैं, कई पुलिस सब-इंस्पेक्टर बने हैं और कई छात्रों ने अलग-अलग व्यवसायों में नौकरियाँ प्राप्त की हैं। कई बार माता-पिता यहाँ आकर हमें बहुत धन्यवाद देते है कि हमने उनके बच्चों को पढ़ाई करने के लिए यह जगह उपलब्ध कराई। हमारे रोटरी सेंटर के देखभालकर्ता के दो बच्चे, जिनके बारे में आपने *रोटरी न्यूज़* (जून 2025) में लिखा था, दोनों यहाँ पढ़ने आते थे।'' (जहाँ एक बच्चा आईटी इंजीनियर बन गया, वहीं उसकी बहन को गुजरात इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड में नौकरी मिल गई)।

नौकरी की तलाश करने वाले इन सभी युवाओं के लिए एक अहम आवश्यकता अंग्रेज़ी व्याकरण में कुछ हद तक दक्षता की है और इस पहलू को ध्यान में रखते हुए एक सेवानिवृत्त अंग्रेज़ी प्रोफ़ेसर एवं पूर्व अध्यक्ष पुर्णिमा मेहता यहाँ आकर युवाओं को अंग्रेजी भाषा सीखने में मदद करती हैं। समय-समय पर रोटेरियन उन्हें संचार कौशल में भी प्रशिक्षित करते हैं; कैसे इंटरव्यू का सामना करें, खुद को कैसे प्रस्तुत करें और अभ्यास परीक्षाएँ कैसे दी जाएँ।

मियावाकी वन

क्लब की मुख्य टीम की पूरी ऊर्जा और उत्साह इस समय एक परियोजना पर केंद्रित है - शहर के हृदय में भावनगर निगम द्वारा उन्हें दिए गए 10,000 वर्ग मीटर के भूखंड पर एक मियावाकी वन का विकास।

ऊपर: खड़े (बाएं से): तारक ढोलकिया, योगेश कनककिया, मनीष वकील, राकेश कनाड़ा, तेजस ठक्कर, नीरज जोशी, जितेन शाह, शाहीन लालानी, चेतन कामदार, केतन पारेख, भावेश शाह, पुनित मेहता और क्लब सचिव महिपाल राणा। बैठे (बाएं से): पार्थ दवे, जिगर त्रिवेदी, उमंग देसाई, क्लब अध्यक्ष कौशल शेठ और पराग शाह।

नीचे: रोटरी स्पोर्ट्स लीग में महिला प्रतिभागी।

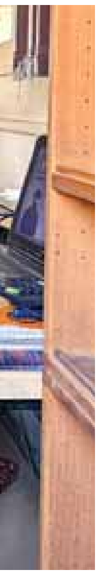

बाएं और दाएं: रोटरी ई लाइब्रेरी में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते युवा।

ऊपर और नीचे: रोटरी सेंटर में झुग्गियों और कंस्ट्रक्शन साइट्स के बच्चों के लिए साक्षरता कार्यक्रम।

क्लब अध्यक्ष कौशल सेठ बताते हैं कि रोटेरियनों ने पहले ही लगभग 25,000 पेड़ लगाए हैं, जिसमें छायादार वृक्ष और स्थानीय, तेज़ी से बढ़ने वाली किस्मों को चुना गया है। ''तीन साल पहले हमने रेलवे की जमीन पर इसी तरह की परियोजना करने की कोशिश की थी लेकिन विभिन्न कारणों से वह पूरी नहीं हो सकी। इस बार हमें आवश्यक अनुमतियाँ, कॉर्पोरेट निवेश प्राप्त है और हमने मॉनसून से पहले ही काम शुरू कर दिया है।''

इस परियोजना की कुल लागत लगभग ₹25 लाख है और इसमें से बड़ी राशि - लगभग ₹18 लाख - तंबोली कास्टिंग द्वारा प्रदान की गई है, जो क्लब के सीएसआर साझेदारों में से एक है और जिसने अब तक लगभग ₹20 लाख का योगदान दिया है। शेष राशि क्लब ने योगदानों के माध्यम से जुटाई है। वह बताते हैं कि इस कॉर्पोरेट साझेदार को इस परियोजना में रोटरी स्पोर्ट्स लीग की वजह से शामिल किया गया है - जो एक वार्षिक खेल प्रतियोगिता है जिसे क्लब विशेष रूप से कॉर्पोरेट कंपनियों के लिए आयोजित करता है ताकि उनके कर्मचारियों को चार खेलों - क्रिकेट, टेबल टेनिस, बैडमिंटन और वॉलीबॉल - में खेलने और प्रतिस्पर्धा करने का अवसर मिल सके। आप कल इस साल की प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह में देखेंगे कि कैसे पिछले 20 वर्षों से इसे आयोजित करके हमारे क्लब ने अपनी सेवा परियोजनाओं के लिए स्थायी कॉर्पोरेट निधीयन सुनिश्चित किया है, वह मुस्कुराते हुए कहते हैं। इससे जो कुल सीएसआर राशि जुटाई गई है वो आश्चर्यजनक रूप से ₹4 करोड़ है!

लगाए जा रहे पेड़ों के प्रकार की जानकारी देते हुए पूर्व अध्यक्ष और परियोजना निदेशक तेजस ठक्कर कहते हैं कि तीन प्रकार के छायादार पेड़ों की योजना बनाई गई है, जिसमें तेज़ी से बढ़ने वाली किस्में शामिल हैं। ये पेड़ अलग-अलग ऊँचाइयों के होंगे - सबसे ऊँचे पेड़ 22 से 25 मीटर की ऊँचाई के होंगे, मध्यवर्गीय पेड़ लगभग 15 से 20 मीटर की ऊँचाई के होंगे और छोटे पेड़ 15 मीटर से कम ऊँचाई वाले होंगे।

''हमारे शोध और पिछले दो वर्षों में हमने जिन कुछ मियावाकी वनों का दौरा किया, उनके अनुसार एक साल में पेड़ 15 फीट तक बढ़ सकते हैं। यह परियोजना एक महीने में पूरी हो जाएगी और हमने

रोटरी स्पोर्ट्स लीग में उत्सव जैसा माहौल।

भावनगर निगम के साथ तीन साल का समझौता ज्ञापन भी हस्ताक्षरित किया है, जिसके अंतर्गत हम इस स्थान का रखरखाव करेंगे।

गुजरात सरकार पूरे राज्य में ऑक्सीजन पार्क बना रही है और हमारी चर्चाओं में, निगम के अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि इसे ऑक्सीजन पार्क के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। खैर, कुछ इसे यह नाम देते हैं, कुछ शहरी या मियावाकी वन कहते हैं, लेकिन मुख्य विचार यह है कि हम जिन जगहों पर रहते हैं उन्हें हरित बनाया जाएं। मूल अवधारणा यह है कि आप स्थानीय पेड़ों को एक-दूसरे के बहुत पास लगाएं ताकि वे भोजन और सूर्य की रोशनी के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा करें और इसी प्रक्रिया में तेज़ी से बढ़ें! देसाई कहते हैं। इस पार्क के पास एक झील भी है और रोटेरियनों को पेड़ों के लिए उस पानी का उपयोग करने की अनुमति है।

यह बदलाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है; एक गंदे और अव्यवस्थित भूखंड में जहाँ झील का ओवरफ़्लो हुआ पानी ठहर गया था, उसे रोटेरियनों ने शहर के लिए एक हरा-भरा फेफड़ा बना दिया है। यहाँ उचित वॉकिंग पाथ, आवारा जानवरों को रोकने के लिए बाड़ और कुछ वाहनों के लिए पार्किंग की योजना भी बनाई गई है। पक्षियों को आकर्षित करने के लिए प्रकाश व्यवस्था से परहेज़ किया गया है; बाद में तितलियों को भी यहाँ लाया जाएगा। कुछ शहतूत के पेड़ों में फल भी आने लगे हैं और वे पक्षियों को आकर्षित कर रहे हैं।

उम्मीद की किरण

इसके बाद हमने रोटरी करुणालय का दौरा किया, जो एक धर्मशाला और पुनर्वास केंद्र है, जहाँ उन अंतिम चरण के मरीजों की देखभाल की जाती है जिन्हें अब आगे की चिकित्सा से कोई लाभ नहीं होने वाला। (*रोटरी न्यूज़* के अगले अंक में इस पर विस्तृत रिपोर्ट प्रकाशित होगी)।

लेकिन वह परियोजना जो वास्तव में दिल को छू जाती है और यह याद दिलाती है कि यहाँ के रोटेरियन भावनगर के वंचित नागरिकों के जीवन में कितना फर्क ला रहे हैं, जिसे एक पंक्ति *रे ऑफ होप* – चाइल्ड एजुकेयर सेंटर के माध्यम से सारगर्भित किया जा सकता है। जिसके माध्यम से गरीब वर्ग के वे बच्चे, जिनके पास शिक्षा का साधन नहीं है या

कई अलग-अलग तरीकों से, गुजरात में रोटरी सच में खास है – अनजान, बिना प्रचार के, फिर भी हमेशा जीवंत और कम्युनिटी सर्विस प्रोजेक्ट्स के लिए समर्पित, और रोटरी क्लब भावनगर भी इसका अपवाद नहीं है।

कल्याण बेनर्जी
पूर्व रो ई अध्यक्ष

जिन्हें शिक्षा में कोई लाभ नहीं दिखता, उन्हें सीखने का अवसर मिलता है और इस तरह उन्हें एक उज्ज्वल भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाने का मौका मिलता है।

रोटरी सेंटर के चमकदार, बिल्कुल साफ-सुथरे और विशाल हॉल में, मैंने कई दर्जन बच्चों को किताबों में डूबे हुए, अपने शिक्षकों से संवाद करते हुए या नोट्स लेते हुए देखा। वहाँ के माहौल में एक जीवंत हलचल है-बच्चों की बात-चीत, हँसी और वह उत्साह और सकारात्मक ऊर्जा जो बच्चे स्वाभाविक रूप से किसी भी जगह या सभा में भर सकते हैं।

रोटरी क्लब भावनगर की सबसे लंबे समय तक चलने वाली परियोजनाओं में से एक, जिसकी शुरुआत 1988 में तब हुई थी जब मनीष कोठारी क्लब के अध्यक्ष थे, का उद्देश्य गरीब और वंचित बच्चों, विशेष रूप से झुग्गियों में रहने वाले या निर्माण स्थलों और अन्य जगहों पर टेंटों में रहने वाले बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान करना था, जहाँ दैनिक मजदूर अपने बच्चों को लाते हैं। पहले, कोठारी ने मुझे एक साक्षात्कार (*रोटरी न्यूज़,* जून 2025) में बताया था कि शुरुआती वर्षों में, जब गरीब शिक्षा को अधिक महत्व नहीं देते थे, तो हमें बच्चों को एजुकेयर सेंटर तक लाने के लिए सचमुच प्रलोभन देना पड़ता था जैसे – उन्हें नाश्ता, नए कपड़े, खिलौने देकर लुभाना और फिर उन्हें रोचक कहानियाँ सुनाकर तथा मज़ेदार गतिविधियाँ कराकर रोके रखना पड़ता था। उनकी भाभी पारुलबेन कोठारी नियमित शिक्षिका थीं और हाल ही में उन्हें उत्कृष्ट सेवा के लिए रोटरी इंटरनेशनल द्वारा सम्मानित किया गया।

जैसे-जैसे इस केंद्र में अधिक बच्चे आने लगे, अन्य रोटरी ऐन्स भी स्वयंसेवा देने लगीं, बच्चों को पहले अक्षर, संख्या सिखाने लगीं और फिर पढ़ाई, लेखन और विभिन्न विषयों की शिक्षा देने लगीं। आज भी, जो भोजन हम उन्हें देते हैं, साथ ही यूनिफॉर्म और अन्य कपड़े भी देते है, यह बच्चों के लिए एक बड़ा आकर्षण हैं जो उन्हें इस केंद्र तक लाता हैं। ये बच्चे बिल्कुल गरीब परिवारों से हैं और चूंकि वे स्कूल नहीं जाते इसलिए सड़क पर घूमते रहते हैं और चोरी या अन्य बुरी गतिविधियों में लिप्त होने लगते हैं, पीडीजी गोहेल कहते हैं।

जैसे-जैसे बच्चे पढ़ाई में रुचि लेने लगे और तेजी से सीखने लगे, रोटेरियनों ने पहले उन्हें सरकारी स्कूलों में प्रवेश दिलाया और बाद में होशियार बच्चों को प्राइवेट स्कूल भेजा। इनमें से कई बच्चे स्नातक की डिग्री हासिल कर चुके है और इंजीनियर, अकाउंटेंट, नर्स, फार्मासिस्ट बनकर सरकारी नौकरियाँ प्राप्त कर चुके है। ''इनमें से बहुत सारे बच्चे अब सफल होकर भावनगर में काम कर रहे हैं और नियमित रूप से यहाँ हमारे छात्रों को पढ़ाने आते हैं। यह देखकर हम बहुत भावुक हो जाते है,'' क्लब अध्यक्ष सेठ कहते हैं।

बच्चों के एक उत्साही समूह को पढ़ा रही ज्योति मनीष वकील, मुझे बताती हैं कि वह सप्ताह के सभी पांच दिन बच्चों को पढ़ाने आती हैं। नहीं, नहीं, मुझे शिक्षक होने का कोई अनुभव नहीं है लेकिन मैं पिछले 27 वर्षों से नियमित रूप से यहाँ आ रही हूँ, वह मुस्कुराते हुए कहती हैं।

ज्योति एक अखिल महिला क्लब, रोटरी क्लब भावनगर वाइब्रेंट की सदस्य हैं। वह बच्चों को सामाजिक विज्ञान, गुजराती, अंग्रेज़ी और हिंदी पढ़ाती हैं। वह मुस्कुराते हुए कहती हैं, मुझे यहाँ रोज़ाना आना सच में बहुत पसंद है; इससे मुझे बेहद संतोष और पूर्णता का एहसास होता है।

पूर्व अध्यक्ष तेजस ठक्कर की माताजी, तारू ठक्कर, पिछले दो दशकों से यहाँ आ रही हैं। उन्हें बच्चों को सही ढंग से पढ़ना सिखाना बेहद पसंद है। वे गुजराती पढ़ सकते हैं लेकिन उनमें बहुत कम आत्मविश्वास है। इसलिए मैं उन्हें आत्मविश्वास के साथ पढ़ना सिखाती हूँ संचार कौशल बहुत महत्वपूर्ण हैं। वह बच्चों को गुजराती, अंग्रेज़ी और हिंदी पढ़ना सिखाती हैं। भावनगर में 1977 में एक ब्यूटी पार्लर शुरू करने वाली पहली महिला, अब उन्होंने वह व्यवसाय अपनी दो बहुओं को सौंप दिया है और अपनी सारी ऊर्जा उस काम में लगा रही हैं जिसे वह सबसे ज्यादा पसंद करती हैं - यानी इन बच्चों को पढ़ाना।

दूसरी ओर, एक अन्य समूह में कुछ बच्चे उत्साहपूर्वक सब्ज़ियों की खरीद-बिक्री... उनकी वितरण प्रक्रिया, बाज़ार श्रृंखला और अन्य संबंधित पहलुओं पर पर बहस कर रहे हैं।

पूर्व अध्यक्ष पुर्णिमा, जो यहाँ अंग्रेज़ी भी पढ़ाती हैं, कहती हैं कि यहाँ आने वाले कई बच्चे नियमित स्कूलों में दाखिला ले लेते हैं - चाहे वे नगरपालिका के स्कूल हों या प्राइवेट स्कूल - और जिन बच्चों में रुचि और प्रतिभा दिखाई देती है, उन्हें कॉलेज में दाखिला पाने में मदद की जाती है। ''हमने बच्चों को लगभग 75 साइकिलें दी हैं, ताकि उन्हें अपने घर से इस केंद्र तक आने-जाने में मदद मिल सकें। कई ऐन्स अपने साथ घर के बने नाश्ते लाती हैं, जिसे बच्चे पसंद करते हैं और इससे उन्हें पर्याप्त पोषण भी मिलता है। हम उन्हें स्कूल बैग, स्वेटर और रेनकोट भी प्रदान करते हैं।''

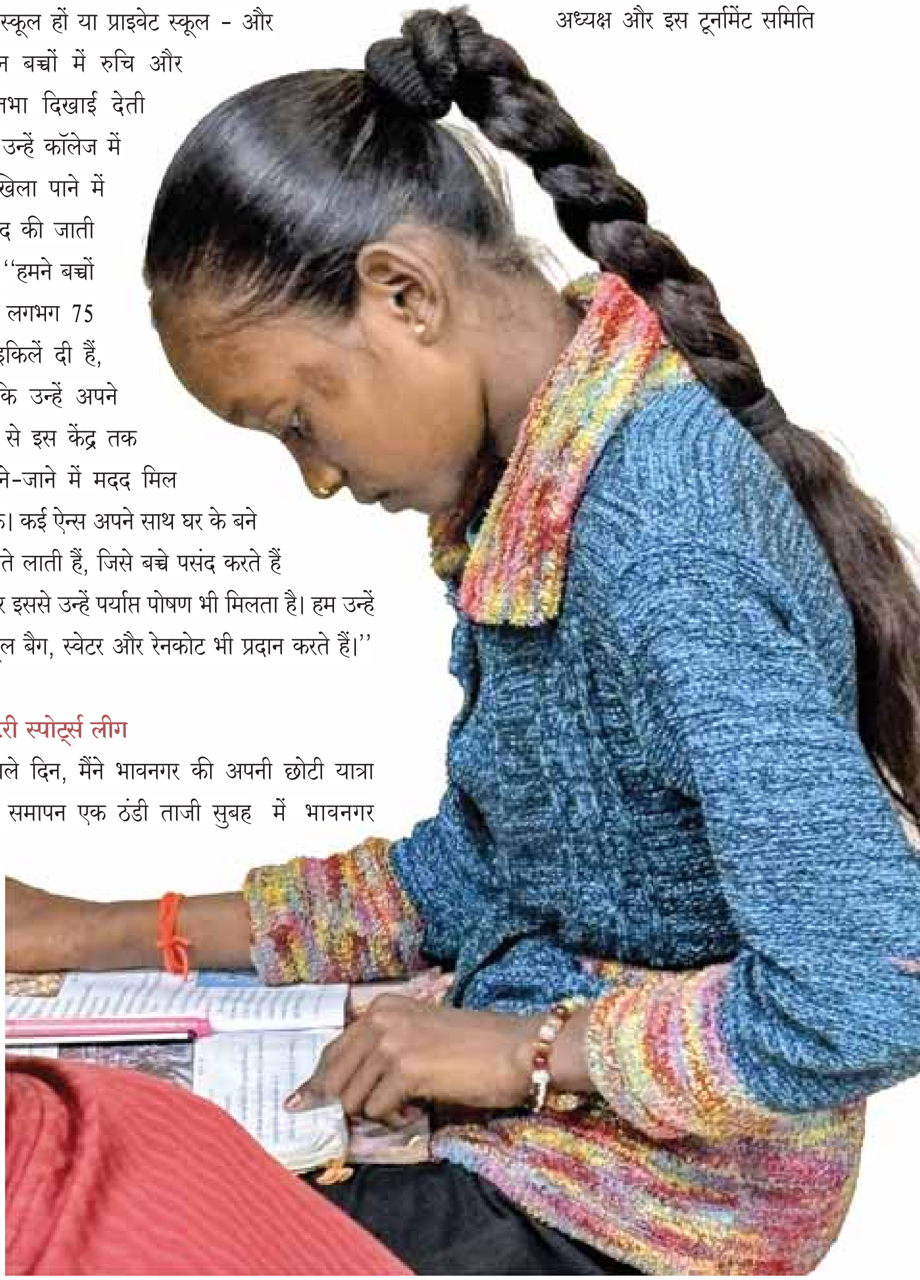

रोटरी स्पोर्ट्स लीग

अगले दिन, मैंने भावनगर की अपनी छोटी यात्रा का समापन एक ठंडी ताजी सुबह में भावनगर विश्वविद्यालय के विशाल और विस्तृत मैदानों में जाकर किया जहाँ रोटरी क्लब भावनगर द्वारा विशेष रूप से कॉर्पोरेट कंपनियों के लिए दो दिवसीय खेल टूर्नामेंट आयोजित किया जा रहा है। यह RSL का 20वाँ वर्ष है; वातावरण पूरी तरह उत्सवपूर्ण है, संगीत की धुनें गूँज रही हैं और उद्घाटन के लिए रंग-बिरंगे गुब्बारे तैयार हैं। इस वर्ष नौ अलग-अलग कॉर्पोरेट टीमों के खिलाड़ी चार खेलों-क्रिकेट, वॉलीबॉल, टेबल टेनिस और बैडमिंटन-में एक-दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करेंगे।

इस टूर्नामेंट का विवरण देते हुए पूर्व अध्यक्ष और इस टूर्नामेंट समिति

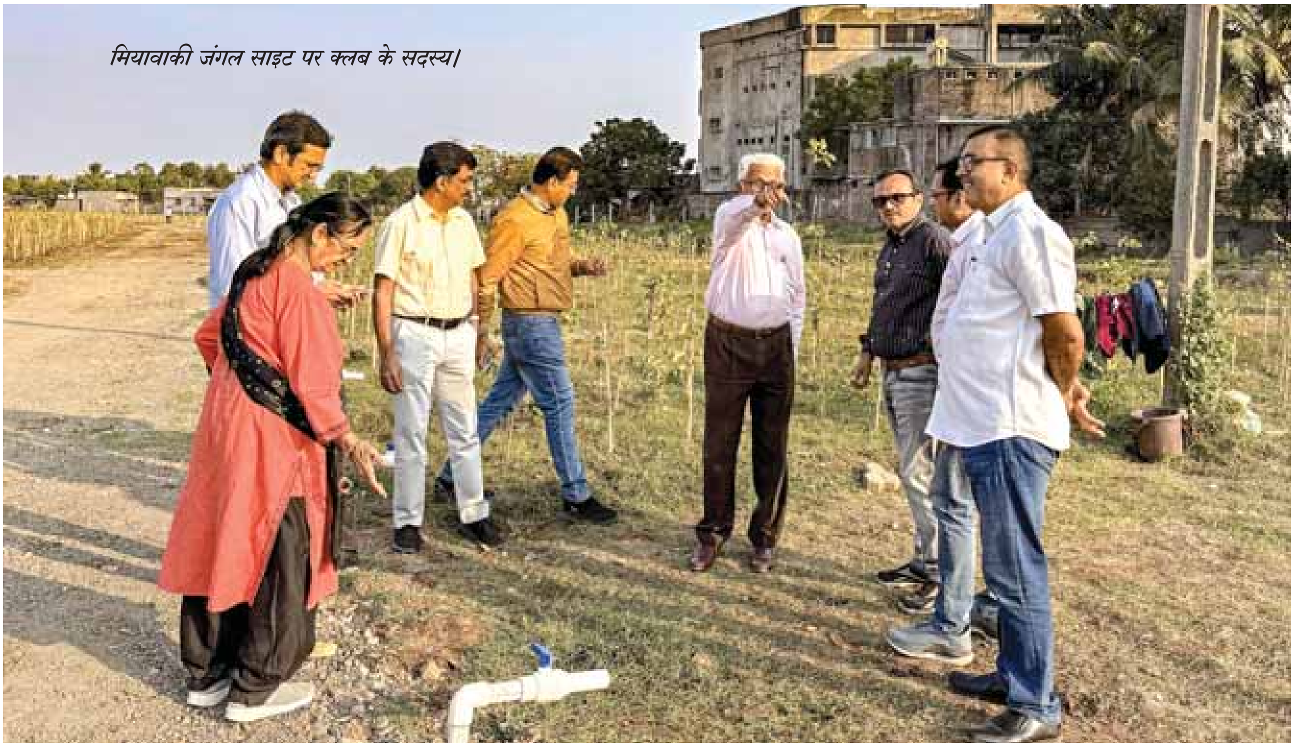

मियावाकी जंगल साइट पर क्लब के सदस्य।

के अध्यक्ष चेतन कामदार कहते हैं कि 20 साल पहले कॉर्पोरेट्स के लिए इस टूर्नामेंट की शुरुआत करने का मूल उद्देश्य कॉर्पोरेट्स को रोटरी से जोड़ना था। ''सीएसआर का विचार बाद में आया। हमने सोचा था कि अगर कॉर्पोरेट्स किसी भी तरह रोटरी के साथ जुड़ें या हमारे साझेदार बनें, तो हमारी सेवा परियोजनाओं के लिए धन राशि जुटाना आसान होगा।''

हँसते हुए वह याद करते हैं कि ''20 साल पहले ऐसा टूर्नामेंट आयोजित करना कितना कठिन था क्योंकि कॉर्पोरेट्स हर छोटी-छोटी बात पर ध्यान देते थे और यहाँ तक कि उन्होंने यह भी नाप-तोल कर बताया कि अगर मेरे खिलाड़ी ने एक ही बॉल खेली, तो उसकी लागत लगभग ₹750 आएगी!''

लेकिन जैसे-जैसे क्लब ने अधिक कॉर्पोरेट्स से संपर्क बनाया - पहले भावनगर और आसपास के क्षेत्रों में और बाद में पूरे गुजरात में - हालात सुधरने लगे। हर साल टूर्नामेंट के स्थल पर एक प्रमुख बैनर लगाया जाता है, जिसमें शहर के क्लबों द्वारा की गई सेवा परियोजनाओं का विवरण होता है। दो दशकों पहले स्थापित किए गए इन कॉर्पोरेट संबंधों के कारण, क्लब अपनी सेवा परियोजनाओं के लिए लगभग ₹4 करोड़ की सीएसआर राशि जुटाने में सफल रहा। यह टूर्नामेंट के प्रायोजन से अलग राशि है।

इस टूर्नामेंट से हर साल लगभग ₹15-20 लाख एकत्रित किए जाते है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कितनी टीम इसमें भाग ले रही हैं; इस साल नौ टीम हैं और कभी-कभी यह संख्या 16 तक पहुँच जाती है। ''इससे अधिक हम संभाल नहीं सकते।'' कार्य्सिल लिमिटेड के सीईओ चिराग पारेख भी स्थल पर मौजूद हैं; कार्य्सिल उनके मुख्य प्रायोजकों में से एक है और यह हर साल ₹4 लाख देता है; सह-प्रायोजक ₹2.5 लाख प्रत्येक देते हैं। और भाग लेने वाले प्रत्येक कॉर्पोरेट को आयोजन, स्थल किराया, भोजन आदि के लिए ₹75,000 की फीस देनी पड़ती है। सभी खर्चों के बाद, लगभग ₹8-10 लाख का अधिशेष उत्पन्न होता है, जिसका उपयोग क्लब की सेवा परियोजनाओं में किया जाता है।

इस साल, पहली बार भारतीय महिला क्रिकेट टीम के विश्व कप जीतने के बाद, प्रत्येक टीम को अनिवार्य रूप से एक महिला खिलाड़ी को भेजने के लिए कहा गया। ''कल आपकी बातचीत में आपने लैंगिक न्याय के महत्व पर जोर दिया था; यह हमारा तरीका है लैंगिक न्याय सुनिश्चित करने का। हाँ, यह सिर्फ 10 पुरुष खिलाड़ियों पर एक महिला खिलाड़ी है, लेकिन फिर भी यह एक शुरुआत है। (इस टूर्नामेंट में क्रिकेट टीम में 10 खिलाड़ी होते हैं, 11 नहीं)।''

इस टूर्नामेंट में शामिल कॉर्पोरेट साझेदारों में इन्वेस्टमेंट एंड प्रिसिशन कास्टिंग्स, निरमा, टाटा केमिकल, स्टीलकास्ट, इनार्को, एग्रोसेल, रेनेसेंस ज्वेलरी आदि शामिल हैं।

खिलाड़ियों की बात करें तो उन्हें यह टूर्नामेंट इतना पसंद है कि, ''वे पूरा साल इसके आयोजित होने का इंतजार करते हैं, क्लब के पूर्व अध्यक्ष जीतेन शाह कहते हैं। और यदि किसी प्रतियोगी कॉर्पोरेट में नौकरी पाने वाला संभावित उम्मीदवार चारों खेलों में से किसी एक में अच्छा प्रदर्शन करता है, तो उसको नौकरी मिलने की संभावना बढ़ जाती है।''

तो क्लब का अगला कदम क्या है, मैंने रोटेरियनों से पूछा। देसाई कहते हैं कि क्लब ने अमेरिका के एक साझेदार क्लब के साथ लगभग $65,000 डॉलर के लिए एक वैश्विक अनुदान हेतु आवेदन किया है। ''यह पैसा कुछ स्थानीय डॉक्टरों से जुटाया जाएगा और अमेरिका में मेरे एक रिश्तेदार ने 15,000 डॉलर दान में देने की इच्छा जताई है।'' जब यह राशि मिल जाएगी, तो क्लब लगभग 50 स्कूलों में स्मार्टबोर्ड उपलब्ध कराना चाहता है।

चित्र: रशीदा भगत

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

डीजीई डकोजू और पाओला ने टीआरएफ को ₹500 करोड़ दान देकर रचा इतिहास

रशीदा भगत

रो ई मंडल 3192 के DGE रविशंकर डकोजू और उनकी पतनी पाओला।

मैं 71 वर्ष का हूँ। मेरा जीवन एक ऐसी यात्रा रही है जिसकी शुरुआत कमजोर थी मगर वह अंततः ताकत में बदल गई। मैं बचपन में बहुत बीमार रहता था; जहाँ दूसरे बच्चे स्कूल जाते या बाहर खेलते थे मैं वहीं दमा (अस्थमा) और एक्ज़िमा की वजह से महीनों तक बिस्तर पर ही पड़ा रहता था। मैंने दस वर्ष की उम्र में अपने पिता को खो दिया था। मेरे पिता ने हमारे परिवार की पूरी ज़मीन गरीब और भूमिहीन किसानों को दान कर दी थी। यह भारत में चल रहे उस आंदोलन का हिस्सा था, जो ज़मीन के मालिकों को अपनी ज़मीन भूमिहीनों के साथ साझा करने के लिए प्रेरित करता था।

इन सरल और हृदयस्पर्शी शब्दों के साथ रो ई मंडल 3192 के डीजीई रविशंकर डकोजू ने ऑरलैंडो में हाल ही में आयोजित इंटरनेशनल असेंबली में उपस्थित प्रतिनिधियों का ध्यान खींचा और उनके दिल जीत लिए। लेकिन वहाँ मौजूद लोग इस बात के लिए बिलकुल तैयार नहीं थे जिस बात की घोषणा यह सादगीपूर्ण दिखने वाले, अपनी सहजता और परंपराओं से हटकर कार्य करने वाले रोटेरियन अपनी पत्नी पाओला के साथ मिलकर करने वाले थे। बिना किसी झिझक या असहजता के उन्होंने अपने जीवन की यात्रा को साझा किया। और वह कहानी एक बिल्कुल सटीक किताब की तरह 'गरीबी से समृद्धि तक' की कहानी थी।

लेकिन जो बात बिल्कुल भी कल्पनीय या सामान्य नहीं थी, वह थी इस दंपती की उदारता। डकोजू ने घोषणा की कि उन्होंने और उनकी पत्नी ने अपनी कुल संपत्ति का लगभग 85 प्रतिशत – करीब 50-60 मिलियन डॉलर (लगभग ₹450-550 करोड़) – द रोटरी फ़ाउंडेशन को दान करने का निर्णय लिया है। यह चौंकाने वाली घोषणा करते हुए उन्होंने कहा: ''वर्षों पहले, पाओला और मैंने एक साथ मिलकर एक सपना देखा था – कि एक दिन जब हमारे पास सम्मानजनक जीवन जीने के लिए पर्याप्त धन होगा, तो हम अपनी संपत्ति का 85 प्रतिशत समाज को वापस लौटा देंगे। मेरे मित्रों, वह दिन आ चुका है और पाओला तथा मैं अब अपने सपने को साकार करने के लिए तैयार हैं।''

हालाँकि इस घोषणा पर सभागार में उपस्थित लोगों ने खड़े होकर तालियाँ बजाईं मगर जिस चीज़ ने वास्तव में इस दंपती को भले ही पूरे आयोजन का नहीं तो कम से कम इस सभागार का नायक बना दिया, वह थी उनकी इतनी ईमानदारी और विनम्रता के साथ सुनाई गई उनके जीवन की कहानी। उन्होंने अपने पिता की 53 वर्ष की आयु में हुई अचानक मृत्यु का उल्लेख किया, जिसके बाद उनके पीछे सात बच्चे, चार कुत्ते और बैंक में केवल ₹100 रह गए थे। उनके दो भाइयों को अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़कर छोटे-मोटे काम करने पड़े। उनकी माँ, जो कम शिक्षित थीं और इस आघात के लिए तैयार नहीं थीं, ''उन्होंने हमें अत्यंत कठिन परिस्थितियों में पाला – उनकी थोड़ी मदद के लिए केवल सरकार की पेंशन, नि:शुल्क स्कूली शिक्षा, मेरे भाईयों की मामूली तनख़्वाह और अपने असाधारण साहस का सहारा ही मौजूद था।''

बिना किसी संकोच के डकोजू ने बताया कि कैसे इस त्रासदी ने उन्हें बहुत जल्दी ही एक भटके हुए युवक में बदल दिया ''मैं भटक गया था एक सड़क गिरोह का सरगना बन गया। मेरे दोस्त या तो जेल चले गए या मारे गए या शराब की लत में खो गए। मैंने काले बाज़ार में सिनेमा टिकट बेचे; अपने गिरोह के सदस्यों का पेट भरने के लिए दुकानों से चोरी की; और अपनी स्कूल की परीक्षाओं में तीन बार असफल हुआ।''

पड़ोसियों ने उनके बच्चों को इस युवक से दूर रखना शुरू कर दिया जिसकी वजह से उनके भीतर हीन भावना घर कर गई। लेकिन तभी कुछ असाधारण हुआ। ''स्थानीय समुदाय ने उन्हें सिर्फ प्रेम से दंडित किया। भूखा होता तो मैं उनके घरों में चला जाता और एक बार भी उन माताओं और बहनों ने मुझे खाली हाथ नहीं लौटाया। उनकी करुणा ही मेरी जीवनरेखा बन गई।''

मैं बहुत समझदार नहीं था, ज्यादा शिक्षित नहीं था और निश्चित रूप से मेरा संपर्क तंत्र बहुत अधिक नहीं था। अब तक मैंने जो कुछ भी हासिल किया है, वह लोगों की करुणा, जीवन की कृपा और रोटरी द्वारा मेरे जीवन में लाए गए अवसरों की वजह से है।''

DGE रविशंकर डकोजू

सिर्फ ''सौभाग्य और कृपा'' के बल पर उन्हें अच्छी शिक्षा प्राप्त हुई – उन्होंने एक डिग्री और मार्केटिंग में एक डिप्लोमा हासिल किया। अपनी पहली नौकरी के लिए, जहाँ वे तीन अलग-अलग बसें बदलकर आते-जाते थे, उन्हें मात्र 2 डॉलर प्रति माह का वेतन मिलता था। लेकिन उनका जीवन तब अचानक बदल गया जब उनकी मुलाक़ात बीएसएन हरि से हुई जो आगे चलकर उनके लिए ''परिवार के सदस्य से भी बढ़कर'' बन गए। दोनों ने मिलकर एक सफल रियल एस्टेट व्यवसाय – हारा हाउसिंग – की स्थापना की।

इसके बाद उन्होंने अपनी कॉलेज की प्रेमिका, पाओला रोड्रिग्स से विवाह किया, जिनके विश्वास और अपनत्व ने मेरे जीवन को स्थिरता दी। ''मैं हिंदू था; वह ईसाई थीं। हम दो अद्भुत बेटियों के माता-पिता बने – एकता (Unity) और समता (Equality)।'' उन्होंने राजनीति में भी थोड़े समय के लिए हाथ आज़माया, लेकिन वह प्रयास बुरी तरह असफल रहा!

एक दिन उनके मित्र रमेश चारी ने उन्हें रोटरी में आमंत्रित किया। ''मैं रोटरी से ऐसे घुल-मिल गया जैसे पानी के साथ मछली का रिश्ता होता है। मुझे सेवा परियोजनाएँ बेहद पसंद आईं – खासकर पर्यावरण और बुनियादी शिक्षा से जुड़ी पहलें। मैं अपने साथी रोटेरियनों

की निःस्वार्थ भावना से बहुत प्रभावित हुआ, जिसने मुझे हमेशा अपने पिता की याद दिलाई, जिन्होंने कभी भी अपने बारे में न सोचकर अपना सब कुछ दान कर दिया था।''

धीरे-धीरे उनका व्यवसाय फल-फूल गया और कोविड महामारी के ठीक पहले, पाओला और उन्होंने रोटरी फ़ाउंडेशन को लगभग 15 मिलियन डॉलर दान करने का निर्णय लिया। यह निर्णय उनकी इस मान्यता से प्रेरित था कि ''हमारी मूल ज़रूरतों से परे जो कुछ भी है, वह हमारे पास रखने के लिए नहीं है। हमारे लिए, देना कोई विलासिता नहीं बल्कि एक कर्तव्य था।''

यह निर्णय तब घोषित किया गया जब उनके अच्छे मित्र सुरेश हरि 2018 में डीजी बने।

लेकिन आने वाले दिनों ने अपनी ही अलग रहस्यमयी कहानी बयां की; ''जितना अधिक हमने दिया, जीवन ने उतना ही अधिक लौटाया। उसी क्षण से चमत्कार होना शुरू हो गए।''

जिसे वह त्याग समझ रहे थे, वह अप्रत्याशित समृद्धि में बदल गया। ''अवसर बढ़े। विश्वास मजबूत हुआ। सद्भावना ने हमें घेर लिया।'' उनकी दोनों बेटियों का सुखपूर्वक विवाह हुआ; उनकी नाज़ुक सेहत अब इतनी सुधर गई वह अब 16-17 घंटे काम करने में सक्षम हो गए। ''सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि पाओला ने कैंसर को मात दी! हमारी कंपनी, हारा, जो दशकों से 20-30 प्रतिशत की दर से वृद्धि कर रही थी, वह अब अभूतपूर्व गति से बढ़ने लगी।''

नए अवसरों के द्वार खुले, जो सभी सफलता में बदल गए। फिश मोंगर्स नामक एक स्टार्ट-अप जो वंचित किसानों को कर्ज के जाल में फंसने से बचाता है और जिसे कुछ युवाओं ने स्थापित किया था, जहाँ वह एंजेल निवेशक और मेंटर हैं, ने मात्र तीन वर्षों में अपनी सफलता में छह गुना वृद्धि दर्ज की।

उन्होंने रो ई निदेशक के पी नागेश के साथ एक स्कूल और कॉर्पोरेट ट्रांसपोर्ट व्यवसाय में भी निवेश किया ताकि उनके साझा मित्र, नील जोसेफ, जो स्वयं एक रोटेरियन हैं, का समर्थन किया जा सके। इस व्यवसाय ने तीन वर्षों में ही चार गुना वृद्धि दर्ज की। एक अन्य रोटेरियन मित्र, रितेश के साथ शुरू की गई रियल एस्टेट कंपनी ने चार वर्षों में 10 गुना वृद्धि दिखाई। अब वह वरिष्ठ नागरिक जीवन, शहरी कचरा प्रबंधन और पर्यावरण पुनर्स्थापन से जुड़ी सामाजिक उद्यम परियोजनाओं में निवेश कर रहे हैं।

चुपचाप उनके बगल में खड़ी उनकी पत्नी के साथ बिना किसी दिखावे या धूमधाम के दिए गए डकोजू के भाषण को दर्शकों ने कैसे ग्रहण किया, यह समझने के लिए कि यहां एक अंश दिया गया है जिसे पूर्व रो ई अध्यक्ष के आर रविंद्रन ने वरिष्ठ रोटरी नेताओं के एक समूह के साथ साझा किया था। ''एक ऐसा क्षण जो स्पष्ट रूप से यादगार बन गया, वह था कि रविशंकर, सचमुच असेंबली के नायक बन गए। उन्हें केवल एक वक्ता के रूप में नहीं बल्कि एक वैश्विक हस्ती के रूप में सम्मानित किया गया, जिनके कार्यों ने रोटरी के प्रति व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के पैमाने को पुनः परिभाषित किया है। अपनी व्यक्तिगत संपत्ति का 85 प्रतिशत - 50-60 मिलियन डॉलर (लगभग ₹500 करोड़) - टीआरएफ को दान करने का उनका

हमें उनकी जीवनसाथी पाओला को भी सम्मान देना चाहिए। इस प्रकार के दान का कार्य कभी किसी एक व्यक्ति का नहीं होता; इसके लिए असाधारण शक्ति, बुद्धिमत्ता और निःस्वार्थता वाले साथी की आवश्यकता होती है।

PRIP के आर रवींद्रन

निर्णय अभूतपूर्व है। मेरी जानकारी के अनुसार, इससे वह फाउंडेशन के इतिहास में अब तक के सबसे बड़े व्यक्तिगत दानकर्ता के रूप में जाने जाएँगे।

लेकिन प्रशंसाओं की बात बाद में। डकोजू ने अपने सामान्य, सहज अंदाज में बोलना जारी रखा। ''मेरी कोई भी सफलता किसी असाधारण प्रतिभा से नहीं आई। मैं बहुत समझदार नहीं था, ज्यादा शिक्षित नहीं था और निश्चित रूप से मेरा संपर्क तंत्र बहुत अधिक नहीं था। अब तक मैंने जो कुछ भी हासिल किया है, वह लोगों की करुणा, जीवन की कृपा और रोटरी द्वारा मेरे जीवन में लाए गए अवसरों की वजह से है।''

प्रतिज्ञा लेते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान विनिमय दर के अनुसार, इस

डकोजू और पाओला TRF ट्रस्टी चेयर इलेक्ट जेनिफर जोन्स के साथ।

PRIP के आर रविंद्रन के साथ।

प्रतिज्ञा का मूल्य लगभग 50-60 मिलियन डॉलर हो सकता है, और एक विराम के बाद उन्होंने आगे कहा: हम यह इसलिए नहीं कर रहे हैं क्योंकि हम अमीर हैं बल्कि इसलिए कि हमें पता है कि हमारी ज़रूरतें पूरी करने के लिए हमारे पास पर्याप्त है। हमारे राष्ट्रपिता, महात्मा गांधी ने हमें याद दिलाया था: 'दुनिया में हर किसी की ज़रूरत के लिए पर्याप्त है, लेकिन किसी के लालच के लिए नहीं।' पाओला और मैं इस बात में गहराई से विश्वास करते हैं। हम जो कुछ भी रखते हैं, वह केवल हमारे परिवार के काम आएगा, उससे आगे कुछ नहीं! लेकिन जो कुछ हम टीआरएफ को देंगे, वह पूरी मानवता के काम आएगा।

अंत में डकोजू ने आगे कहा कि रोटरी ने उन्हें नया जीवन, उद्देश्य, दोस्ती, अर्थ और एक वैश्विक परिवार दिया है। और जीवन ने उन्हें यह सुंदर सत्य सिखाया है: 'जब आप अपनी सोच से अधिक देते हैं तो जीवन आपको उससे कहीं अधिक लौटाता है, जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होती।'

टीआरएफ को डकोजू और पाओला द्वारा दिए गए अद्भुत दान पर रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेंज़ो ने फेसबुक पर लिखा: यह असाधारण प्रतिबद्धता रोटरी के मिशन और 'यूनाइट फॉर गुड' के अंतर्गत एक साथ आने वाले लोगों की शक्ति में उनके गहरे विश्वास को दर्शाती है। उनकी उदारता हमारे वैश्विक प्रयासों को मजबूत करेगी और इस बात को साबित करेगी कि रोटरी दुनिया भर के समुदायों में क्या-क्या हासिल कर सकती है। मैं रविशंकर के नेतृत्व और उन मूल्यों से गहराई से प्रेरित हूँ, जिन्हें वह और पाओला साझा करते हैं।''

पीआरआईपी रविंद्रन ने आगे कहा कि डकोजू के लिए जो खड़े होकर तालियाँ बजाई गई, उनके ''भाषण के दौरान और उसके लंबे समय बाद भी, वह केवल उनके हृदयस्पर्शी वक्तृत्व के लिए नहीं थी। बल्कि उनके साहस, दृढ़ विश्वास और उदारता के लिए भी थी, जो बहुत कम मनुष्यों में होती है। ऐसे क्षण का साक्षी बनना हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है। हमें उनकी जीवनसाथी पाओला को भी सम्मान देना चाहिए। इस प्रकार के दान का कार्य कभी किसी एक व्यक्ति का नहीं होता; इसके लिए असाधारण शक्ति, बुद्धिमत्ता और निःस्वार्थता वाले साथी की आवश्यकता होती है। और इस अद्भुत दंपती ने जिस विनम्रता के साथ अपने आप को प्रस्तुत किया उसने सबका दिल छू लिया।''

चित्र : मोनिका लोजिंस्का, रो ई

खेल परिवर्तक

डायना शोबर्ग

अपने 2026-27 के रोटरी अध्यक्ष, ओलायिंका हकीम बाबालोला से मिलिए।

ओलायिंका यिंका हकीम बाबालोला अपनी मेज़ के गलत तरफ बैठे हैं और सामने रखे लैपटॉप की स्क्रीन पर दिख रहे छोटे-छोटे वर्गों को ध्यान से देख रहे हैं। उन्होंने अभी-अभी अफ्रीकी महाद्वीप और दुनिया के अन्य हिस्सों से जुड़े 300 रोटरेक्टरों के साथ एक कॉल पर बातचीत पूरी की है - यह बताते हुए रोटरी के निर्वाचित अध्यक्ष वॉल्यूम कम करते हैं। ''उन्होंने मेरे लिए एक समारोह आयोजित किया क्योंकि मैं खुद एक पूर्व रोटरेक्टर रह चुका हूँ,'' वह कहते हैं। बाबालोला, जो कभी उन्हीं में से एक थे, को अब रोटरी के सर्वोच्च पद की ओर बढ़ते हुए देखकर उन 300 रोटरेक्टरों में से जाने कितने ही उनसे प्रेरित हुए होंगे।

अक्टूबर की शुरुआत में, रोटरी इंटरनेशनल के निदेशक मंडल द्वारा बाबालोला को रोटरी का नेतृत्व सौंपे जाने को दो महीने से भी कम समय हुआ था। यह निर्णय रो ई के अध्यक्ष-निर्वाचित सांगकू युन के इस्तीफे के बाद अगस्त के अंत में एक विशेष सत्र के दौरान लिया गया था। सांगकू युन का कुछ ही समय बाद निधन हो गया था क्योंकि वे कई महीनों से कैंसर से जूझ रहे थे।

उनके चयन के बाद से नाइजीरिया के ट्रांस अमादी रोटरी क्लब से जुड़े बाबालोला की रोटरी मुख्यालय की यह केवल दूसरी यात्रा थी। उनका कार्यालय लगभग खाली है-अब तक उन सभी उपहारों से रहित, जिन्हें नव निर्वाचित अध्यक्ष के रूप में रोटरी नेता आमतौर पर अपनी यात्राओं के दौरान प्राप्त करते हैं।

हालाँकि वह इस पद पर नए हैं लेकिन रोटरी के साथ उनका जुड़ाव बहुत पुराना है। उन्होंने 1984 में एक रोटरेक्टर के रूप में शुरुआत की और फिर 1994 में एक रोटेरियन बने। ''एक बात निश्चित है, इस भूमिका के लिए मेरा चयन रोटरी के साथ मेरे कई वर्षों के जुड़ाव का परिणाम है, जो चार दशकों से भी अधिक समय का है, वह कहते है। इस पद तक पहुँचने वाले बहुत कम लोगों को यह सौभाग्य मिलता है।''

इस अवधि के दौरान उन्होंने न केवल रो ई उपाध्यक्ष और रो ई निदेशक मंडल के एक सदस्य के रूप में सेवा दी बल्कि एंड पोलियो नाउ काउन्टडाउन टू हिस्ट्री कैम्पैन कमिटी और नाइजीरिया पोलियोप्लस कमिटी जैसी रो ई समितियों में एक सक्रिय नेता और सहभागी के रूप में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाबालोला शेल्टरबॉक्स के न्यासी भी रह चुके हैं। उनके रोटरी सम्मानों में पोलियो-मुक्त विश्व के लिए क्षेत्रीय सेवा पुरस्कार, स्वयं से ऊपर सेवा पुरस्कार तथा उत्कृष्ट सेवा हेतु रोटरी फ़ाउंडेशन प्रशस्ति पत्र शामिल हैं। वह और उनकी पत्नी प्रेबा आर्च क्लंफ सोसाइटी के सदस्य हैं और उनकी पत्नी रोटरी क्लब पोर्ट हार्कोर्ट पासपोर्ट की सदस्य भी हैं।

यह सब उनके पेशेवर जीवन के अतिरिक्त है। उन्होंने तेल और गैस उद्योग में 25 वर्षों तक कार्य किया, जहाँ उन्होंने शेल में वरिष्ठ पदों पर जिम्मेदारियाँ निभाईं। वे दो कंपनियों के संस्थापक हैं: रिवेरा टेक्निकल सर्विसेज़ लिमिटेड, जो तेल और गैस अवसंरचना सेवाएँ प्रदान करने वाली कंपनी है तथा लेड एंड चेंज कन्सल्टिंग, जो कार्यकारी कोचिंग और संगठनात्मक प्रदर्शन परामर्श से जुड़ा समूह है।

रोटरी मैगज़ीन की वरिष्ठ स्टाफ लेखिका डायना शोबर्ग ने निर्वाचित अध्यक्ष बाबालोला से मिलकर उनके बारे में अधिक जानने के लिए बातचीत की।

उन्हें रोटरी से जुड़ने की प्रेरणा टेलीविज़न पर देखे गए एक दृश्य से मिली

हाई स्कूल के अंतिम वर्ष और कॉलेज के पहले वर्ष के बीच की गर्मियों की छुट्टियों के दौरान, बाबालोला घर पर ही टीवी देखते हुए समय बिता रहे थे तभी स्क्रीन पर एक सलीके से सजे व्यक्ति ने उनका ध्यान आकर्षित किया। बाबालोला याद करते हैं, वह व्यक्ति पूरी तरह सफ़ेद कपड़ों में था और उसकी अंग्रेज़ी कुछ अलग ही थी। जिज्ञासावश उन्होंने और ध्यान से सुनना शुरू किया। वह व्यक्ति रोटरी के बारे में बात कर रहा था। रोटरी के बारे में मैंने पहली बार उसी दिन कुछ सुना, बाबालोला कहते हैं। ''ज़्यादातर टीवी साक्षात्कारों की तरह, वह शायद एक या दो मिनट ही चला होगा लेकिन उसने मुझ पर गहरी छाप छोड़ दी।''

अब कहानी आगे बढ़ती है बाबालोला के विश्वविद्यालय के दूसरे वर्ष की ओर। उसी समय रोटरी क्लब बॉची के एक सदस्य और विश्वविद्यालय के जनसंपर्क निदेशक, उनके पास एक प्रस्ताव लेकर आए: क्या बाबालोला विश्वविद्यालय में एक रोटरेक्ट क्लब के गठन में मदद करना चाहेंगे? ''मैं आज भी लोगों से कहता हूँ कि मुझे नहीं पता उन्होंने मुझसे संपर्क क्यों किया,'' बाबालोला कहते हैं। उन्हें तुरंत ही सफ़ेद कपड़ों में सजे उस सुस्पष्ट वक्ता की याद आ गई और उन्होंने पूछा कि क्या जनसंपर्क निदेशक का उनसे कोई संबंध है। बाद में पता चला कि निदेशक उस टीवी पर दिखने

वाले व्यक्ति को जानते थे, जो रोटरी के पूर्व मंडल गवर्नर थे। इसी जुड़ाव ने बाबालोला का मन पूरी तरह जीत लिया और वह आगे चलकर उस रोटरेक्ट क्लब के चार्टर अध्यक्ष बने।

वह अपनी पत्नी से रोटरेक्ट की एक बैठक में मिले थे

अपनी विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद, बाबालोला पोर्ट हारकोर्ट चले गए और ट्रांस अमादी के समुदाय-आधारित रोटरेक्ट क्लब से जुड़ गए। एक कार्यक्रम के दौरान उन्हें एक खूबसूरत महिला नज़र आई, जो एक विश्वविद्यालय-आधारित क्लब की अध्यक्ष थीं। उन्होंने अपने एक दोस्त से उनकी ओर इशारा करते हुए कहा, ''यह वही है।'' और वह सही थे।

लेकिन यिंका और प्रेबा ही उनके परिवार के अकेले सदस्य नहीं हैं जो रोटरी से जुड़े थे। उनकी सबसे बड़ी बेटी अपने माध्यमिक विद्यालय में इंटरेक्ट क्लब की चार्टर अध्यक्ष थीं। वह अपने कॉलेज की पढ़ाई के लिए उत्तरी अमेरिका गईं थी और आज मैनिटोबा के रोटरी क्लब ऑफ विनिपेग की सदस्य हैं। उनकी एक और बेटी अपने विश्वविद्यालय के रोटरेक्ट क्लब की अध्यक्ष थीं।

उनका उपनाम 'खेल परिवर्तक' है

बाबालोला ने 2011-12 में मंडल गवर्नर के रूप में सेवा की, उस समय वह शेल नामक एक बहुराष्ट्रीय ऊर्जा कंपनी में कार्यरत थे। यह उनके पूर्ववर्तियों से अलग था क्योंकि वे या तो सेवानिवृत्त थे या उस पद पर रहते हुए अपना स्वयं का व्यवसाय चला रहे थे। उन्हें पता था कि सफल होने के लिए उन्हें चीज़ों को बदलना होगा।

सहायक गवर्नरों और समिति अध्यक्षों के साथ अपनी पहली बैठक में उन्होंने उनसे कहा कि वे अपने प्रस्तावों में कुछ ऐसा शामिल करें जो 'खेल परिवर्तक' हो: वे चीज़ें पहले कैसे करते थे और आगे उनके दृष्टिकोण में क्या बदलाव होगा। उन्होंने कहा, ''अगर उनके पास इसका कोई उत्तर नहीं है,'' तो उनके प्रस्ताव को खारिज कर दिया जाएगा। उन्हें इसे फिर से प्रस्तुत करना होगा।

''लोगों को यह एहसास हुआ कि यह व्यक्ति वास्तव में कुछ अलग करना चाहता है, वह आगे कहते हैं। मुझे 'खेल परिवर्तक' कहा जाता है लेकिन जो विचार खेल बदलने वाले थे वो मेरे नहीं थे।''

प्रेसिडेंट-इलेक्ट ओलायिंका हकीम बाबालोला रोटरी फाउंडेशन ट्रस्टी मार्था पीक हेलमैन और रो ई वाइस प्रेसिडेंट एलेन वैन डे पोएल के साथ रोटरी के हेडक्वार्टर बिल्डिंग के बाहर खड़े हुए।

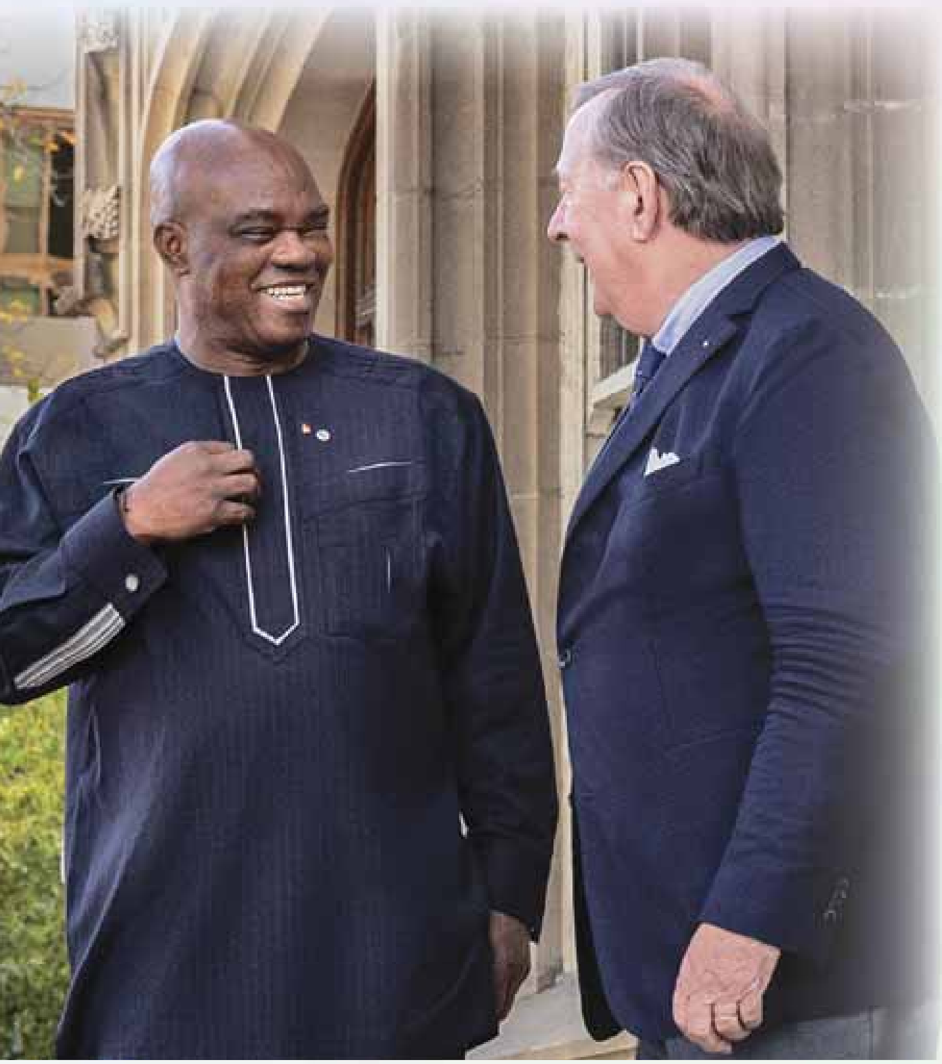

उन्होंने सिर्फ एक टेक्स्ट मैसेज भेजकर 80,000 डॉलर इकट्ठा किए।

एक डीजी के रूप में बदलाव लाने में बाबालोला के प्रयास में उनका तकनीकी उपयोग शामिल था। 1 नवंबर को रोटरी फाउंडेशन माह की शुरुआत में, वह लगभग सुबह 3 बजे उठे और ब्लैकबेरी मैसेजिंग ऐप पर एक मंडल ग्रुप को संदेश भेजा, जिसमें सभी से कहा गया कि वे उस दिन फाउंडेशन को कुछ भी दान करें चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो। इसके बाद वह फिर से सो गए। कुछ घंटे बाद जब वह जागे तो उन्होंने अपना स्वयं का दान किया और उसका प्रमाण पोस्ट किया। कुछ ही घंटों में उस ग्रुप ने 80,000 डॉलर इकट्ठा कर लिए। उन्होंने कहा, आम तौर पर आप लोगों को इकट्ठा करते है, उनसे बात करते है और फिर दान करने के लिए कहते है। ''लेकिन तकनीक के जरिए आप ऐसा आभासी रूप से कर सकते हैं।''

उस साल, पूरे मंडल के प्रत्येक क्लब ने फाउंडेशन को कुछ न कुछ दिया। लगभग 1 मिलियन डॉलर जुटाए गए, जो उनके अनुसार, अफ्रीकी महाद्वीप के किसी भी मंडल से टीआरएफ के लिए अब तक की सबसे बड़ी राशि थी।

वह चाहते है कि उनके पास स्कूबा डाइविंग के लिए अधिक समय होता।

बाबालोला 30 मीटर तक गोता लगाने के लिए प्रमाणित हैं और उन्होंने भूमध्यसागर, लाल सागर

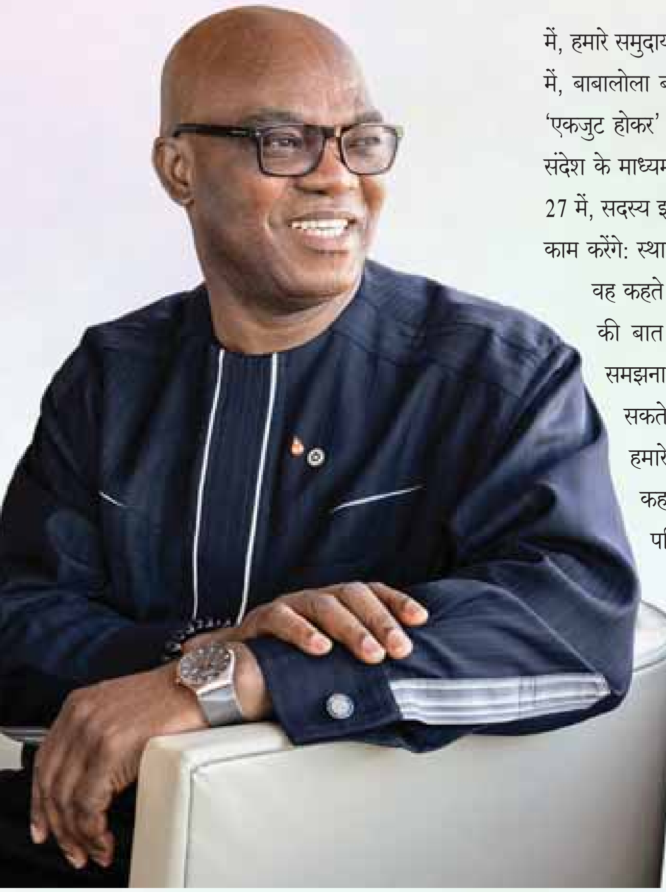

और अटलांटिक में थोड़ी गोताखोरी की है। वह किसी दिन हुरगादा में गोता लगाने के लिए उत्सुक हैं, जो मिस्र के लाल सागर तट पर एक रिसॉर्ट शहर है और अपने समुद्री जीवन, प्रसिद्ध जलपतन और पानी में स्पष्टता के लिए जाना जाता है। उन्होंने कहा, वहाँ की रीफ्स अद्भुत हैं।

उन्हें अन्य बाहरी गतिविधियों में भी आनंद आता है जैसे तैराकी, बागवानी और पक्षियों का निरीक्षण करना। उन्होंने जो सबसे दिलचस्प पक्षी देखे उनमें एक इबादन मलिम्बे शामिल है, जो एक दुर्लभ गायक पक्षी है। उसके सिर और चेहरे के आसपास चमकीले लाल पंख होते हैं और यह केवल उनके पैतृक शहर के आसपास पाया जाता है।

2026-27 का अध्यक्षीय संदेश है: *स्थायी प्रभाव उत्पन्न करें।*

अगर आपको आवश्यकता हो, तो यहाँ रोटरी के विज़न स्टेटमेंट की बात कही गई है: एक साथ मिलकर हम एक ऐसी दुनिया देखते हैं जहाँ लोग एकजुट होकर कार्यवाही करें और स्थायी बदलाव लाएँ – पूरे विश्व में, हमारे समुदायों में और हमारे भीतर। इस रोटरी वर्ष में, बाबालोला बताते हैं कि रो ई ने इस पहले शब्द 'एकजुट होकर' पर *भलाई के लिए एकजुट होने* के संदेश के माध्यम से ध्यान केंद्रित किया है। 2026-27 में, सदस्य इस विज़न स्टेटमेंट के अगले हिस्से पर काम करेंगे: स्थायी परिवर्तन लाने पर।

वह कहते हैं कि दुनिया भर में स्थायी परिवर्तन की बात अधिकांश रोटरी सदस्यों के लिए समझना आसान है। वे आपको उदाहरण दे सकते हैं: हमारा पोलियो उन्मूलन कार्य, हमारे शांति केंद्र, वैश्विक अनुदान, वह कहते हैं। ''जब आप समुदायों में स्थायी परिवर्तन की बात करते हैं, तो वे इसे समझ जाते हैं क्योंकि वे अपने-अपने समुदायों में काम करते हैं। लेकिन जब भी मैं रोटरी सदस्यों की किसी सभा में होता हूँ और उनसे उनके भीतर के स्थायी परिवर्तन के बारे में पूछता हूँ, तो आमतौर पर पूरे कमरे में खामोशी छा जाती है।''

वह सोचते हैं कि रोटरी को आगे बढ़ाने की कुंजी यह समझना है कि इसका आप पर क्या प्रभाव पड़ता है।

हालांकि सदस्य किसी परियोजना के प्रभाव को माप सकते हैं और उन्हें मापना चाहिए, बाबालोला यह सोच बदलकर देखना चाहते हैं। ''यह सब करने से आप पर क्या प्रभाव पड़ा?''

वह स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि रोटरी ने उनके स्वयं के जीवन को कैसे बदला है। ''मेरी परवरिश विशेषाधिकार वाली रही है – मुझे इतनी अच्छी शिक्षा मिली जिसे पाने के लिए कई लोगों को अवसर नहीं मिलते,'' वह कहते है। ''रोटरी ने मुझे ज़मीन से जोड़ दिया। इसने मुझे मेरे विशेषाधिकार वाले संसार से बाहर निकालकर मुझे मेरे समुदाय की वास्तविकताओं से जोड़ दिया।''

कई रोटरी सदस्यों के पास उनकी अपनी सदस्यता से उनके जीवन में हुए सकारात्मक बदलाव, उनकी विनम्रता या उनके साथियों के करीब आने की कहानियाँ होती हैं। बाबालोला उन्हें उन कहानियों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वह कहते हैं, ''अगर हम इस संगठन को बढ़ाना चाहते हैं, तो हमें लोगों को यह समझने में मदद करनी होगी कि सदस्यता उनके अपने जीवन पर स्थायी प्रभाव कैसे डाल सकती है। यही वह चीज़ है जिसे संप्रेषित करने में मैं आपकी मदद करना चाहता हूँ।''

रोटरी ने उन्हें एक राजनयिक बना दिया।

2018-20 में एक रोटरी निदेशक के रूप में, बाबालोला ने 80 से अधिक रोटरी देशों और भौगोलिक क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व किया – जो रोटरी जगत का लगभग एक तिहाई हिस्सा है – जिसमें अफ्रीका (जहाँ कम से कम 1,000 भाषाएँ बोली जाती हैं), मध्य पूर्व और यूरोप के कुछ हिस्से शामिल हैं। जिन क्षेत्रों का उन्होंने प्रतिनिधित्व किया उनमें राजनीतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र भी शामिल थे जैसे कि इज़राइल, लेबनान, यूक्रेन और अफ़ग़ानिस्तान। वह कहते हैं: ''कुछ ऐसे कौशल होते हैं जो आप में अंततः विकसित हो ही जाते हैं।''

उदाहरण के लिए, मिस्र में आयोजित एक रोटरी संस्थान में उन्हें एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी से फोन कॉल आया जो उस कार्यक्रम में इस्तेमाल हुए अफ्रीका के एक नक्शे के बारे में था। इस नक्शे को उन्होंने इंटरनेट से लिया था और उसमें पश्चिमी सहारा को एक अलग देश के रूप में दिखाया गया था, जिसे मोरक्को मान्यता नहीं देता। मिस्र, मोरक्को के दृष्टिकोण का समर्थन करता है। वह कहते हैं: ऐसी परिस्थितियाँ आपको तुरंत एक खास तरह से जागरूक बना देती हैं।

वह अफ्रीका से दूसरे अध्यक्ष हैं।

वह कहते हैं: ''यह उस महाद्वीप के लोगों के लिए बहुत बड़ी बात है।'' और वह आगे कहते हैं कि ऐसा लगता है हर कोई उन्हें समर्थन देने के लिए तैयार है। ''मैं परिणाम देने का आदी हूँ। हमें परिणाम देने की जरूरत है,'' वह कहते है। यही संदेश वह उन रोटरी संस्थानों में देते हैं जिनमें वह शामिल होते हैं। ''मैंने उन्हें कहा कि सिर्फ बात करना बंद करें और काम करें। अगर कोई चीज़ कहीं काम करती है, तो उसे बेझिझक अपनाएं। असफल होने से न डरें बल्कि कोशिश न करने से डरें।''

चित्र : मोनिका लोज़िंस्का

©Rotary

ADVT.

Rotary
Club of
VIRUDHUNAGAR

UNITE FOR GOOD

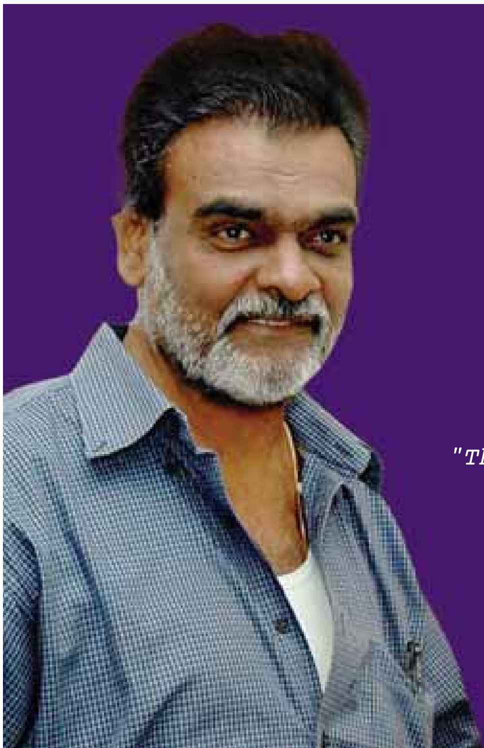

PROJECT PREMKUMAR

A Project by Rotary Club of Virudhunagar RI Dist-3212

"A reader lives a thousand lives before he dies."
- George R.R. Martin 📖

"The more that you read, the more things you will know. The more that you learn, the more places you'll go."
- Dr. Seuss 📚

"A book is a dream that you hold in your hand."
- Neil Gaiman ✴

. The best invention of mankind is book
- Albert Einstein

The program is Conducted in Two Phases

As on
December, 2025
No. of Programs
71
No. of Beneficiaries
18124
Man Hours Spent
90975 Hrs

FIRST PHASE - Breathe Reading

A 2 Hours and 30 minutes training program to develop the reading habits among the students will be conducted. 10 volunteers will be identified to review the books given to them on the next day.

SECOND PHASE

Books will be reviewed by the students and first five best reviews will be rewarded with gifts in the form of books worth around Rs 5000/- The books reviewed by the students will be handed over to the respective institution for future book reviews.

SAARCHI
DHEENA'S TEAM
RID3212 2025-26

LEKHA ads/Feb 26/ Rotary/Inside

Do you wish to organize "**PROJECT PREMKUMAR**" in your School / College?
We are waiting to partner with you.

CONTACT
Project Chairman
Rtn. S. NAGALINGAM IRS(Rtd.)
90036 59270

IDHAYAM
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

Rotary PEOPLE OF ACTION

गाँव से आसमान तक: बच्चों की उड़ान

रशीदा भगत

इस दृढ़ विश्वास के साथ कि जैसे शहरी संभ्रांत स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों को अच्छी कक्षाएँ, कंप्यूटर शिक्षा, सुसज्जित पुस्तकालय और अन्य सुविधाएँ मिलती है, वैसे ही गाँवों के साधारण स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे भी इन सुविधाओं के हकदार हैं, रोटरी क्लब अकोला, रो ई मंडल 3030, ने अकोला शहर से 15 किमी दूर स्थित छोटे से गाँव गैगांव के 250 बच्चों वाले एक ग्रामीण स्कूल को गोद लिया है।

इस स्कूल में उपलब्ध शैक्षणिक सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए छोटे-छोटे कदम उठाते हुए, रोटेरियनों ने सबसे पहले विद्यार्थियों को चित्रों से भरपूर 100 पुस्तकें प्रदान की और चुपचाप उनकी प्रतिक्रिया देखी। क्लब के पूर्व अध्यक्ष राधेश्याम मोदी, जो अक्सर इस स्कूल का दौरा करते हैं और छात्रों से संवाद करते हैं, यह देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए कि विशेष रूप से लड़कियों ने इन पुस्तकों को अपनाया और रुचि के साथ पढ़ना शुरू किया। उन्होंने बताया कि चित्रों और दृश्य सामग्री से भरपूर पुस्तकें लेने का निर्णय इसलिए लिया गया क्योंकि इससे पहले स्कूल में केवल साधारण, बिना चित्रों वाली पुस्तकें ही दी जाती थीं।

छात्रों से बातचीत के दौरान, रोटेरियनों ने पाया कि वे सीखने और अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए बेहद उत्सुक हैं। ''लेकिन पुस्तकों की कमी, वह भी आकर्षक पुस्तकों की, हमेशा इन बच्चों की पढ़ाई में बाधा रही है। इसलिए जब हमने उन्हें *पंचतंत्र,* आर के नारायण, सुधा मूर्ति और मराठी लेखक पुला देशपांडे की किताबों से भरा पुस्तकालय उपलब्ध कराया, तो वे तुरंत आकर्षित हुए और उन्हें पढ़ना शुरू कर दिया।'' इस परियोजना पर मात्र ₹12,000 का खर्च आया, जो कुछ दानकर्ताओं द्वारा दिया गया।

लड़की छात्राओं के लिए सचित्र किताबों की जादुई दुनिया।

जब बेरोज़गार नौजवान उपलब्ध होते हैं, तो नेता उनका इस्तेमाल इस या उस कैंपेन के लिए करते हैं, यहाँ नारे लगवाने या वहाँ पत्थर फेंकवाने के लिए। यह युवाओं की ऊर्जा का इस्तेमाल करने का सबसे बुरा तरीका है।

फीडबैक के समय, रोटेरियनों ने पाया कि 50 प्रतिशत से अधिक लड़कियों ने तुरंत रुचि दिखाई और किताबें पढ़ीं। ''लड़कों की ओर से प्रतिक्रिया बहुत कम थी, लेकिन हमें आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि अक्सर हम देखते हैं कि लड़कियाँ पढ़ाई और जीवन में आगे बढ़ने को लेकर अधिक गंभीर होती हैं,'' वह मुस्कुराते हुए कहते हैं।

यह सह-शिक्षा विद्यालय - स्वामी समर्थ हाई स्कूल - नाम से निजी है, लेकिन शिक्षकों का वेतन सरकार देती है। इसके अलावा, न तो इसे संचालित करने वाली संस्था और न ही सरकार ने इसके ढांचे या शैक्षणिक सुविधाओं को बेहतर बनाने में विशेष रुचि दिखाई है। यहाँ के बच्चे मुख्यतः गरीब मजदूर परिवारों से आते हैं और यद्यपि नामांकन संख्या 250 है, लेकिन औसतन केवल 150 से 200 बच्चे ही कक्षाओं में उपस्थित रहते हैं, क्योंकि बाकी बच्चों को खेतों में काम के समय माता-पिता की मदद के लिए भेज दिया जाता है।

85 वर्षीय मोदी एक समर्पित रोटेरियन हैं और पिछले 50 वर्षों से रोटरी से जुड़े हुए हैं। उनका मानना है कि किसी बच्चे को मिलने वाली ''शिक्षा की गुणवत्ता उसके पिन कोड से तय नहीं होनी चाहिए, और लड़कियों को विशेष रूप से स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्योंकि सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएँ उनकी शिक्षा को सीमित करती हैं। यही गरीबी के चक्र

को बनाए रखता है और महिलाओं के अवसरों को सीमित करता है।''

हाल ही में आयकर सलाहकार के रूप में सेवानिवृत्त हुए मोदी अब ग्रामीण युवाओं की मदद के नए-नए तरीके सोचते रहते हैं। चूंकि अब उनके पास अधिक समय है, 85 वर्ष की आयु में भी वे नियमित रूप से 15 किमी दूर इस स्कूल का दौरा करते हैं, कभी स्वयं गाड़ी चलाकर, तो कभी ड्राइवर के साथ।

क्लब द्वारा इस स्कूल के लिए आयोजित एक अन्य परियोजना थी प्रकृति अध्ययन शिविर, जिसमें लगभग 50 छात्रों को एक बस में अकोला से 50 किमी दूर स्थित काटेपुर्णा वन्यजीव अभयारण्य ले जाया गया। इसका उद्देश्य बच्चों को वहाँ की विविध वनस्पतियों, पक्षियों और वन्यजीवों के बारे में व्यावहारिक ज्ञान देना था। भ्रमण के दौरान रोटेरियनों ने पाया कि कई बच्चे पहली बार किसी जंगल और उसकी विविध वनस्पतियों को देख रहे थे। बच्चों ने यह सीखा कि पृथ्वी पर मौजूद हर चीज़ मानव और अन्य जीवों के लिए है और इसे समान रूप से साझा किया जाना चाहिए। महान झील में भरे पानी का विशाल विस्तार देखकर वे मंत्रमुग्ध हो गए।

''हमने उन्हें जंगल क्षेत्र में लगभग 2 किमी के ट्रेकिंग मार्ग पर चलाया, फिर उनसे 10 मिनट तक बैठकर आँखें बंद कर पक्षियों की चहचहाहट और झींगुरों व अन्य जीवों की आवाज़ें सुनने को कहा। ट्रेकिंग के दौरान उन्होंने चित्तीदार हिरण, बंदर और अन्य वन्यजीव देखे। पेड़ों की शाखाओं में जाले देखना उनके लिए अद्भुत अनुभव था,'' क्लब अध्यक्ष नरयोसंग तारापोरवाला ने बताया।

शिक्षा की गुणवत्ता उसके पिन कोड से तय नहीं होनी चाहिए, और लड़कियों को विशेष रूप से स्कूल जाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्योंकि सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाएँ उनकी शिक्षा को सीमित करती हैं।

बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाया गया, और जब उनसे इस यात्रा से मिली सीख के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि अब वे टॉफी के रैपर, प्लास्टिक की बोतलें या पॉलीथीन थैलियाँ इधर-उधर नहीं फेंकेंगे, जो हमारे ग्रह को नुकसान पहुँचा रही हैं। ''यही संदेश हम इन नन्हे दिमागों में बोना चाहते हैं; यदि हमें 10 प्रतिशत भी सफलता मिलती है, तो हम खुश होंगे,'' उन्होंने कहा।

बच्चों की प्रतिक्रिया लेते समय, रोटेरियन यह देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए कि 7-8 लड़कियाँ स्वेच्छा से उठीं और

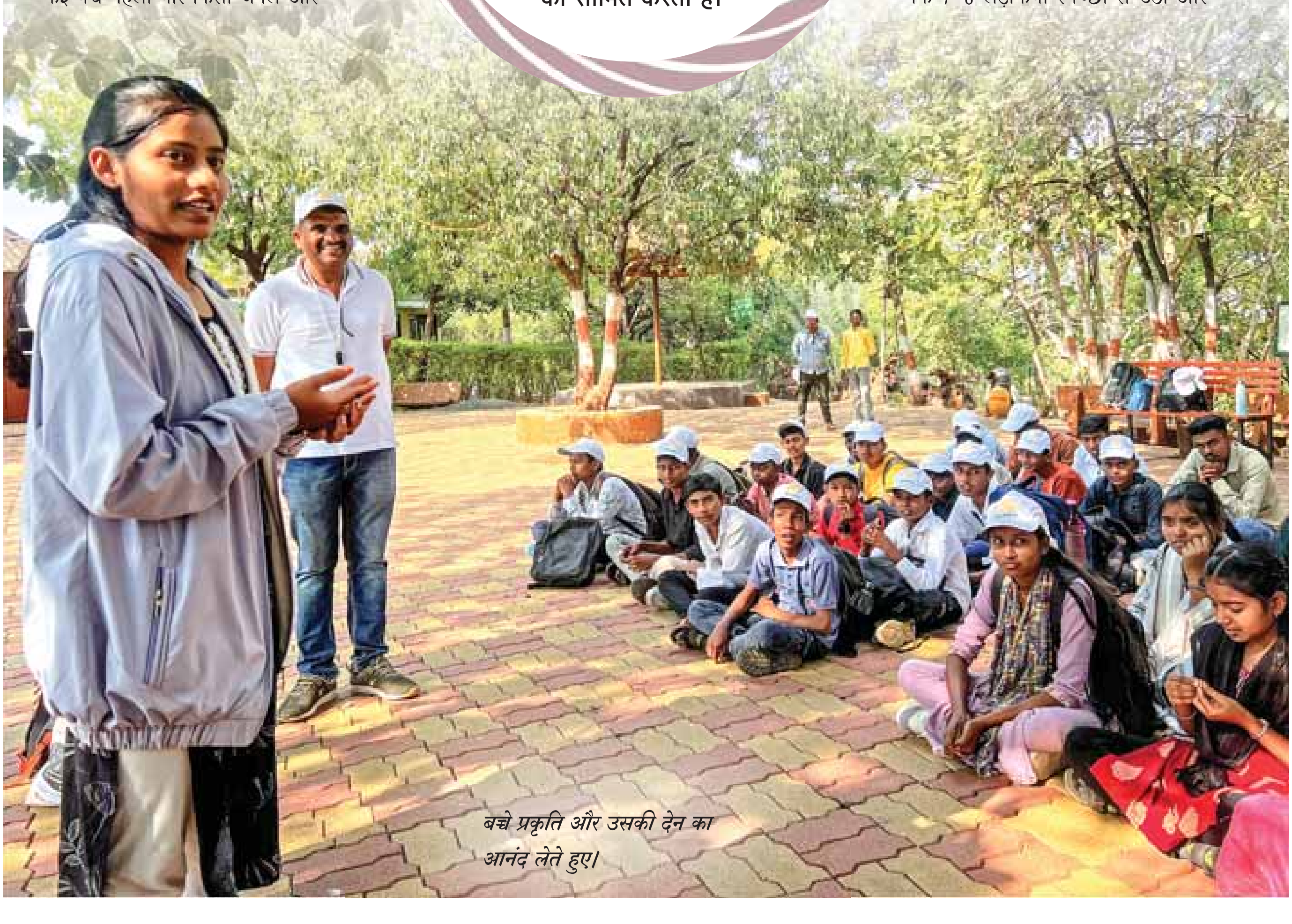

बच्चे प्रकृति और उसकी देन का आनंद लेते हुए।

वन्यजीव अभयारण्य में ध्यान करती छात्राएँ।

क्लब द्वारा उनकी शिक्षा के लिए किए गए प्रयासों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए छोटा-सा भाषण दिया। नीलम, जयश्री, शुभांगी, नंदिनी, यश, गौरी, शुभम, मीना और धनश्री ने अपने दानकर्ता विनोद तोष्णीवाल के प्रति धन्यवाद प्रकट किया। (यह परियोजना श्री राधाकिसन तोष्णीवाल पब्लिक ट्रस्ट, अकोला, द्वारा प्रायोजित थी।) ''ग्रामीण लड़कियों के लिए मंच पर उठकर भाषण देना आसान नहीं होता; हमने इसकी बहुत सराहना की और सोचा कि हमें और भी बहुत कुछ करना है,'' तारापोरवाला ने कहा।

जहां कक्षा 10वीं और 12वीं की 20 छात्राओं को ₹5,000 की 20 छात्रवृत्तियाँ पहले ही दी जा चुकी हैं, छात्रों के कल्याण के लिए कई अन्य योजनाएँ पाइपलाइन में हैं। गाँव में सामान्य जनता के लिए नियमित रूप से लगाए जाने वाले नेत्र चिकित्सा शिविरों के माध्यम से अब तक 150 से अधिक नेत्र ऑपरेशन किए जा चुके हैं।

स्कूल की खराब हालत।

क्लब का अगला लक्ष्य स्कूल में 4-5 कंप्यूटरों के साथ एक कंप्यूटर लैब स्थापित करना है, जिसकी लागत लगभग ₹2.5 लाख होगी। संसाधनों की कोई कमी नहीं है, क्योंकि भारत में दान हमारी संस्कृति में रचा-बसा है। लेकिन अन्य चुनौतियाँ जरूर हैं, मोदी कहते हैं।

मुख्य चुनौती स्कूल में अच्छे गुणवत्ता वाले कंप्यूटर लगाने की है (₹2.5 लाख की लगत से), क्योंकि भवन में सुरक्षा की कोई व्यवस्था नहीं है। शिक्षकों से चर्चा के दौरान रोटेरियनों ने चोरी की आशंका जताई, जिस पर शिक्षकों ने बताया कि सुरक्षा कैमरे लगे हैं। ''लेकिन मैंने उनसे कहा, अगर कंप्यूटर चोरी हो गए, तो कैमरे उन्हें वापस नहीं ला पाएँगे,'' मोदी ने कहा।

लेकिन जहां चाह होती है, वहां राह भी होती है। बिना घबराए रोटेरियंस ने एक समाधान ढूंढ ही लिया और स्कूल को पांच कंप्यूटर, एक प्रिंटर और कुछ संबंधित खढ एक्सेसरीज़ दिए। उन्होंने पूछा, ''हम जानते थे कि हमें कोई समाधान ढूंढना ही होगा क्योंकि हम इन बच्चों को कंप्यूटर की जानकारी दिलाने के लिए पूरी तरह से पक्के थे, क्योंकि यह आज की ज़रूरत है और बहुत ज़रूरी भी है। उनके रास्ते में पहले से ही इतनी सारी

ट्रेक पर छात्राएँ।

रुकावटें हैं... अगर हम इन रुकावटों को दूर नहीं करेंगे, तो और कौन करेगा?''

लेकिन इस समस्या को सुलझाने के तरीके हैं, अविचलित रोटेरियन कहते हैं। या तो थोड़ा और भुगतान करके कंप्यूटरों का बीमा करवा लें, या फिर मजबूत ताले लगाकर सुरक्षा को और कड़ा कर दें। ''हम कुछ न कुछ करेंगे, क्योंकि हम इन बच्चों को कंप्यूटर साक्षर बनाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं, क्योंकि यह आज के समय की मांग है और बहुत जरूरी भी है। उनके रास्ते में इतनी बाधाएँ हैं अगर हम उन्हें दूर नहीं करेंगे, तो कौन करेगा,'' वह सवाल करते हैं।

आगे की योजनाओं में कौशल विकास कार्यक्रम शामिल हैं जैसे सिलाई, खाना पकाने और अन्य व्यवसायिक प्रशिक्षण। ''हमारा जोर इस बात पर है कि ये बच्चे स्वयं रोजगार सृजित कर सकें, केवल नौकरी ढूँढने वाले न बनें, बल्कि दूसरों को भी रोजगार दे सकें।''

एक-दो दिन की कार्यशालाएँ आयोजित करने की भी योजना है, जिनमें ऐसे खाद्य उत्पाद बनाना सिखाया जाएगा जिन्हें आसानी से बेचा जा सके, जैसे केरल के प्रसिद्ध केले के चिप्स। ''महाराष्ट्र में भी ये मिलते हैं, लेकिन स्वाद वैसा नहीं होता। इस तरह ऐसे कई उत्पाद हैं जिन्हें बाज़ार में उतारा जा सकता है और जो युवाओं को अपने छोटे-छोटे उद्यम शुरू करने का अवसर दे सकते हैं। आखिर पूरे देश में ऐसे स्नैक्स केवल हल्दीराम ही क्यों बेचे? इसी तरह शेफ की भी बहुत बड़ी माँग है, इसलिए लड़के भी कुकरी (पाक-कला) की कक्षाओं से लाभ उठा सकते हैं।'' इसके अलावा कृषि से जुड़े कई अन्य क्षेत्रों में भी युवाओं को कौशल प्रशिक्षण देकर उन्हें अपनी आजीविका कमाने योग्य बनाया जा सकता है।

यह वरिष्ठ रोटेरियन मानते हैं कि भारत के सभी रोटरी क्लबों को किसी न किसी गाँव के स्कूल को गोद लेना चाहिए या ग्रामीण युवाओं के लिए ठोस काम करना चाहिए। ''यदि आगामी मंडल गवर्नर केवल अपने मंडल सम्मेलनों - जो वैसे भी उनके कार्यकाल के 6-7 महीने बाद ही होते हैं - के प्रचार पर ध्यान देने के बजाय इस विचार को आगे बढ़ाएँ, तो ऐसी परियोजनाओं को बढ़ावा मिलेगा और रोटरी भारत में वास्तव में बड़ा बदलाव ला सकेगा।''

यह सर्वविदित है कि भारत में पैसों की कोई कमी नहीं है; हर रोटेरियन को एक उत्प्रेरक की तरह काम करना चाहिए और उस धन को तलाशना चाहिए। ''हमारे पास और हमारे आसपास बहुत पैसा है - दोस्तों, परिचितों, व्यावसायिक साझेदारों, रिश्तेदारों के पास। इसके अलावा कई निजी धर्मार्थ न्यास हैं, और सीएसआर कोष भी उपलब्ध हैं। और वे हम जैसे रोटेरियनों पर भरोसा करते हैं!''

बच्चों ने कहा कि वे अब लापरवाही से कैंडी रैपर, खाली प्लास्टिक की पानी की बोतलें या पॉलिथीन बैग इधर-उधर नहीं फेंकेंगे, जो हमारे ग्रह को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

एक प्रिंटर और पांच कंप्यूटर दान किये गए।

एक छात्रा को अपनी फीस भरने के लिए फंड दिया गया।

मोदी को इस बात पर गर्व है कि उन्होंने अपने एक सहयोगी को अकोला में ₹1 से ₹2 करोड़ की लागत से एक कौशल विकास अकादमी स्थापित करने के लिए प्रेरित किया है। ''उनके पास धन भी है और दृढ़ संकल्प भी, और उन्होंने मुझसे कहा है कि आपके प्रयासों, मार्गदर्शन और सहभागिता से यह कार्य संभव है। उन्होंने कहा कि आइए युवाओं को ऑटो उद्योग, सिलाई, फैशन डिज़ाइनिंग, ब्यूटी केयर जैसे विभिन्न क्षेत्रों में कुशल बनाए।'' इन कौशल विकास परियोजनाओं में गाँव की महिलाओं को भी शामिल किया जाएगा, ताकि वे अपने स्वयं के स्वरोज़गार कार्यक्रम शुरू कर सकें।

वह बताते हैं कि अकोला और उसके आसपास कई दाल मिलें हैं, विशेष रूप से तुअर दाल की प्रोसेसिंग और पैकिंग के लिए, ''जहाँ कुशल श्रमिकों की हमेशा आवश्यकता रहती है। आईटी कौशलों, प्लंबिंग, बढ़ईगीरी, इलेक्ट्रिकल सेवाओं जैसे व्यवसायों में भी प्रशिक्षण दिया जा सकता है। मैं एक शैक्षणिक संस्था का सदस्य हूँ, जहाँ कई सदस्य संस्थान चलाते हैं और इस कौशल विकास केंद्र की स्थापना में हमारी मदद कर रहे हैं।''

अकोला की आबादी लगभग 10 लाख है और यहाँ 1-2 लाख की अस्थायी आबादी भी रहती है। यहाँ बहुत से युवा बेरोज़गार हैं, ''क्योंकि उनके पास कौशल नहीं है। और जब बेरोज़गार युवा उपलब्ध होते हैं, तो राजनेता उन्हें कभी किसी अभियान में, कभी किसी और काम में इस्तेमाल करते हैं - कहीं नारे लगवाने के लिए, तो कहीं पत्थर फेंकने के लिए। यह युवाओं की ऊर्जा का उपयोग करने का सबसे गलत तरीका है।''

कई रोटरी क्लब शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में शैक्षिक सामग्री - जैसे यूनिफॉर्म, किताबें, स्टेशनरी आदि - वितरित करते हैं। ''लेकिन हम यह सिलसिला कब तक जारी रख सकते हैं? हमें इन बच्चों को दान नहीं, बल्कि ज्ञान देना होगा, ताकि वे अपनी आजीविका स्वयं कमा सकें।''

वह स्वीकार करते हैं कि उनके क्लब को देश भर के अन्य क्लबों द्वारा किए जा रहे अच्छे कार्यों के बारे में पढ़कर सेवा परियोजनाएँ करने के कई नए विचार मिलते हैं। ''दक्षिण भारत में एक परियोजना, जिसमें गरीब महिलाओं को 50 सिलाई मशीनें दी गई थीं, ने हमें भी अपने एक गाँव में एक ऐसी ही परियोजना को शुरू करने के लिए प्रेरित किया।''

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

रो ई मंडल 3234 ने मनाया साड़ी की भव्यता का उत्सव

जयश्री

जहाँ पूरी दुनिया ऐसे फैशन ट्रेंड्स के पीछे भागती है जो कुछ ही हफ्तों में पुराने हो जाते हैं, वहीं साड़ी आज भी एक शक्तिशाली पहनावे, शाश्वत और बेहद बहुमुखी पोशाक बनी हुई है, जो बोर्डरूम से लेकर भव्य समारोहों तक अपनी छाप छोड़ती है। इसने बहुत पहले ही अपने 'केवल पारंपरिक' होने के टैग को पीछे छोड़ दिया है और आज यह उच्च फैशन के प्रतीक के रूप में मजबूती से खड़ी है।

रो ई मंडल 3234 ने 21 दिसंबर को विश्व साड़ी दिवस के अवसर पर एक भव्य और कल्पनाशील फैशन प्रस्तुति के साथ भारत के इस गौरवशाली पहनावे को सम्मान दिया। *साड़ी सिम्फनी* नामक इस कार्यक्रम में, मंडल की महिला सदस्यों ने केंद्र स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और साड़ी को उसके कई अवतारों में प्रदर्शित किया - शास्त्रीय बुनाई और क्षेत्रीय परंपराओं से लेकर साहसी और आधुनिक व्याख्याओं तक।

रंगों, रचनात्मकता और संस्कृति के इस संगम ने साड़ी को केवल एक परिधान के रूप में नहीं, बल्कि छह गज के कपड़े में बुनी हुई भारत की एक कहानी के रूप में मनाया। रैंप वॉक के दौरान नवीन साड़ी स्टाइलिंग के माध्यम से शक्तिशाली विषयगत प्रस्तुतियाँ दी गईं। एक खंड में राजसी बुनी हुई साड़ियों में ताकत और स्त्रीत्व के मिश्रण के साथ भारत की 'वीरांगनाओं' को सम्मानित किया गया; वहीं एक अन्य प्रस्तुति ने खूब तालियां बटोरीं, जब एक आत्मविश्वास से भरी 'लेडी जेम्स बॉन्ड' ने आधुनिक डेनिम ब्लाउज, बूट्स और काउबॉय हैट के साथ कांजीवरम साड़ी पहनकर रैंप पर वॉक किया, जो परंपरा और आधुनिकता का एक अनूठा मेल था।

इतना ही दिल छू लेने वाली एक प्रस्तुति पारंपरिक लिबास में सजी माँ और आधुनिक शैली की साड़ी पहने उनकी 'जेन जी' बेटी की थी, जो पीढ़ियों के बीच निरंतरता का प्रतीक बनी। दर्शकों को भगवान कृष्ण और उनके पौराणिक साथियों के साथ-साथ शिव और पार्वती के जीवंत चित्रण को देखने का भी अवसर मिला, जहाँ सभी पात्र प्राचीन शैली की समृद्ध साड़ियों में लिपटे हुए थे, जो शास्त्रीय भारत की भव्यता की याद दिला रहे थे।

रागाज़ इन ड्रेप्स खंड में संगीत जगत की प्रतिष्ठित महिलाओं को श्रद्धांजलि दी गई, जिसमें एम एस सुब्बुलक्ष्मी (अपनी प्रसिद्ध 'एम एस ब्लू'

***बाएं से:** इवेंट चेयर उषा सरावगी, प्रियदर्शिनी (रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम की बेटी), इवेंट सलाहकार पुनिता श्रीधर, सुमति मुरुगानंदम, डीजी विनोद सरावगी और डीजीएन विजया भारती।*

सुमति मुरुगानंदम और जज नर्तकी नटराज, श्रुति तुराखिया और दीक्षिता निक्कम।

यह देखकर प्रेरणा मिलती है कि रोटरी की महिलाएं हमारी विरासत का सम्मान करने में आगे बढ़ रही हैं।

सुमति मुरुगानंदम

साड़ी में), उषा उथुप, लता मंगेशकर, हरदीप कौर और विजयलक्ष्मी नवनीतकृष्णन जैसे दिग्गजों से जुड़ी विशिष्ट साड़ी शैलियों को प्रदर्शित किया गया। एक अन्य उत्कृष्ट टीम ने बीते जमाने की तमिल फिल्म अभिनेत्रियों सावित्री, श्रीप्रिया, सौकर जानकी, वाणिश्री और लता की कालातीत भव्यता को पुनर्जीवित किया, जिससे दर्शकों में पुरानी यादें और प्रशंसा का भाव जागृत हुआ।

इस पहल की सराहना करते हुए डीजी विनोद सरावगी ने कहा कि इस कार्यक्रम ने कला और संस्कृति का सुंदर मिश्रण प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा, साड़ी पहचान, गरिमा और गर्व का प्रतीक है। आज हमारी रोटरी महिलाओं ने दिखाया है कि कैसे परंपरा का उत्सव सार्थक और रचनात्मक तरीकों से मनाया जा सकता है। उषा सरावगी इस कार्यक्रम की अध्यक्ष थीं।

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदन की पत्नी सुमति ने प्रतिभागियों के उत्साह और मैत्री की प्रशंसा की। उन्होंने मंच पर प्रदर्शित भव्यता, आत्मविश्वास और सांस्कृतिक गौरव की सराहना करते हुए कहा, रोटरी महिलाओं को अपनी विरासत का सम्मान करने में आगे बढ़ते देखना प्रेरणादायक है। साड़ी भले ही सदियों पुरानी हो, लेकिन इसे पहनने वाली महिलाओं की तरह यह भी लगातार विकसित हो रही है।

इस कार्यक्रम के निर्णायक मंडल में प्रसिद्ध नृत्यांगना नर्तकी नटराज, पूर्व मिसेज चेन्नई श्रुति तुराखिया और फैशन स्टाइलिस्ट दीक्षिता निक्कम शामिल थीं। पुनिता श्रीधर और भारती सरवनन द्वारा समन्वित इस कार्यक्रम में, पूर्व मंडल गवर्नरों के जीवनसाथी सहित लगभग 250 रोटेरियन शामिल हुए। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

स्वच्छता की नई ऊँचाई: 13,000 फीट पर

रशीदा भगत

सिक्किम के कुपूप में बायो-टॉयलेट के उद्घाटन के दौरान ब्रिगेडियर झा (बीच में), PDG योगेश वर्मा और क्लब अध्यक्ष नरेश अग्रवाल क्लब सदस्यों के साथ।

रोटरी क्लब गंगटोक, रो ई मंडल 3240 के सदस्यों ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करते हुए संभवतः दुनिया की सबसे अधिक ऊँचाई पर स्थित बायो-टॉयलेट ब्लॉक की स्थापना की है। करीब दो वर्षों तक चली एक विस्तृत योजना और अनेक चुनौतियों के बावजूद पूर्वी सिक्किम के कुपुप कस्बे में एक अत्याधुनिक बायो-टॉयलेट सुविधा स्थापित की गई है। गंगटोक से लगभग 65 किलोमीटर दूर स्थित इस स्थान पर पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग शौचालय बनाए गए हैं। इस परियोजना की सबसे बड़ी विशेषता इसकी ऊँचाई है - समुद्र तल से लगभग 13,000 फीट, जो इसे एक असाधारण और प्रेरणादायक पहल बनाती है।

सितंबर माह में इस क्षेत्र के सबसे ऊँचे स्थानों में से एक में स्थित इस अत्यंत सुंदर और मनोरम कस्बे में जहाँ हाथी के आकार के कारण प्रसिद्ध एलीफेंट लेक के मनमोहक दृश्य है, में भारतीय सेना के ब्रिगेडियर झा ने बायो-टॉयलेट का उद्घाटन किया। कुपुप एक दुर्गम पहाड़ी क्षेत्र है जहाँ सेना उल्लेखनीय रूप से उपस्थित रहती है। यह स्थान ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत और तिब्बत के बीच प्राचीन सिल्क रूट पर एक प्रमुख व्यापारिक केंद्र रहा है। कुपुप में स्थित बाबा हरभजन सिंह मंदिर भी विशेष आस्था का केंद्र है जहाँ सैनिकों के साथ-साथ स्थानीय लोग भी श्रद्धा पूर्वक प्रार्थना करते हैं।

इस परियोजना की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए, रो ई मंडल 3240 के पूर्व मंडल गवर्नर और इस रोटरी क्लब के सदस्य डॉ योगेश वर्मा ने बताया कि यह क्षेत्र पर्यावरण की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील है और यहाँ पारंपरिक शौचालयों के लिए आवश्यक स्वच्छता पाइपलाइन एवं अन्य सुविधाओं की व्यवस्था करना बेहद कठिन है। यहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य और एलीफेंट लेक के चमकते जल के कारण यहाँ बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं। ''सामुदायिक आंकलन के दौरान जिन भारतीय सेना के अधिकारियों से हमने परामर्श किया उन्होंने यहाँ बायो-टॉयलेट स्थापित करने की जोरदार आवश्यकता बताई।'' शौचालय के लिए भारतीय सेना द्वारा भूमि उपलब्ध कराई गई और निर्माण कार्य भी सेना के सहयोग से पूरा किया गया।

पहले से मौजूद शौचालय की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उसमें केवल दो यूरिनल थे और उसका रखरखाव भी बहुत खराब था। रोटेरियनों द्वारा लगभग ₹20 लाख की लागत से निर्मित नया बायो-टॉयलेट पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग दो भागों में विभाजित है। प्रत्येक भाग में तीन कमोड लगाए गए हैं और पुरुष शौचालय में यूरिनल की सुविधाएं भी उपलब्ध कराई गई है।

हालाँकि, सिक्किम जैसे राज्य और कुपुप जैसे दुर्गम पर्वतीय कस्बे में, जहाँ पारिस्थितिकी तंत्र अत्यंत संवेदनशील है वहाँ बायो-टॉयलेट परियोजना की योजना बनाना और उसे क्रियान्वित करना अपने आप में अनेक विशिष्ट चुनौतियाँ लेकर आया। यह परियोजना वर्षों की सूक्ष्म योजना, समन्वय और समर्पण का परिणाम थी। ''रोटरी क्लब गंगटोक के सदस्यों ने सामग्री के

प्लंबरों को मुश्किल मौसम की स्थितियों और माइनस 5–10 डिग्री सेल्सियस के कड़ाके की ठंड में काम करने में दिक्कत हो रही थी।

परिवहन जैसी लॉजिस्टिक चुनौतियों से लेकर अत्यधिक ठंडे तापमान को सहन करने योग्य डिज़ाइन अपनाने तक, हर बाधा को पार करने के लिए अथक परिश्रम किया। इसके साथ ही, भारतीय सेना और स्थानीय प्रशासन के साथ निरंतर समन्वय बनाए रखा गया ताकि परियोजना का सुचारु रूप से क्रियान्वयन हो सके।'' शौचालय की आवश्यक इकाइयाँ लखनऊ में पूर्व-निर्मित (प्री-फैब्रिकेटेड) की गई थीं, लेकिन इन्हें और अन्य आवश्यक सामग्रियों को इस कठिन स्थल तक पहुँचाना सबसे बड़ी चुनौती थी। ऐसे में भारतीय सेना ने सामग्री के परिवहन और पूरे समन्वय में महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

''यकीन मानिए या न मानिए, हमारी सबसे बड़ी चुनौती प्लंबरों को शौचालय का निर्माण कार्य करने के लिए वहाँ तक पहुँचाना था,'' डॉ वर्मा हँसते हुए कहते हैं। ''सबसे पहले तो यह एक प्रतिबंधित क्षेत्र है और यहाँ आने के लिए विशेष अनुमति लेनी पड़ती है। सामान्यतः केवल एक दिन की अनुमति मिलती है, जबकि प्लंबरों को लगभग 15 दिनों तक वहाँ रहना आवश्यक था। इस मामले में भी भारतीय सेना ने हमारी भरपूर मदद की।''

इसके बाद आईं चुनौतीपूर्ण मौसम परिस्थितियाँ और माइनस 5 से 10 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाने वाली कड़ाके की ठंड। ''इसके साथ तेज़ हवाओं का असर भी जुड़ जाता था; मैदानी इलाकों से आए प्लंबरों के लिए ऐसी भीषण ठंड में रहना और काम करना बेहद कठिन था। एक बार फिर भारतीय सेना ने आश्रय और

ठहरने की व्यवस्था में सहयोग किया लेकिन इसके बावजूद हमें कार्य पूरा कराने के लिए प्लंबरों को सामान्य से कहीं अधिक मेहनताना देना पड़ा।''

क्लब के पीआर निदेशक प्रकाश मुंद्रा ने बताया कि बायो-टॉयलेट की आवश्यकता इतनी तीव्र थी और ''यह स्थानीय समुदाय के लिए इतना बड़ा वरदान साबित हुई कि इसके उद्घाटन समारोह में न केवल भारतीय सेना के कोर कमांडर ब्रिगेडियर झा उपस्थित रहे बल्कि सिक्किम पुलिस के कानून एवं व्यवस्था के आईजीपी ताशी वांग्याल भी विशेष रूप से शामिल हुए। रोटरी क्लब के अध्यक्ष नरेश अग्रवाल ने ब्रिगेडियर झा के साथ संयुक्त रूप से बायो-टॉयलेट का उद्घाटन किया और इसे सार्वजनिक उपयोग के लिए समर्पित किया।''

इस परियोजना के महत्व पर ज़ोर देते हुए पीडीजी वर्मा ने कहा, यह बायो-टॉयलेट सतत विकास, जनस्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण के प्रति रोटरी की प्रतिबद्धता का सशक्त प्रमाण है। इतनी अधिक ऊँचाई पर, अत्यंत दुर्गम भू-भाग और चुनौतीपूर्ण जलवायु परिस्थितियों में इस परियोजना को साकार करना हमारी टीम के समर्पण और दृढ़ संकल्प को दर्शाता है।

उन्होंने विशेष रूप से क्लब के दो सदस्यों - अश्विन ओबेरॉय और गुरप्रीत धुन्ना - का आभार व्यक्त किया जिन्होंने कठिन से कठिन समय में भी इस परियोजना को आगे बढ़ाया। उन्होंने बताया कि उस दौरान कुछ सदस्यों ने इस अत्यंत चुनौतीपूर्ण परियोजना को हाथ में लेने पर यह कहते हुए शिकायत भी की थी - यह कहाँ फँस गए? लेकिन अंततः हम सभी बेहद खुश हैं क्योंकि हमें पूरा विश्वास है कि यह परियोजना हर वर्ष इस पवित्र स्थल (मंदिर) और पर्यटन स्थल पर आने वाले हज़ारों सैनिकों, तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को लाभान्वित करेगी।

यह अग्रणी पहल न केवल रोटरी भारत के लिए गर्व का विषय है बल्कि सतत स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में एक वैश्विक मानक भी स्थापित करती है। ''यह परियोजना इस बात का प्रतीक है कि पर्यावरण की रक्षा करते हुए सेवा के नए आयाम स्थापित करने में रोटरी कितनी सशक्त है। पारंपरिक शौचालयों के विपरीत यह

हम सभी बहुत खुश हैं क्योंकि हम जानते हैं कि इस प्रोजेक्ट से हज़ारों सैनिकों, तीर्थयात्रियों और टूरिस्टों को फ़ायदा होगा।

बायो-टॉयलेट प्रणाली जीवाणु प्रक्रियाओं के माध्यम से अपशिष्ट का अपघटन सुनिश्चित करती है, जिससे जल स्रोतों के प्रदूषण को रोका जा सकता है और नाजुक हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र भी सुरक्षित रहता है। इस लोकप्रिय पर्यटन स्थल पर स्वच्छता संबंधी समस्याओं का समाधान करके यह परियोजना न केवल आगंतुकों के अनुभव को बेहतर बनाएगी बल्कि जनस्वास्थ्य की सुरक्षा भी सुनिश्चित करेगी।'' डॉ वर्मा ने इस अवसर पर रोटेरियन अरिजीत बेनर्जी (रामेसिस रियल्टी, कोलकाता) के योगदान को भी विशेष रूप से

क्लब के अध्यक्ष अग्रवाल और PDG वर्मा, ब्रिगेडियर झा से बातचीत करते हुए।

क्लब अध्यक्ष नरेश अग्रवाल (बाएं से चौथे) क्लब के सदस्यों के साथ बायो-टॉयलेट के सामने।

सराहा, जिनके अथक प्रयासों से यह परियोजना साकार हो सकी।

36 सदस्यों वाला यह क्लब अब हिमालयी क्षेत्र में स्वच्छता और जिम्मेदार पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, अन्य अधिक ऊँचाई वाले स्थानों पर भी इसी तरह की पर्यावरण-अनुकूल स्वच्छता सुविधाएँ स्थापित करने की संभावनाओं पर विचार कर रहा है।

सेवानिवृत्त चिकित्सा प्रोफेसर एवं सिक्किम में दो अस्पतालों का संचालन कर चुके डॉ. वर्मा गर्व के साथ वर्ष 2014 में आयोजित अपने वीटीटी (VTT) कार्यक्रम को याद करते हैं, जिसका उद्देश्य क्षेत्र में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार करना और मातृ मृत्यु दर को कम करना था। ''वर्ष 2012 में मैं यहाँ के सरकारी अस्पताल का प्रमुख था और उस समय सिक्किम में प्रतिवर्ष 26 मातृ मृत्यु होती थीं... जो इतने छोटे राज्य के लिए एक बहुत बड़ी संख्या थी। प्रसव के दौरान महिलाओं की मृत्यु इसलिए हो जाती थी क्योंकि उन्हें समय पर विशेषज्ञ चिकित्सा सहायता नहीं मिल पाती थी।''

यूके से आए स्त्री-रोग विशेषज्ञों की एक टीम, जिसका आयोजन उस देश से पीडीजी हिमांशु बाशु ने किया था, इस कार्यक्रम का हिस्सा बनी। पाँच विशेषज्ञों की इस टीम ने सबसे पहले सिक्किम में 13 डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ को मातृ मृत्यु दर कम करने हेतु प्रशिक्षण देने की विधियों पर प्रशिक्षित किया। ''उस समय मैं डीजी था और शिक्षण व प्रशिक्षण से संबंधित समस्त सामग्री यूके से लाई गई थी। एक सप्ताह की कार्यशाला के दौरान हमने 13 स्त्री-रोग विशेषज्ञों, नर्सों और लगभग 30 अन्य डॉक्टरों को प्रसव केंद्रों पर आपात स्थितियों से निपटने का प्रशिक्षण दिया।''

यह VTT कार्यक्रम अगले दो वर्षों तक दोहराया गया जिसका अत्यंत सकारात्मक परिणाम सामने आया। डॉ वर्मा गर्व से बताते हैं, ''सिर्फ दो वर्षों में मातृ मृत्यु दर 26 से घटकर पहले 9 और फिर 6 रह गई। इस कार्यक्रम का प्रभाव इतना व्यापक रहा कि आज तक मातृ मृत्यु दर एक अंकीय स्तर पर बनी हुई है। उन्होंने मुस्कराते हुए आगे कहा, हमारे क्लब को इस परियोजना पर बहुत गर्व है।'' ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

रोटरी ने मालदा के गांवों को किया सशक्त

वी मुत्तुकुमारन

रोटरी क्लब मालदा सेंट्रल, रो ई मंडल 3240, की अधिकांश सामुदायिक परियोजनाएं सदस्यों के योगदान से पूरी की जाती हैं, क्लब के कार्यकारी सचिव अभिजीत चौधरी कहते हैं, ''हमारा मुख्य उद्देश्य सेवा के आदर्शों के साथ इस नगरपालिका शहर के वंचित और आम नागरिकों तक पहुँचना है।'' इंग्लिश बाज़ार कोलकाता से 350 किमी उत्तर में स्थित है और यह मालदा जिले का मुख्यालय है, जो दूरदराज के आदिवासी गांवों से घिरा हुआ है।

22 साल पुराना यह क्लब स्थानीय लोगों के बीच अपनी प्रमुख *परियोजना जलधर* के कारण प्रसिद्ध है। इसमें क्लब का कोई सदस्य अपने दिवंगत माता-पिता या रिश्तेदारों की याद में पेयजल कियोस्क प्रायोजित करता है। चौधरी बताते हैं, अब तक हमने दो जलधर बूथ (प्रत्येक ₹1.2 लाख) स्थापित किए हैं, और इस साल अप्रैल में तीसरा वॉटर कियोस्क शुरू होगा। हम मालदा इंग्लिश बाज़ार नगरपालिका के 29 वार्डों में से आवश्यकता के आधार पर उचित स्थान का चयन करते हैं। प्रत्येक रोटरी बूथ से प्रतिदिन कम से कम 500 लोग पानी पीते हैं।

इस वर्ष नई पहलों की एक श्रृंखला शुरू की गई, जिससे क्लब की सार्वजनिक छवि को काफी बढ़ावा मिला - विश्व साक्षरता दिवस (8 सितंबर) की पूर्व संध्या पर एक पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 70 से अधिक स्कूली छात्रों ने अपने कला कौशल का प्रदर्शन किया; सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में दो हैंडवाश स्टेशन (प्रत्येक ₹8,500) स्थापित किए गए; और परियोजना *शारोदीय संगति* के तहत इंग्लिश बाज़ार से 17 किमी दूर स्थित एक गाँव, ऐहो, के दमदमा सरकारी प्राथमिक विद्यालय में गरीब आदिवासी परिवारों के 126 छात्रों को दुर्गा पूजा के लिए नए कपड़े दान किए गए।

प्रोजेक्ट विद्या *के तहत सोनाताला जादूपुर जूनियर बेसिक स्कूल में छात्रों को स्कूल बैग बांटे गए।*

साक्षरता के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए स्कूली छात्रों के लिए पोस्टर बनाने की प्रतियोगिता।

बाएं से: रोटरेक्टर मनोरमा साहा रॉय, अभिषेक सिन्हा, क्लब के प्रोजेक्ट चेयर सैयद इम्तियाज़ रहमान, एग्जीक्यूटिव सेक्रेटरी अभिजीत चौधरी (बैठे हुए), अध्यक्ष बिपुल दत्ता और कोषाध्यक्ष मनोज जैन (पीछे) प्रोजेक्ट शारदीय संगति *में, जो रोटरेक्ट क्लब मालदा सेंट्रल के साथ एक संयुक्त पहल है, दामदमा सरकारी प्राइमरी स्कूल, मालदा में।*

2019 से, क्लब परियोजना *शरद संप्रति* के तहत नवरात्रि से पहले एक शुभ दिन, महालया पर, अनुभव नामक वृद्धाश्रम में बुजुर्गों और निराश्रितों को नए कपड़े दान कर रहा है। इस वर्ष, उन्होंने लगभग 30 निवासियों को कपड़े वितरित किए और उन्हें दोपहर का भोजन कराया। जहाँ कपड़ों का खर्च क्लब द्वारा वहन किया गया, वहीं भोजन एक सदस्य द्वारा प्रायोजित किया गया था। परियोजना *विद्या* ने पिछले सात वर्षों में 13-14 सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के 2,000 से अधिक छात्रों को लाभान्वित किया है। चौधरी कहते हैं, इस साल हमने 113 वंचित छात्रों को स्कूल बैग और अध्ययन सामग्री दी, जिसमें स्टेशनरी, नोटबुक, ड्राइंग टूल्स, ज्योमेट्री बॉक्स आदि शामिल थे। पुस्तकालय स्थापित करने, फर्नीचर और स्कूल की यूनिफॉर्म दान करने जैसे स्कूल से संबंधित सभी कार्य परियोजना *विद्या* के अंतर्गत किए जा रहे हैं।

सैलीपुर जूनियर हाई स्कूल में मंडल अनुदान के माध्यम से पहली बार एक स्मार्ट क्लास (लागत ₹45,000) स्थापित की गई, जिसमें एक डिजिटल स्क्रीन और कंप्यूटर की सुविधा दी गई है। परियोजना अध्यक्ष सैयद इम्तियाजुर रहमान का कहना है कि इस डिजिटल क्लासरूम से 450 छात्रों को लाभ मिलेगा।

पॉल हैरिस रोटरी सदन

अपनी आँखों में गर्व की चमक के साथ चौधरी कहते हैं, हम मालदा के एकमात्र क्लब हैं जिसके पास अपना परिसर है - पॉल हैरिस रोटरी सदन। यह दो मंजिला इमारत 2014 में ₹25 लाख की लागत से बनी थी, जिसे पूरी तरह से सदस्यों द्वारा वित्तपोषित किया गया था।

अब गंगा की सहायक नदी, महानंदा, के तट पर स्थित यह 6,000 वर्ग फुट की इमारत पांच व्यावसायिक केंद्र संचालित करती है। पिछले 10 वर्षों में, सिलाई *(सतरूपा)*, ब्यूटीशियन *(रूपश्री)* और योग *(शेप-अप)* पाठ्यक्रमों ने 400 कुशल व्यक्तियों को तैयार किया है। हमने अब शतरंज अकादमी *(चेकमेट)* और थिएटर वर्कशॉप *(स्पॉटलाइट)* भी शुरू की है, जिनमें से प्रत्येक में इस साल 60 उम्मीदवारों को प्रवेश दिया जा रहा है।

जैसे-जैसे क्लब के सदस्य 'सेवा की सीमाओं' का विस्तार कर रहे हैं, उनके अध्यक्ष बिपुल दत्ता कहते हैं, हम रोटरी परियोजनाओं को करने के पारंपरिक रास्ते पर ही नहीं चल रहे हैं। हम मालदा के हर कोने के उत्थान के लिए आधुनिक विचारों को सार्थक कार्यों में बदल रहे हैं। हम ग्रामीण समुदायों की सेवा के लिए नए प्रयोग कर रहे हैं और एक दशक से अधिक समय से हम व्यावसायिक प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बना रहे हैं।

मालदा के इस क्लब में 46 सदस्य हैं, जिनमें युवा (35-40 वर्ष), वरिष्ठ (40-60 वर्ष) और वृद्ध (70 वर्ष से ऊपर) रोटेरियनों का एक बेहतरीन संतुलन है। रहमान कहते हैं, विभिन्न आयु समूहों के सदस्यों के बीच जबरदस्त आपसी तालमेल है और सभी सक्रिय रूप से कार्यों में शामिल रहते हैं, क्योंकि सेवा ही हमारा मूल मंत्र है। अब तक, यह क्लब एक इंटरेक्ट और एक रोटरेक्ट क्लब को भी प्रायोजित कर चुका है। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

दृष्टिबाधितों के लिए
एक शतरंज टूर्नामेंट

रशीदा भगत

नवंबर में रोटरी क्लब बॉम्बे जुहू बीच, रो ई मंडल 3141, द्वारा आयोजित और मुंबई सबअर्बन डिस्ट्रिक्ट चेस एसोसिएशन द्वारा संचालित शतरंज टूर्नामेंट में भाग लेने वाले 42 दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए यह दिन न केवल इस खेल को एकाग्रता से खेलने का था, बल्कि स्नेह, सम्मान और अपने महत्व को महसूस करने का भी था।

यह प्रतियोगिता एक ही दिन में आयोजित की गई, जिसमें प्रतिभागियों ने 15-मिनट के रैपिड राउंड में स्विस लीग प्रारूप के तहत मुकाबला किया। (यह प्रणाली बड़े टूर्नामेंटों के लिए एक गैर-उन्मूलन प्रारूप है, जिसमें समान अंकों वाले खिलाड़ी निश्चित संख्या के राउंड में आपस में खेलते हैं और पूर्ण राउंड-रॉबिन से बचा जाता है।)

इस आयोजन की एक प्रभावशाली बात यह थी कि 24 प्रतिभागी अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ (एफआईडीई) की रेटिंग प्रणाली के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रेटेड थे। यह रेटिंग एक संख्यात्मक स्कोर होती है जो खिलाड़ी की क्षमता को दर्शाती है और इसकी गणना एफआईडीई द्वारा की जाती है। यह एक अंतरराष्ट्रीय मानक है, जो खिलाड़ियों की तुलनात्मक शक्ति को दर्शाता है तथा टूर्नामेंट में सीडिंग, प्रगति पर नज़र रखने और ग्रैंडमास्टर जैसे खिताब अर्जित करने में उपयोग होता है।

क्लब के पीआर निदेशक प्रदीप पारिख, जो इस टूर्नामेंट के आयोजन में गहराई से जुड़े थे, ने कहा कि इस आयोजन को सफल बनाने में भूमिका निभाने वाले रोटेरियनों को खिलाड़ियों की लगन और एकाग्रता देखकर आश्चर्य हुआ। चूँकि कुल 42 खिलाड़ी थे, इसलिए छह राउंड खेले गए।

शतरंज रणनीति, दूरदर्शिता और मानसिक शक्ति का खेल है-लेकिन आँखों पर पट्टी बाँधकर, केवल स्मृति और स्थानिक कल्पना के सहारे इसे खेलना वास्तव में प्रेरणादायक है। प्रत्येक खिलाड़ी ने शतरंज

हमें एहसास हुआ कि जो लोग देख नहीं सकते, उनके लिए शतरंज का खेल हम जैसे देखने वाले लोगों की तुलना में कितना ज़्यादा चैलेंजिंग है... इसे देखकर हमारे रोंगटे खड़े हो गए।

की बिसात और मोहरों को छूकर महसूस किया जो विशेष रूप से खाँचों के साथ बनाए गए हैं ताकि मोहरे गिरें नहीं-और फिर अपनी चाल चलने से पहले उन्हें मन में अंकित किया। इन विशेष खिलाड़ियों के लिए सफ़ेद और काले मोहरों पर अलग-अलग

पहचान चिह्न होते हैं, जिससे वे उन्हें समझ सकें। जो हमने देखा, वह एकाग्रता और बुद्धिमत्ता का अद्भुत प्रदर्शन था।

रोटेरियनों ने विस्मय के साथ देखा कि किस तरह स्थानिक पहचान और मानसिक शक्ति के सहारे दृष्टिबाधित खिलाड़ी जटिल शतरंज खेल में अपनी चालें चल रहे थे। पारिख ने कहा, ''तभी हमें एहसास हुआ कि शतरंज का खेल दृष्टिबाधितों के लिए हम जैसे देखने वालों की तुलना में कितना अधिक चुनौतीपूर्ण है सचमुच हमारे रोंगटे खड़े हो गए।''

करीब ₹1.31 लाख की लागत वाले इस आयोजन की शुरुआत सुबह हुई। सभी खिलाड़ियों को नाश्ता कराया गया और स्नेहपूर्वक परोसे गए दोपहर के भोजन के बाद प्रतियोगिता का समापन हुआ। ₹300 का पंजीकरण शुल्क प्रत्येक प्रतिभागी को लौटा दिया गया और विजेताओं को कुल ₹25,000 की नकद पुरस्कार राशि दी गई। पारिख ने बताया कि ''प्रतिभागी बहुत उत्साहित, प्रसन्न और भावविभोर थे, लेकिन उन्हें शौचालय जाने जैसी बातों में सहायता की आवश्यकता होती थी और हम उन्हें मार्गदर्शन देकर बहुत खुश थे। यहाँ तक कि उनके दोनों भोजन के लिए भी हमने ज़ोर दिया कि वे आराम से अपनी सीटों पर बैठे रहें और हमने वहीं जाकर उन्हें भोजन परोसा, ताकि उन्हें सम्मानित महसूस हो। जब वे जा रहे थे, तो उनमें से कुछ ने हमसे कहा कि 'आपने हमारे साथ जिस तरह व्यवहार किया, उससे हम बहुत खुश हैं।'''

बाएं से: नेहा संघवी, स्मिता शाह, प्रदीप पारिख, मोना शाह, क्लब अध्यक्ष भावना पंड्या, मुख्य अतिथि ध्रुव सितवाला, ओजस दवे, राजीव गांधी, पारुल दोशी, श्रद्धा दवे और आईपीपी मानसी ठक्कर।

पारिख ने आगे कहा कि इस प्रतियोगिता की सफल मेज़बानी से क्लब के सदस्य इतने उत्साहित हो गए हैं कि वे इस दृष्टिबाधितों के शतरंज टूर्नामेंट को वार्षिक आयोजन बनाना चाहते हैं। ''हर प्रतिभागी के चेहरे पर खुशी और उत्साह देखना बेहद हृदयस्पर्शी था। इस संतोषजनक अनुभव के बाद और अब जब हमारे पास कुछ विशेषज्ञता भी आ गई है, तो अगली बार हम प्रतिभागियों की संख्या दोगुनी कर 80 खिलाड़ियों तक ले जाने की उम्मीद करते हैं! हमारे लिए, यह अनुभव प्रेरणादायक भी था और विनम्र बनाने वाला भी – उनकी खेल भावना, गरिमा और सकारात्मकता को देखना अद्भुत था। हर प्रतिभागी को सलाम जिन्होंने हमें मानव मस्तिष्क की वास्तविक शक्ति और असीम संभावनाओं की याद दिलाई।'' ■

भारतीय सशस्त्र बल निडर क्यों हैं - ब्रिगेडियर बसेरा

रशीदा भगत

दिल्ली में आयोजित तेजस ज़ोन इंस्टीट्यूट के एक सत्र में रक्षा मंत्रालय के भूतपूर्व सैनिक कल्याण विभाग के अंतर्गत केंद्रीय सैनिक बोर्ड (केएसपी) के सचिव ब्रिगेडियर डी एस बसेरा ने मानेकशॉ सेंटर में खचाखच भरे सभागार को संबोधित करते हुए हुए बताया कि लोग हमारे रक्षा बलों में क्यों शामिल होते हैं और देश की रक्षा करने वाले जवान निडर क्यों होते हैं।

जनरल मानेकशॉ के नाम पर इस स्थल का नाम रखा गया है जो गोरखा रेजिमेंट से थे; ब्रिगेडियर बसेरा भी 35वीं गोरखा रेजिमेंट से संबंधित हैं। युद्ध की स्थिति में हमें देश के किसी भी हिस्से में सबसे पहले तैनात किया जाता है। जनरल मानेकशॉ को 1971 के युद्ध में बांग्लादेश को मुक्ति दिलाने में भारत की विजय के लिए 1973 में फील्ड मार्शल के पद पर पदोन्नत किया गया। ब्रिगेडियर बसेरा स्वयं भारतीय सेना में अपने परिवार की तीसरी पीढ़ी के अधिकारी हैं। ''मेरे दादा ने द्वितीय विश्व युद्ध में भाग लिया था। उन्हें सिर में गोली लगी थी और उन्हें मृत घोषित कर दिया गया और उन्हें मिलिट्री क्रॉस से सम्मानित किया गया। 21 दिन बाद वे जीवित लौटे, स्वस्थ हुए, फिर से युद्ध में शामिल हुए और एक बार फिर मिलिट्री क्रॉस से सम्मानित किए गए।''

इन सभी कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने बसेरा के पिता को भारतीय सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। बसेरा के पिता ने 1962 और 1971 दोनों युद्धों में भाग लिया। ''उग्रवाद के दौरान मेरे पिता ने अपने दाहिने हाथ की एक उंगली खो दी थी और उन्हें सेना से हटाया जाने वाला था। इसके बावजूद भी वह उसी शाखा में बने रहे और विभिन्न परिस्थितियों में सेवा करते रहे और साथ ही 18 वर्ष की आयु में मुझे सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। आज 33 वर्षों की सेवा तथा राष्ट्रीय रक्षा अकादमी और भारतीय सैन्य अकादमी में चार वर्षों के प्रशिक्षण के बाद मैं आपके सामने खड़ा हूँ। मेरा बेटा भी हमारे साथ है और वह भी भारतीय सेना में शामिल होगा।''

जब उन्हें 1992 में कमीशन मिला, उसी समय पूर्वोत्तर भारत में उग्रवाद फैल गया था और वह आतंकवाद-रोधी अभियानों में शामिल रहे, ''ऐसे अभियानों में आपको यह नहीं पता होता कि दुश्मन कहाँ है क्योंकि दुश्मन भीतर ही छिपा होता है। इसलिए हमें एक अलग तरह का युद्ध लड़ना पड़ा। इन सभी चुनौतियों के बावजूद भी मैं चाहता हूँ कि मेरा बेटा सशस्त्र बलों में शामिल हो। आप सोच रहे होंगे कि सिर में गोली लगने, अंग खोने और मेरे स्वयं के सैन्य जीवन में आई कठिनाइयों के बावजूद मैं ऐसा क्यों चाहता हूँ।''

उन्होंने आगे कहा कि बड़ा प्रश्न यह है कि ऐसी कौन-सी प्रेरणा है जो पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों को बार-बार सशस्त्र बलों में शामिल होने के लिए प्रेरित करती है। ''वह प्रेरणा है - नाम, नमक और निशान। हमारा नाम है भारत। हमारा नमक है हमारी मिट्टी और हमारा निशान है हमारा राष्ट्रीय ध्वज। इन तीनों के लिए हम किसी भी हद तक जा सकते हैं।''

उन्होंने बताया कि भारतीय सैनिकों को प्रेरित करने और उन्हें निडर बनाने वाला एक प्रमुख कारण यह है कि ''सेवा के दौरान, सेवानिवृत्ति के बाद और यहाँ तक कि मृत्यु के बाद भी सैनिकों और उनके परिवारों का पूरा ध्यान रखा जाता है। यही कारण है कि हम निडर हैं। हमें डरने की आवश्यकता नहीं होती। यदि हम जीवित हैं तो हमारे सीने पर पदक होते हैं। यदि हम शहीद होते हैं तो इंडिया गेट

केंद्रीय सैनिक बोर्ड के सचिव ब्रिगेडियर डी एस बसेरा।

के पीछे स्थित राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर हमारा नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित होता है। प्रतिदिन हज़ारों लोग हमें याद करते हैं। इस संसार से विदा होते समय तिरंगे में लिपटे जाने से बड़ा सम्मान और क्या हो सकता है,'' ब्रिगेडियर बसेरा ने मंत्रमुग्ध श्रोताओं से पूछा।

केंद्रीय सैनिक बोर्ड (केएसबी) लगभग 37 लाख भूतपूर्व सैनिकों की देखरेख करता है और उनके कल्याण के लिए कार्य करता है। तेजस इंस्टीट्यूट के एक सत्र का आयोजन जिस मानेकशॉ सेंटर में हुआ, उसकी उत्पत्ति के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि वर्ष 2009-10 के आसपास सशस्त्र बलों से संबंधित विभिन्न संगोष्ठियाँ और चर्चाएँ आयोजित की गई थीं। ''आज हम 14 लाख से अधिक की कुल संख्या के साथ विश्व की दूसरी सबसे बड़ी सशस्त्र सेनाएँ हैं। इनमें से लगभग 12 लाख भारतीय सेना में, 1.5 लाख वायुसेना में और 75,000 से 80,000 नौसेना में कार्यरत हैं। इन चर्चाओं के बाद यह निर्णय लिया गया कि सशस्त्र बलों के लिए एक विशेष केंद्र होना चाहिए, जहाँ वे अपनी बैठकों, संगोष्ठियों और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन कर सकें। इसी के परिणामस्वरूप वर्ष 2010 में मानेकशॉ सेंटर की स्थापना की गई।''

भूतपूर्व सैनिकों और उनके परिवारों की देखभाल की अत्यंत आवश्यकता पर बात करते हुए ब्रिगेडियर बसेरा ने कहा कि कारगिल युद्ध वह अंतिम युद्ध था जिसमें उन्होंने 27 वर्ष की आयु में भाग लिया था। यह युद्ध भले ही अल्पकालिक था लेकिन अत्यंत भीषण और उच्च जोखिम वाला था। इसके लिए वो सैनिक अधिक उपयुक्त थे जो युवा हो, शारीरिक रूप से अत्यधिक सक्षम हो और साथ ही जिनपर पारिवारिक जिम्मेदारियाँ कम हो क्योंकि इस युद्ध में भारी हताहत होना तय था। मुझे उस युद्ध में भाग लेने का सौभाग्य मिला, जहाँ हम माइनस 35 से 40 डिग्री सेल्सियस तापमान में कार्य कर रहे थे। युवा होने के कारण हम इसे सहन कर पाए। लेकिन मात्र एक सप्ताह में

लोगों को सेना में शामिल होने के लिए जो चीज़ प्रेरित करती है, वह है नाम, नमक और निशान... नाम है भारत, नमक है मिट्टी और निशान हमारा राष्ट्रीय झंडा।

एक सैनिक को कभी पीछे हटने की शिक्षा नहीं दी जाती

ब्रिगेडियर बसेरा ने कहा कि मानेकशॉ सेंटर में प्रदर्शित हर तस्वीर/चित्र का अपना इतिहास है और हर पेंटिंग की अपनी कहानी है। इसके बाद उन्होंने 1962 के लद्दाख युद्ध में भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा किए गए एक अभियान की रोमांचक कहानी सुनाई।

''हमारे पड़ोसी देश से आक्रामकता हुई थी और उत्तरी लद्दाख क्षेत्र में रिजांग ला नामक स्थान है (एक रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण, ऊँचाई वाला पर्वत दर्रा)। यहाँ 13वीं कुमाऊँ रेजिमेंट के 120 सैनिक, एक मेजर के नेतृत्व में चीनी सैनिकों की भारी गोलीबारी का सामना कर रहे थे। एक मेजर का कार्यकाल लगभग 8-9 वर्षों का होता है। बटालियन ने दुश्मन सेनाओं से लड़ाई शुरू की लेकिन एक समय बाद गोला-बारूद खत्म हो गया। उन्हें आदेश मिले कि ''ठीक है, अगर गोला-बारूद खत्म हो गया है तो हम और आपूर्ति नहीं कर सकते क्योंकि समय नहीं है, कोई लॉजिस्टिक उपलब्ध नहीं है इसलिए तोपखाने से गोलीबारी शुरू करो।''

ब्रिगेडियर बसेरा ने समझाया कि भारतीय सेना की युद्ध रणनीति की एक स्पष्ट प्रणाली होती है; जब आपके पास कुछ भी शेष न रहे और आप दुश्मन से घिर जाएँ, तब भी आपको जो कुछ भी उपलब्ध हो उसी से लड़ते हुए दुश्मन को नुकसान पहुँचाते रहना होता है। भले ही हमें प्राण त्यागने पड़ें लेकिन जब तक दुश्मन को हमसे क्षति पहुँचती रहती है, हम अपने जीवन का बलिदान देने के लिए तैयार रहते हैं। ऐसी ही स्थिति वहाँ उत्पन्न हुई। हमने गोलीबारी शुरू की और सैनिकों ने बंकरों में मोर्चा संभाला और दुश्मन को भारी नुकसान पहुँचाया।

लेकिन एक समय ऐसा आया जब बटालियन के पास तोपखाने की आग भी समाप्त हो गई और ''अधिकारी को अपने जवानों के साथ पीछे हटने का आदेश दिया गया। अब देवियो और सज्जनो, भारतीय सेना में हम कभी पीछे नहीं हटते। हमें वापस आने की शिक्षा नहीं दी जाती। मुझे वापस आना नहीं आता। मुझे पीछे हटने का प्रशिक्षण नहीं मिला है। मैं कभी वापस नहीं आऊँगा। इसका कोई सवाल ही नहीं है।''

इसलिए उस युवा मेजर ने अपने जवानों को मोर्चे पर ही डटे रहने का आदेश दिया ''उन्होंने जो भी हथियार उनके पास थे, उनसे लड़ाई लड़ी और यहाँ तक कि उन्होंने अपने हाथों और फिर अपने नाखूनों तक से युद्ध किया।''

ब्रिगेडियर बसेरा ने आगे कहा कि जब उन्होंने इंडिया गेट के पीछे स्थित राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में उनकी तस्वीरें देखीं, तो वे वास्तव में स्तब्ध और भावुक हो गए। ''मैं एक सैनिक हूँ हमें आसानी से आँसू नहीं आते। लेकिन उस दिन मैं रो पड़ा और सोचा कि मैं 1962 से पहले क्यों नहीं पैदा हुआ ताकि मैं उस युद्ध में लड़ सकता। यह कहानी अत्यंत हृदयस्पर्शी है कि कैसे वे 120 लोग निडर होकर लड़े और जो कुछ भी उनके पास था, उससे लड़े और 3,100 दुश्मन सैनिकों को मार गिराया। अंत में, इनमें से कोई भी जीवित नहीं बचा। सभी 120 ने अपने प्राणों का बलिदान दिया। उनके पास पीछे हटने के कई तरीके थे; उन्हें पीछे हटने का आदेश भी दिया गया था। कुछ भी नहीं होता, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। यही है भारतीय सेना।''

अब इस पर एक फ़िल्म बनाई गई है, *120 बहादुर* और यह Amazon Prime पर स्ट्रीम हो रही है। ■

RI अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, ब्रिगेडियर बसेरा को तोहफ़ा देते हुए। RI निदेशक गण के पी नागेश और एम मुरुगानंदन भी चित्र में मौजूद हैं।

''मैंने अपने 12 युद्ध-साथियों को खो दिया, जिनमें से चार की पत्नियाँ गर्भवती थीं।''

इतने युवा सैनिकों की सेना होने के परिणामस्वरूप, पहले जहाँ सेवानिवृत्ति की आयु 50-55 वर्ष थी, वहीं आज सैनिक लगभग 35 वर्ष की आयु में ही सेवानिवृत्त हो जाते हैं। ''तो फिर क्या होता है? जब आप सेना में होते हैं, तो सब कुछ बहुत अच्छा लगता है। आपने गणतंत्र दिवस परेड में भारतीय सेना की भव्यता देखी है। आपने हमें शांति की स्थितियों में काम करते हुए देखा है। लेकिन बहुत कम लोगों को हमें कठिन अभियान क्षेत्रों में कार्य करते देखने का मौका मिलता है, जहाँ तापमान +50 डिग्री सेल्सियस से लेकर -35 डिग्री सेल्सियस तक होता है।''

इन सब परिस्थितियों का सैनिकों के स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ''सोचिए, 35 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त होने वाले जवान की क्या दशा होगी; हमारे प्रति उसकी सामाजिक जिम्मेदारी क्या है? इतनी विशाल सीमाओं की रक्षा करने वाली इतनी ताकतवर सेना के लिए सरकार कितनी मदद कर सकती है?''

37 लाख भारतीय और नेपाली भूतपूर्व सैनिकों के कल्याण से संबंधित एक व्यक्ति के रूप में, ब्रिगेडियर बसेरा ने रोटेरियनों से मदद मांगी - न केवल उन सैनिकों के परिवारों की सहायता के लिए जो मोर्चे पर शहीद हुए बल्कि उन युवा सेवानिवृत्त सैनिकों के लिए भी जिन्हें पुनः रोजगार की आवश्यकता थी और जिनके बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित करनी थी। ब्रिगेडियर बसेरा ने रोटरी जैसी संस्थाओं और अन्य भारतीयों द्वारा हमारे सैनिकों के लिए दिखाई गई सद्भावना और समर्थन के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा: हम निडर होकर इसलिए लड़ते हैं क्योंकि आप हमें जो सम्मान, आदर और गरिमा देते हैं उससे हमें भरोसा होता है कि अगर हम न भी रहें, तो मेरी पत्नी और बच्चे की सम्मानपूर्वक देखभाल की जाएगी। मेरी आप सभी से विनम्र विनती है कि जब भी आप अपने सैनिकों से मिलें तो यह याद रखें कि उन्हें आपसे पैसे की आवश्यकता नहीं है। उन्हें केवल सम्मान चाहिए।

भारतीय सैनिकों को निडर बनाने वाली बात यह है कि उन्हें भरोसा होता है कि सर्विस के दौरान, रिटायरमेंट के बाद और यहां तक कि मौत के बाद भी उनके परिवारों का ख्याल रखा जाएगा।

हम सम्मान और नैतिकता के लिए ही लड़ते हैं। कारगिल युद्ध में हमारे सामने दुश्मन के कई शव पड़े थे लेकिन एक भी व्यक्ति को पीछे नहीं छोड़ा गया। हमने उन्हें सम्मानपूर्वक अंतिम संस्कार दिया। 1971 में 93,000 दुश्मन सैनिकों को उनके देश लौटाया गया। कौन सा देश ऐसा करता है?''

अंत में उन्होंने कहा कि पहले ऐसा समय था जब वरिष्ठ सेना अधिकारी सार्वजनिक रूप से बैठकों को संबोधित नहीं करते थे। ''लेकिन अब समय बदल गया है। सरकार का निर्देश यह है कि हमारे नागरिकों को हमारे इतिहास और हमारी सेना की जानकारी होनी चाहिए।'' दो साल तक संयुक्त राष्ट्र में सेवा देने और 18 देशों, विशेषकर यूरोप का दौरा करते हुए वह इस बात से बहुत प्रभावित हुए कि वहाँ के लोग अपनी सशस्त्र सेनाओं के बारे में कितनी जानकारी रखते हैं और उन्हें कितना सम्मान देते हैं। ''वे समझते हैं क्योंकि उन्हें यह पता होता है कि क्या हो रहा है। हमारे देश में हमें इस तरह की जानकारी नहीं दी जाती थी। हमारे नागरिक नहीं जानते थे।'' लेकिन यह स्थिति अब बदल रही है।

उन्होंने आगे यह भी कहा कि वह रोटेरियनों के साथ साझेदारी करने के लिए उत्सुक हैं, विशेष रूप से स्वास्थ्य संबंधी परियोजनाओं और स्तन कैंसर, सर्विकल कैंसर जैसी बीमारियों की रोकथाम के क्षेत्र में काम करने के लिए। ■

स्वयं से पहले सेवा में जिया गया जीवनः पीडीजी पुरु

टीम रोटरी न्यूज़

PDG पी वी पुरुषोत्तमन (दाएं) पोलियो उन्मूलन के साथी पायनियर्स - रोटेरियन एस एल चिटाले, PDG विश्वनाथ रेड्डी और एस कृष्णस्वामी और डॉ एच वी हांडे के साथ।

पीडीजी पी वी पुरुषोत्तमन (5 जनवरी, 2026), जिन्हें लोग प्यार से 'पुरु' बुलाते थे, के निधन ने न केवल रो ई मंडल 2982 में, बल्कि पूरे भारत के रोटरी समुदाय में एक ऐसा खालीपन छोड़ दिया है जिसे भरा नहीं जा सकता।

उन्होंने भारत के पहले पोलियोप्लस अनुदान के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह तमिलनाडु के लिए 2.6 मिलियन डॉलर की पहल थी, जिसके जरिए मौखिक पोलियो टीके, निगरानी प्रणालियाँ और टीके को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक एक व्यापक कोल्ड-चेन नेटवर्क को वित्तपोषित किया गया था। रो ई मंडल 3234 के पूर्व गवर्नर एस कृष्णास्वामी याद करते हुए कहते हैं: पुरु ने अद्भुत समर्पण के साथ पूरे तमिलनाडु में कोल्ड-चेन सुविधाओं का इंतजाम किया। वे अपने काम के प्रति बेहद समर्पित थे और हर छोटी-बड़ी चीज की निगरानी के लिए दिन-रात काम करते थे। कृष्णास्वामी, पीडीजी पुरुषोत्तमन के साथ उस शुरुआती पांच सदस्यीय समिति का हिस्सा थे जिसे भारत से पोलियो के उन्मूलन के लिए बनाया गया था। बाद में, उनका व्यापक अनुभव उन्हें पोलियो उन्मूलन प्रयासों के लिए जाम्बिया, जिम्बाब्वे और मलावी ले गया।

पुरु पोलियो उन्मूलन के एक बड़े स्तंभ थे और पीआरआईडी ओ पी वैष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करते थे। 1994 में महामारी के प्रकोप के बाद वे गुजरात आए थे, ताकि हमारे द्वारा किए जा रहे पोलियो उन्मूलन कार्य को समझ सकें, पीडीजी मयूर व्यास (रो ई मंडल 3060) याद करते हैं।

एक अन्य रोटेरियन याद करते हैं: वे पोलियो के काम के लिए कितनी भी दूर जा सकते थे। एक बार, वे कोल्हापुर में एक पोलियो कार्यशाला में शामिल होने के लिए पूरी रात गाड़ी चलाकर गए थे। भारत से पोलियो को मिटाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, यरकौड में हुई एक रोटरेक्ट सभा को याद करते हैं जहां पुरु मुख्य अतिथि थे। वह कहते हैं, उनका जाना उनके परिवार और पूरी रोटरी बिरादरी के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

रोटरी क्लब किलोन वेस्ट के पूर्व अध्यक्ष एन भास्करन पिल्लई 1985 में रोटरी की सदस्यता चुनौतियों पर पुरुषोत्तमन द्वारा दिए गए एक तात्कालिक भाषण को याद करते हैं। उनके ओजस्वी आह्वान, आगे बढ़ो या पीछे रह जाओ, को खड़े होकर तालियों की गूंज के साथ सराहा गया और आज भी कई लोगों के मन में गूंजता है। रोटरी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ऐसी थी कि एक बार उन्होंने कश्मीर में पारिवारिक अवकाश को भी छोटा कर दिया, ताकि रोटरी के एक अन्य निमंत्रण का सम्मान कर सकें।

पुरुषोत्तमन का प्रभाव स्थायी सामुदायिक धरोहरों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जिनमें सेलम के निकट स्थित रोटरी कॉलोनी भी शामिल है। अपने भाइयों - पीडीजी पी वी जंबुकेशन (रो ई मंडल 321, तिरुनेलवेली) और पीडीजी पी वी पार्थसारथी (रो ई मदनल 323, चेन्नई) - के साथ मिलकर उन्होंने भाईयों की एक दुर्लभ तिकड़ी का निर्माण किया, जिन्होंने डीजी के रूप में सेवाएं दी। उनके द्वारा स्थापित स्कूल और सामुदायिक भवन आज भी उनके नेतृत्व की छाप को दर्शाते हैं। एआरएएस पीवीपीवी समूह से जुड़ा पीवीपीवी नाम दक्षिण भारत के ऑटोमोबाइल उद्योग में आज भी ईमानदारी और उत्कृष्टता का पर्याय बना हुआ है।

पुरुषोत्तमन के निधन के साथ, रोटरी सेवा और मानवता के एक महान पुरोधा को विदाई देता है। ■

ओलायिंका बाबालोला ने रोटेरियनों से स्थायी प्रभाव डालने का आग्रह किया

एटेल्का लेहोक्ज़्की

रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के निर्वाचित अध्यक्ष ओलायिंका बाबालोला ने सदस्यों से अपने क्लबों को अधिक स्वागत-योग्य बनाने, प्रभावशाली परियोजनाएं चलाने और अपने रोटरी अनुभवों के माध्यम से स्वयं को व्यक्तिगत रूप से बदलने का आह्वान करते हुए *स्थायी प्रभाव डालने* का आग्रह किया।

12 जनवरी को ऑरलैंडो, फ्लोरिडा, यूएसए, में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सभा में बाबालोला ने कहा, ''रोटरी ने हमें बदल दिया है। इसने हमें आकार दिया है और हमें बेहतर इंसान बनाया है। हम अक्सर दुनिया को बदलने की बात करते हैं। हम पोलियो को खत्म करने, शांति स्थापित करने के बारे में बात करते हैं। लेकिन हम इस बारे में ज्यादा नहीं सोचते कि रोटरी हमें कैसे बदलती है।''

रोटरी क्लब ट्रांस अमादी, नाइजीरिया, के सदस्य बाबालोला ने बताया कि कैसे एक किशोर के रूप में रोटरेक्ट क्लब में शामिल होने से उनका दृष्टिकोण उस सीमित, विशेषाधिकार प्राप्त नजरिए से कहीं बड़ा हो गया, जो कभी उनका हुआ करता था। जागरूकता में यह बदलाव उनके समुदाय में उनके क्लब द्वारा डाले गए स्थायी प्रभाव को देखने से आया, विशेष रूप से लोगों को पढ़ना और लिखना सिखाने से।

उन्होंने कहा, ''रोटरी के सदस्यों के रूप में, हम एक बेहतर भविष्य का सपना साझा करते हैं। इस सपने को हकीकत बनाने के लिए, हमें अपने भीतर के बदलाव को स्वीकार करना होगा और उसे उजागर करना होगा। हमें केवल परिणामों पर ही नहीं, बल्कि प्रभाव पर ध्यान देना चाहिए।'' उन्होंने कहा कि बदलाव और प्रभाव एक नहीं होते हैं: ''बदलाव केवल शुरुआत है। प्रभाव वह है जो कायम रहता है।''

प्रभाव को समझना

बाबालोला ने कहा कि रोटरी सदस्यों ने नाइस्ना, दक्षिण अफ्रीका, में प्रारंभिक शिक्षा का विस्तार करके और नाइजीरिया में प्रसव-पूर्व देखभाल तक पहुंच बढ़ाकर प्रभाव डाला है। रोटरी क्लब नाइस्ना ने स्थानीय महिलाओं को प्रारंभिक शिक्षा केंद्र खोलने और प्रबंधित करने के लिए सशक्त बनाया।

यह परियोजना हजारों बच्चों और परिवारों तक पहुंची है, और यह उन समुदायों में पीढ़ियों तक शिक्षा प्रदान करना जारी रखेगी। ''हम दुनिया के अन्य हिस्सों में इस तरह के प्रभाव को फिर से बना सकते हैं, और ऐसा करके हम उन समुदायों में अपने पड़ोसियों का विश्वास और सम्मान अर्जित कर सकते हैं जिनकी हम सेवा करते हैं। और जब अधिक समुदाय रोटरी पर भरोसा करते हैं, तो अधिक लोग इसमें शामिल होना चाहते हैं।''

बाबालोला ने नाइजीरिया में 'टुगेदर फॉर हेल्दी फैमिलीज़' के व्यापक प्रभाव का भी वर्णन किया। मातृ और नवजात शिशु मृत्यु दर को कम करने की इस पहल को 2022 में 2 मिलियन डॉलर का रोटरी प्रोग्राम्स ऑफ स्केल अनुदान मिला था।

''रोटरी के हस्तक्षेप से पहले, कई महिलाएं प्रसव-पूर्व देखभाल से बचती थीं, जो मां और बच्चे दोनों के सुरक्षित जन्म को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। रोटरी के साथ काम करने के बाद, गर्भवती माताओं को प्रसव-पूर्व देखभाल प्राप्त करने में मदद करने के लिए प्रणाली बन गई। समुदाय को

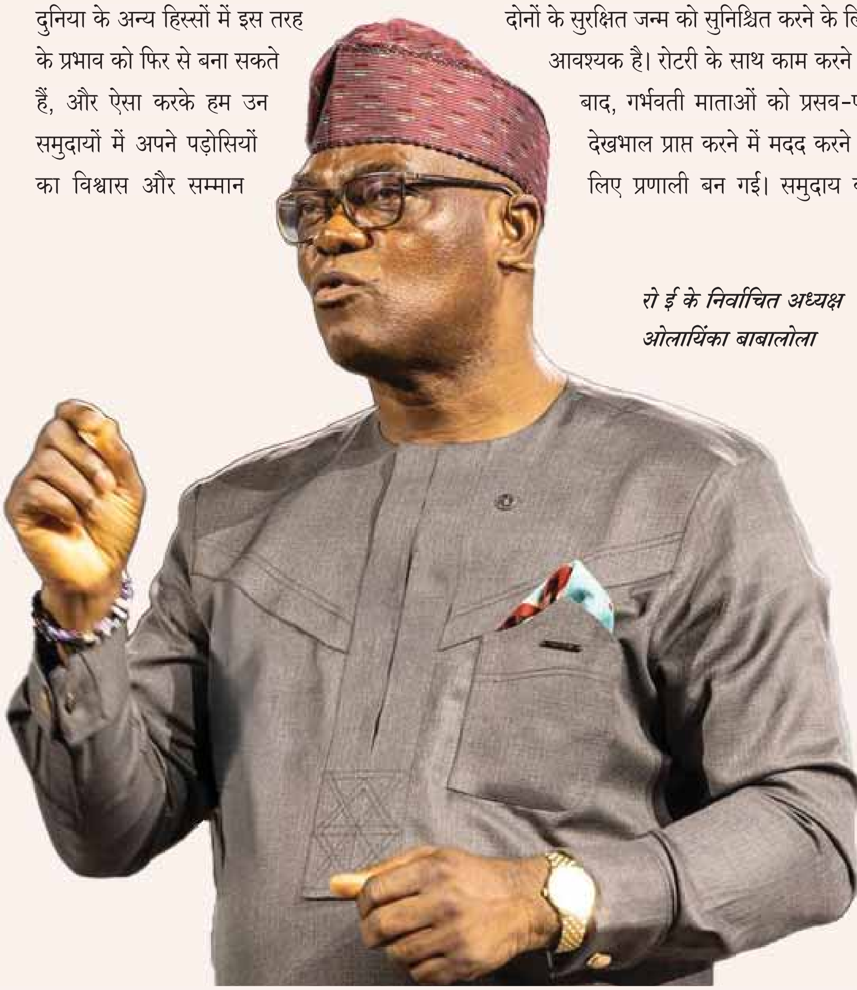

रो ई के निर्वाचित अध्यक्ष ओलायिंका बाबालोला

शामिल किया गया। उपस्थिति बढ़ी। मृत्यु दर कम हुई। वह परियोजना दशकों तक पूरे नाइजीरिया में जीवन को बदल देगी।''

स्वागत करना

बाबालोला ने सदस्यों से अपने क्लबों में नए लोगों के प्रति अधिक खुला और स्वागत करने वाला रवैया अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि कैसे, जब वह रोटरी क्लब में शामिल होने के लिए उत्सुक एक रोटरेक्ट क्लब के सदस्य थे, तो रोटरी क्लब के अध्यक्ष ने उनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार किया था।

बाबालोला ने याद करते हुए कहा, उन्होंने कहा, 'इतनी हिम्मत! तुम बिना निमंत्रण के बस ऐसे ही शामिल नहीं हो सकते।' मैं वहां से जा सकता था। इसके बजाय, मैंने कहा, 'मुझे नहीं पता था कि एक बच्चे को अपने माता-पिता के घर में प्रवेश करने के लिए निमंत्रण की आवश्यकता होती है।'

बाबालोला ने कहा कि हालांकि उस समय से चीजें बदली हैं, लेकिन अभी भी बहुत कुछ बदलना बाकि है। उन्होंने कहा कि कुछ क्लब खुले हाथों से दुनिया को गले लगाने के बजाय खुद को बंद कर लेते हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं के साथ हमेशा सम्मान से व्यवहार नहीं किया जाता है, और अलग-अलग विचारों और पृष्ठभूमि वाले लोगों का हमेशा स्वागत नहीं किया जाता है। उन्होंने सदस्यों से यह सोचने का आग्रह किया कि वे दूसरों का बेहतर स्वागत कैसे कर सकते हैं।

उन्होंने कहा, ''आप नहीं जानते कि किसी बैठक या सेवा परियोजना में आप उन्हें जैसा महसूस कराते हैं, उसके आधार पर किसकी रोटरी कहानी शुरू हो सकती है - या खत्म हो सकती है।''

उन्होंने कहा कि सदस्यों द्वारा व्यक्तिगत बदलाव पर ध्यान केंद्रित करने का एक और तरीका अपने 'सर्वश्रेष्ठ से बेहतर' करने का लक्ष्य रखना है। उन्होंने मंडल नेतृत्वकर्ताओं से धन जुटाने, परियोजनाओं की योजना बनाने और सदस्यों की भर्ती में अपनी पिछली सफलताओं का अवलोकन करने का आग्रह किया। फिर, उन्होंने कहा, उन्हें अपनी पिछली जीतों को पार करने के लिए खुद को चुनौती देनी चाहिए।

उन्होंने अंत में कहा, ''जब हम खुद को बदलते हैं, तो हम अपने क्लबों और मंडलों को बदलते हैं। जब हम अपने मंडलों को बदलते हैं, तो हम उन समुदायों को बदलते हैं जिनकी हम सेवा करते हैं। और जब हम अपने समुदायों को बदलते हैं, तो हम दुनिया भर में, अपने समुदायों में और खुद में स्थायी प्रभाव पैदा करते हैं।''

Rotary.org

आरआईडी मुरुगानंदम बने

रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के उपाध्यक्ष

टीम रोटरी न्यूज़

रोई निदेशक एम मुरुगानंदम को आरआईपीई ओलायिंका बाबालोला और रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के निदेशक मंडल द्वारा 2026-27 के रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के उपाध्यक्ष के रूप में चुना गया है। वे बी टी ठाकुर (1946-47), शापूर बिलीमोरिया (1949-50) और नितीश लाहिरी (1953-54) के बाद यह पद संभालने वाले चौथे भारतीय होंगे।

मुरुगानंदम की रोटरी यात्रा 16 वर्ष की आयु में रोटरेक्ट से शुरू हुई; वे रोटरेक्टर रहते हुए ही रोटरी संस्थान के प्रमुख दानकर्ता बन गए थे। 2016-17 में, रो ई मंडल 3000 के सबसे युवा गवर्नरों में से एक के रूप में, उन्होंने टीआरएफ की शताब्दी के उपलक्ष्य में गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स द्वारा मान्यता प्राप्त रिकॉर्ड तोड़ पहलों का नेतृत्व किया। उन्होंने अपने मंडल में 99 रोटरेक्ट क्लब, 250 इंटरेक्ट क्लब और 100 आरसीसी की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वह रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के व्यावसायिक सेवा नेतृत्व पुरस्कार तथा टीआरएफ के साइटैशन फॉर मेरिटोरीअस सर्विस के प्राप्तकर्ता है।

RIPE ओलायिंका बाबालोला के साथ रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम।

मुरुगानंदम और उनकी पत्नी सुमति, जो दोनों रोटरी क्लब भेल सिटी तिरुचिरापल्ली के सदस्य हैं, एकेएस सदस्य के रूप में टीआरएफ का समर्थन करते हैं। ■

एक परिवार, एक संकल्प

जयश्री

रोटरेक्ट, रोटरी का भविष्य नहीं है। रोटरेक्ट, रोटरी का वर्तमान है, दिल्ली में आयोजित तेजस ज़ोन इंस्टीट्यूट में मंडल रोटरेक्ट नेतृत्वकर्ताओं को संबोधित करते हुए रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो ने कहा। उन्होंने समझाया कि रोटरी एक तेजी से बदलते और गतिशील समाज में कार्य करती है, जो संस्थापक पॉल हैरिस की दुनिया से बहुत अलग है। उन्होंने कहा कि जहाँ रोटेरियन अक्सर बदलाव होने के बाद ही उसे पहचान पाते हैं, वहीं रोटरेक्टर परिवर्तन को जीते हैं, उसे महसूस करते हैं और यह समझते हैं कि क्या बदल रहा है। इसीलिए, रोटरी को प्रासंगिक बने रहने, संचार के नए रूपों और समुदाय की विकसित होती जरूरतों को समझने के लिए रोटरेक्ट की आवश्यकता है। साथ ही, रोटरेक्ट को रोटरी के अनुभव की आवश्यकता है, क्योंकि भविष्य हमारे अतीत से ही निकलता है। इसे मविन-विनफ़रिश्ता बताते हुए, उन्होंने रोटरी और रोटरेक्ट से एक साथ योजना बनाने, समुदायों का अध्ययन करने और परियोजनाओं को क्रियान्वित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा, ''एक साथ हम ताकतवर हैं; अकेले हम जीवित नहीं रह सकते।''

रो ई निदेशक के पी नागेश ने रोटरी की अपनी विविधता को मजबूत करने के साथ-साथ अगली पीढ़ी को शुरुआत से ही संवारने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने उल्लेख किया कि भारत में रोटरी में महिलाओं की सदस्यता वर्तमान में लगभग 17 प्रतिशत है, जिसे 30 प्रतिशत तक पहुँचाने के लिए केंद्रित प्रयास किए जा रहे हैं। यद्यपि रोटरेक्ट और इंटरेक्ट में लैंगिक संतुलन कोई चिंता का विषय नहीं है, फिर भी उन्होंने युवाओं को कम उम्र में ही रोटरी के मूल्यों और दूरदर्शिता से परिचित कराने की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि नेतृत्व और सेवा की निरंतरता सुनिश्चित की जा सके।

रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम ने कहा कि यदि रोटरी के पहिये को आने वाले दशकों तक गतिशील रखना है, तो रोटरेक्ट और इंटरेक्ट को रोटरी की रणनीति के केंद्र में होना चाहिए। उन्होंने जोर देते हुए कहा, ''जब हम एक साथ सपने देखते हैं, एक साथ सोचते हैं और मिलकर काम करते हैं, तो विकास केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि एक निश्चित परिणाम बन जाता है।'' उन्होंने क्लब के अभिनव मॉडलों का आह्वान किया और 1:2:3 दृष्टिकोण का प्रस्ताव रखा, जिसके तहत प्रत्येक रोटेरियन को दो रोटरेक्टरों और तीन इंटरेक्टरों को रोटरी से जोड़ना चाहिए, तथा प्रत्येक रोटरी क्लब को दो रोटरेक्ट और तीन इंटरेक्ट क्लबों को प्रायोजित करना चाहिए।

रोटरेक्टर्स के साथ रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, रो ई निदेशक गण एम मुरुगानंदम और के पी नागेश, रो ई अध्यक्ष के सहयोगी जॉन डी जियोर्जियो और रोटरेक्ट सेशन चेयर PDRR कार्तिक किट्टू।

बाएं से: रो ई निदेशक के पी नागेश, इनर व्हील की राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्योति महिपाल, पूर्व अध्यक्ष प्रीति गुगनानी, रो ई मंडल 3192 की डीआरआर जेनिस फिलिप, रो ई मंडल 3011 की डीआईआर अहाना रॉय और रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम।

दोनों निदेशकों द्वारा संचालित *यूनाइट टू ग्रो* नामक एक पैनल चर्चा में, रोटरी, इनर व्हील, रोटरेक्ट और इंटरेक्ट की सामूहिक शक्ति के लाभों पर प्रकाश डाला गया।

रो ई मंडल 3192 की रोटरेक्ट प्रतिनिधि जेनिस फिलिप ने रोटरेक्ट को रोटरी के प्रभाव के पीछे की गतिशक्ति बताया। उन्होंने कहा, ''रोटरेक्टर अपने साथ गति, चपलता और किसी भी चीज़ को शून्य से शुरू करने की क्षमता लाते हैं।'' डिजिटल युग में पले-बढ़े होने के नाते, रोटरेकटर विभिन्न मंडलों एवं देशों में तालमेल के साथ पहल करने के लिए तकनीक का उपयोग करके रोटरी के कार्यों को व्यापक दृश्यता और विस्तार प्रदान कर सकते हैं। उन्होंने एक साझा वार्षिक सेवा कैलेंडर का प्रस्ताव दिया, जो पोलियो उन्मूलन, स्वास्थ्य, पर्यावरण, सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम और महिला सशक्तिकरण जैसे प्रमुख कारणों पर केंद्रित हो। क्लब स्तर पर एकीकरण पर जोर देते हुए उन्होंने कहा, अब बात 'रोटरी और रोटरेक्ट' की नहीं, बल्कि 'रोटरेक्ट के साथ रोटरी' की होनी चाहिए।

रोटेरियन अक्सर बदलाव को तभी पहचानते हैं जब वह हो चुका होता है। रोटरैक्टर्स बदलाव को जीते हैं, उसे महसूस करते हैं और समझते हैं कि क्या बदल रहा है।

जेनिस ने टी आर एफ के प्रति रोटरेक्ट की बढ़ती प्रतिबद्धता पर भी प्रकाश डाला, जिसमें पोलियो कोष में सामूहिक रूप से योगदान देने की आकांक्षाएं शामिल हैं। उन्होंने रोटेरियनों और इनर व्हील सदस्यों के सहयोग से भारत में रोटरेक्ट के नेतृत्व में आर्च क्लम्फ सोसाइटी के स्तर का योगदान देने की दिशा में काम करने का संकल्प भी व्यक्त किया।

मंडल रो ई 3011 की इंटरेक्ट प्रतिनिधि आहाना रॉय ने साझा किया कि कैसे 12 वर्ष की आयु में इंटरेक्ट से जुड़ने से उनके भीतर सहानुभूति और सामाजिक जागरूकता के भाव जागे। एनजीओ में बुजुर्गों और बच्चों के साथ बिताए समय को याद करते हुए उन्होंने कहा, ''इंटरेक्ट ने मुझे सिखाया कि किसी के साथ बिताए गए महज दो मिनट भी उनके लिए पूरी दुनिया के समान हो सकते हैं।'' उन्होंने बताया कि जहाँ इंट्रक्टर अपने साथ उत्साह और रचनात्मकता लाते हैं, वहीं रोटरेकटर नवाचार और रोटेरियन दूरदर्शिता लाते हैं। उन्होंने उल्लेख किया, रोटरी मिट्टी है, रोटरेक्ट सूर्य का प्रकाश है और इंटरेक्ट वह बीज है जो कल की आशा लेकर आता है। आहाना ने आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को जल्दी विकसित करने के लिए रोटरी की पहलों में इंट्रक्टरों की अधिक भागीदारी और मार्गदर्शन के अवसरों का समर्थन किया।

इनर व्हील की राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्योति महिपाल ने बताया कि कैसे इनर व्हील रोटरी के मिशन को और सशक्त बनाता है। उन्होंने बाल शोषण को संबोधित करने वाली *स्पर्श एक एहसास* जैसे प्रभावशाली परियोजनाओं के साथ-साथ मदर्स मिल्क बैंक और सर्वाइकल कैंसर टीकाकरण जैसी पहलों का उदाहरण दिया। अपनी व्यक्तिगत यात्रा साझा करते हुए उन्होंने कहा कि इनर व्हील ने उन्हें एक शर्मीली गृहिणी से एक आत्मविश्वासी नेतृत्वकर्ता में बदल दिया। उन्होंने याद करते हुए कहा, ''जो मैं पेशेवर रूप से नहीं कर सकी, वह मैंने इनर व्हील के माध्यम से कर दिखाया।'' उनके द्वारा अध्यक्ष रहते हुए शुरू किए गए 'प्रारंभ मोंटेसरी हाउस' और 'ज्ञान ज्योति स्कॉलरशिप' जैसे कार्यक्रम अब उनके इनर व्हील क्लब की स्थायी परियोजना बन चुके हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि इनर व्हील केवल सेवा के बारे में नहीं है, बल्कि यह जीवन भर की दोस्ती, आत्मविश्वास और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने का नाम है।

सत्र के अध्यक्ष पीडीआरआर कार्तिक किट्टू द्वारा संस्थान में तीन प्रमुख सहयोगों की घोषणा की गई, जिसमें सबसे पहले रोटरेक्ट साउथ एशिया मल्टी डिस्ट्रिक्ट इंफॉर्मेशन ऑर्गनाइजेशन और रोटरी एनवायरनमेंट फाउंडेशन के बीच *प्रोजेक्ट इकोजू धन्यवाद* को बढ़ावा देने के लिए साझेदारी हुई, जो गांवों में बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण और पारिस्थितिकी तंत्र निर्माण पर केंद्रित है; दूसरा, हेड हेल्ड हाई फाउंडेशन के साथ मिलकर ग्रामीण समुदायों को एआई साक्षरता से सशक्त बना कर पूरे भारत में 10-20 मॉडल एआई गांव विकसित करने का लक्ष्य रखा गया है; और तीसरी साझेदारी कलीकी फाउंडेशन तथा भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के साथ की गई है, जिसका उद्देश्य कला, संस्कृति और ईको-टूरिज्म के माध्यम से स्थानीय कारीगरों एवं स्व-सहायता समूहों की आजीविका को मजबूत और सशक्त बनाना है। ■

दुनिया में प्यार बाँटिए

वी मुत्तुकुमारन

अब समय आ गया है कि हम आत्मचिंतन करें और रोटरी को अगले स्तर पर ले जाएँ, ताकि इस विघटनकारी और संघर्षों से भरी दुनिया में हम प्रेम के आदर्शों का प्रसार कर सकें और एकजुटता का संदेश फैलाएँ, बेंगलुरु स्थित प्रेस्टिज एस्टेट्स के सीएमडी और एकेएस सदस्य इरफान रज़ाक ने कहा। वह रो ई मंडल 3191 से पहले मिलियन-डॉलर दानकर्ता (₹9 करोड़) हैं। पैसा खर्च करने के कई रास्ते हैं, लेकिन रोटेरियन वे सौभाग्यशाली लोग हैं जो जरूरतमंदों की नि:स्वार्थ सेवा के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और जल जैसे क्षेत्रों में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दे रहे हैं, उन्होंने कहा।

तेजस संस्थान में 'दान की शक्ति' विषयक सत्र को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि एक तरह से ईश्वर रोटेरियनों पर कृपालु रहे हैं क्योंकि उन्हें आपसी संवाद और सौहार्द के साथ-साथ सेवा करने का अवसर मिलता है। टीआरएफ की विशाल विरासत के साथ, दुनिया भर में लगभग आधा मिलियन रोटरी क्लब हर वर्ष आवश्यक कार्यों पर 400 मिलियन डॉलर खर्च करते हैं। हालांकि रोटरी कोई सामाजिक क्लब नहीं है, फिर भी इसके सदस्य प्रत्येक गतिविधि में पूरी भागीदारी और समर्पण के साथ शामिल होते हैं और इसकी कार्यसंस्कृति में सेवा के लिए सामाजिक मेलजोल और विचारों का आदान-प्रदान भी शामिल है।

पिछले कुछ दशकों में रोटरी में उल्लेखनीय परिवर्तन आए हैं। अब क्लब अपनी साप्ताहिक बैठकों में अनिवार्य उपस्थिति पर ज़ोर नहीं देते और यहाँ तक कि वर्गीकरण के मानदंडों में भी ढील दी गई है, जहाँ गुणवत्ता की तुलना में संख्या को प्राथमिकता दी जा रही है। निस्संदेह, रोटरी की सबसे बड़ी उपलब्धि पोलियो उन्मूलन है, जो अब केवल दो देशों तक सीमित है और जल्द ही पूरी तरह समाप्त हो जाएगा। उन्होंने कहा कि देने का आनंद कुछ अलग ही होता है क्योंकि जितना अधिक हम देते हैं उतना ही हमें वापस मिलता है। आज 100 प्रतिशत पीएचएफ क्लबों की संख्या बढ़ती जा रही है, जो एकेएस और प्रमुख दानकर्ताओं होने पर गर्व करते हैं जब आप समाज के लिए अच्छा करते हैं, तो वह किसी न किसी रूप में आपके पास लौटकर आता है।

मृत सागर और मीठे पानी की झील, गलील सागर से जुड़े एक दृष्टांत के माध्यम से रज़ाक ने कहा कि पहले में पानी ठहरा हुआ है क्योंकि वहाँ से बाहर निकलने का कोई मार्ग नहीं है। वहाँ का पानी मृत है, जिसमें न तो समुद्री जीवन है और न ही वनस्पति। इसके विपरीत गलील सागर जीवंत है जहाँ समृद्ध

एकेएस सदस्य इरफान रज़ाक को टीआरएफ ट्रस्टी ऐन-ब्रिट असेबोल द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर (बाएं से) रो ई निदेशक एम मुरुगानंदम, रो ई अध्यक्ष फ्रांसेस्को अरेज़ो, रो ई निदेशक के पी नागेश और पीडीजी शरद जैन उपस्थित थे।

जलजीवन है और पानी निरंतर प्रवाहित होता रहता है (जो आगे मृत सागर में जाकर मिलता है) इन दोनों जलाशयों को जॉर्डन नदी से ही पानी मिलता है। इसी से यह स्पष्ट होता है कि रोटरी की भावना के अनुरूप जीवन केवल देने में ही निहित है।

प्रेम की शक्ति को समझाने के लिए उन्होंने एक दृष्टांत सुनाया। एक गर्म दिन में टहलते हुए एक युवा दंपति ने तीन अजनबियों को देखा, जिनका नाम सफलता, समृद्धि और प्रेम था। वे तीनों उदास अवस्था में एक साथ बैठे थे। दया भाव से पत्नी उनके पास गई और पूछा कि क्या उन्हें किसी सहायता की आवश्यकता है। इस पर तीनों ने एक स्वर में कहा, आप हम में से केवल किसी एक को ही चुन सकते हैं। जब दंपति यह विचार कर रहे थे कि सफलता या समृद्धि में से किसे चुना जाए, तभी उनकी छोटी बेटी ने प्रेम को चुनने की इच्छा जताई। जब उन्होंने प्रेम को चुना, तो बाकी दोनों - सफलता और समृद्धि - भी उनके साथ उनके घर चले आए। रज़ाक ने कहा कि दुनिया में विघटन और नकारात्मकता की शक्तियों पर केवल प्रेम ही विजय पा सकता है और उन्होंने एकजुट व करुणामय विश्व के निर्माण के लिए रोटरी से लोगों में इस मानवीय गुण को विकसित करने का आह्वान किया।

डेल्हीवरी के संस्थापक-सीईओ साहिल बारू को रो ई अध्यक्ष अरेज़ो द्वारा रोटरी पिन प्रदान किया गया, जबकि रो ई निदेशक गण मुरुगनांदन और नागेश भी चित्र में शामिल हैं।

लॉजिस्टिक्स और सप्लाई चेन क्षेत्र की स्टार्टअप कंपनी डेल्हीवरी के संस्थापक-सीईओ साहिल बरुआ ने 'उद्देश्यपूर्ण नवाचार के माध्यम से परिवर्तन' विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि यदि भारत को एक बड़ी छलांग के साथ अपनी आर्थिक वृद्धि को तेज़ करना है, तो कुछ बुनियादी आधारों को मजबूत करना होगा। सबसे पहले, हमें वित्तीय सेवाओं तक अच्छी पहुँच सुनिश्चित करनी होगी, इसके साथ एक आधुनिक लॉजिस्टिक्स क्षेत्र, फिर एक शिक्षित कार्यबल और ऐसे स्वस्थ लोग चाहिए जो मिलकर सपने देखने का साहस रखते हों।

उन्होंने कोविड के चरम दौर में भारतीय नौकरशाही से अपने पहले प्रत्यक्ष अनुभव को याद किया, जब उन्हें रोटरी क्लब हैदराबाद के एक रोटेरियन से एक ई-मेल प्राप्त हुआ। क्लब को तत्काल ऑक्सीजन कंसंट्रेटरों की आवश्यकता थी और नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने चीन से इन सिलेंडरों से भरा एक विमान उड़ाकर लाने के हमारे अनुरोध को मंज़ूरी दे दी तीन महीनों के भीतर हमने 46 विमानों के माध्यम से 85,000 कंसंट्रेटर मरीजों के उपचार के लिए भारत पहुँचाए। उन्होंने बताया कि उन्हें 'डिलीवरी डायनेमिक्स' की समझ 15 वर्ष पहले तब मिली, जब उन्होंने अपने चार साझेदारों के साथ मिलकर कंपनी की स्थापना की थी। अधिकांश गोदाम शहर के बाहरी इलाकों में होते थे, जहाँ पहुँचना कठिन था, रोशनी कम थी और दक्षता तथा पेशेवर व्यवहार का अभाव था। हमारे लॉजिस्टिक्स ढाँचे - माल और सामान ढोने वाले ट्रक तथा गोदाम - की हालत भी बेहद खराब थी, जो अमेरिका और यूरोपीय बाज़ारों में फेडेक्स, यूपीएस या डीएचएल के स्वामित्व वाले गोदामों से बिल्कुल अलग थी।

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भारत में अपने परिचालन स्थापित करने में हिचकिचाती थीं क्योंकि उन्हें यहाँ अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता था - ज़मीन खरीदना एक जटिल प्रक्रिया थी, निर्माण में समय लगता था, श्रमिक संबंधी समस्याएँ थीं और सबसे बढ़कर लगभग 30 अलग-अलग भाषाएँ होने के कारण संवाद करना कठिन था और श्रमिकों का शिक्षा स्तर भी काफ़ी कम था। बरुआ को आपूर्ति-श्रृंखला तंत्र और गोदामों का निर्माण नए सिरे से करना पड़ा। हमने 1,000 इंजीनियरों को नियुक्त किया, स्वीडन की वोल्वो कंपनी के साथ अपने कार्गो ट्रकों के नए डिज़ाइन के लिए समझौता किया और देश भर में गोदामों का निर्माण किया। इससे भी बड़ी चुनौती कार्यबल में 'श्रम की गरिमा' का भाव पैदा करना थी ताकि ट्रक चालक और अन्य कर्मचारी अपने कार्य पर गर्व महसूस कर सकें, उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा।

औसतन, उनकी डेल्हीवरी अकादमी हर वर्ष एक लाख कर्मियों को प्रशिक्षित करती है और उनकी कार्गो परिवहन सेवाओं के सुचारु संचालन के लिए विभिन्न क्षेत्रों में स्थित 50,000 साझेदारों के साथ समन्वय स्थापित करती है। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

एक फ़िलिपिनो माँ की ओर से धन्यवाद पत्र

टीम रोटरी न्यूज़

बेंगलुरु में कार्डियक सर्जरी के बाद एवियानालिन जेड।

रोटरी मंडल 3191 और 3192 के रोटरी क्लब बेंगलुरु स्थित रोटरी नीडी हार्ट फ़ाउंडेशन और नीडी हार्ट फ़ाउंडेशन के माध्यम से हृदय रोग से पीड़ित आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों और वयस्कों की हृदय सर्जरी में सहयोग कर रहे हैं। इन दोनों संस्थाओं की स्थापना रोटरी क्लब बेंगलुरु इंदिरा नगर के पूर्व अध्यक्ष ओ पी खन्ना ने की थी। ये सर्जरियाँ बेंगलुरु के तीन निर्धारित अस्पतालों – जयदेव अस्पताल (सरकारी अस्पताल), मणिपाल अस्पताल और नारायण हृदयालय – में की जाती हैं। विभिन्न देशों से जन्मजात हृदय रोग से पीड़ित बच्चों को भी आरएनएचएफ और एनएचएफ द्वारा सहायता दी जाती है।

बेंगलुरु में इस विशाल रोटरी परियोजना की नवीनतम लाभार्थी मनीला, फ़िलिपींस, की दो वर्षीय एविएनालिन जेड हैं। उन्हें पीडीजी कल्पना खौंड द्वारा पीडीजी राजेंद्र राय (आरएनएचएफ के प्रबंध न्यासी) के पास भेजा गया था। एविएनालिन की हृदय सर्जरी का प्रायोजन रोटरी क्लब बेंगलुरु मिडटाउन के सदस्य बिमल देसाई ने किया। उन्होंने और उनकी पत्नी वीणा ने अब तक इथियोपिया, घाना और फ़िलिपींस के 20 बच्चों के इलाज का प्रायोजन ₹30 लाख की लागत से किया है। हाल ही में आरएनएचएफ द्वारा आयोजित एक धन संचयन में, उन्होंने अफ़्रीकी महाद्वीप के 20 और बच्चों की सहायता का वादा किया है, जबकि एक गुमनाम विदेशी दानदाता ने अपने देश के रोटरी क्लब के माध्यम से बाल हृदय सर्जरियों के लिए ₹25 लाख का योगदान देने की प्रतिबद्धता जताई है।

यहाँ एविएनालिन की माँ एवेंजेलिन अमोरोसो का संदेश है:

मेरी बेटी एविएनालिन पर आपने जो दया और करुणा दिखाई, उसके लिए मैं आपका दिल से धन्यवाद करती हूँ। जब मुझे पता चला कि हम भारत जा रहे हैं और वहाँ उसकी सर्जरी होगी, तो मैं सोच रही थी कि क्या मैं यह सब अकेले संभाल पाऊँगी। लेकिन रोटेरियनों की अद्भुत मेहमाननवाज़ी और देखभाल के कारण हम पूरी तरह सुरक्षित और सहज महसूस करते रहे।

एविएनालिन का जन्म 23 मई 2023 को हुआ था। जब वह अस्पताल में सिर्फ़ दो दिन की थी, तब उसे अचानक बुखार आ गया। उसके खून की जाँच की गई और डॉक्टर ने बताया कि उसे सेप्सिस है। उस समय मैं सिर्फ़ 18 साल की थी और समझ नहीं पा रही थी कि क्या करूँ। डॉक्टर ने कहा कि उसे सात दिनों तक इलाज की ज़रूरत है, लेकिन मैंने यह सलाह मानने से इनकार कर दिया और अस्पताल छोड़ दिया। जन्म के बाद पहले एक साल तक, एविएनालिन स्वस्थ रही। उसे शायद ही कभी बीमारी हुई, सिर्फ़ कभी-कभी खाँसी या जुकाम। अगर बुखार होता भी था, तो दो-तीन दिन में ठीक हो जाता था।

लेकिन वह दिन भी आ गया, जिसका मुझे डर था। कई लोगों ने देखा कि उसका वज़न धीरे-धीरे कम हो रहा है। जब वह 14 महीने की हुई, तो मेरी बहन ने यह भी देखा कि उसके होंठ और नाखून हल्के नीले पड़ रहे हैं। हमने तुरंत एक बाल हृदय रोग विशेषज्ञ से सलाह ली, जिन्होंने पुष्टि की कि उसे सीएचडी है। शायद अगर मैंने शुरुआत में ही उसके सेप्सिस का इलाज करवाया होता, तो हमें पहले ही उसके दिल की समस्या के बारे में पता चल जाता। लेकिन भगवान की अपनी योजना थी।

एवियानालिन और उनकी मां एवेंजेलिन अमोरोसो बेंगलुरु के जयदेवा हॉस्पिटल के डॉक्टरों के साथ।

एविएनालिन और मैं फ़िलिपीन हार्ट सेंटर में 2डी इको टेस्ट के लिए लाइन में खड़े थे। वहाँ मेरी मुलाक़ात एक माँ से हुई जिनका बेटा ऑटिज़्म से पीड़ित था। बातचीत के दौरान एक डॉक्टर उनसे मिलने आए। उन्होंने मुझे बताया कि वे डॉ निश्छल पांडे हैं, जो उनके बेटे के प्रायोजक हैं और उन्हें भारत ले जाने में मदद कर रहे हैं, जहाँ उनके बेटे की ओपन हार्ट सर्जरी होनी थी। डॉ पांडे रोटरी ई-क्लब कनेक्ट (रो ई मंडल 3012) के अध्यक्ष हैं और उन्होंने फ़िलिपीन हार्ट सेंटर में कई बच्चों की हृदय सर्जरी प्रायोजित की है।

मैंने उस महिला को उनके बेटे के शीघ्र स्वस्थ होने की शुभकामनाएँ दीं और अपनी बारी का इंतज़ार करने लगी। तभी उन्होंने अचानक मुझे डॉ. पांडे से मिलवाया। जब मैंने उन्हें अपनी बेटी की हृदय समस्या के बारे में बताया, तो उन्होंने कहा, ''चिंता मत कीजिए। मैं आपकी बेटी का ध्यान रखूँगा। मैं पूरी कोशिश करूँगा कि उसकी सर्जरी भारत में हो सके।'' यह कहते हुए उन्होंने एविएनालिन को एक हेयर बैंड और हेयर पिन भी दिया।

जब एवियानालिन 14 महीने की थी, तो मेरी बहन ने देखा कि उसके होंठ और नाखून हल्के नीले पड़ गए हैं। हमने तुरंत एक पीडियाट्रिक कार्डियोलॉजिस्ट से सलाह ली, जिन्होंने कन्फर्म किया कि उसे CHD है।

मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह दिन एविएनालिन की ज़िंदगी बदल देगा। मुझे लगा था कि यह सिर्फ़ एक सामान्य जाँच का दिन है। ऐसा लगता है कि हमारा डॉ पांडे से मिलना तय ही था। मैं भगवान का धन्यवाद करती हूँ कि उन्होंने एविएनालिन के लिए यह योजना बनाई। अब वह धीरे-धीरे स्वस्थ हो रही है और उस नए जीवन का आनंद लेने के लिए मज़बूत बन रही है जो आप सभी ने उसे दिया है।

मैं रोटरी नीडी हार्ट फ़ाउंडेशन के पीडीजी राजेंद्र राय की आभारी हूँ, जिन्होंने जयदेव अस्पताल में सर्जरी और बेंगलुरु में सर्जरी के बाद ठहरने की व्यवस्था की। इसके अलावा मैं हृदय सर्जन डॉ सुनील और उनकी टीम की; रोटरी क्लब बेंगलुरु मिडटाउन के रोटेरियन बिमल देसाई की, जिन्होंने सर्जरी का ख़र्च उठाया; डॉ पांडे की, जिन्होंने हमारे रहने की व्यवस्था की; और फ़िलिपींस के एक रोटरी क्लब के सदस्य राजीव श्रीवास्तव की भी आभारी हूँ, जिन्होंने सर्जरी के बाद थोड़े समय के लिए बेंगलुरु में अपना अपार्टमेंट हमें रहने के लिए दिया।

मैं असम की पीडीजी कल्पना खौंड का भी धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने डॉ पांडे का परिचय पीडीजी राय से करवाया ताकि यह सर्जरी बेंगलुरु में हो सके। साथ ही मैं राजेश शाह (अध्यक्ष, रोटरी बेंगलुरु मिडटाउन), पूर्व अध्यक्ष अतुल कौशिक, रोटरी बेंगलुरु वेस्ट के अध्यक्ष योगेश पचिसिया, मिशन चाय के राकेश नैयर और रोटरी कलब बेंगलुरु इंदिरा नगर के डॉ श्रीकांत का भी आभार व्यक्त करती हूँ।

मैं फ़िलिपींस में भारत के राजदूत हर्ष जैन और भारत में फ़िलिपींस के राजदूत जोसेल एफ इग्नासियो; मनीला में हमारे भारतीय समुदाय के लोगों - कमल अभिचंदानी, विजय गुरुङ, विशाल हाथी रमानी और सोनी - का भी धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने बेंगलुरु के लिए हमारे हवाई टिकट का प्रबंध किया। साथ ही, मनीला स्थित फ़िलिपिनो इंडियन कॉमर्स एंड वेलफ़ेयर सोसाइटी के अध्यक्ष जेम्स कुमार को भी मेरा बहुत-बहुत आभार।

आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद। ■

आपके गवर्नर्स से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

रिटेंशन और ब्रांडिंग पर विशेष ध्यान

अवरोधन हमारी प्राथमिकता है और हम इसे तीन ध्यान केंद्रित पहलों के माध्यम से संबोधित कर रहे हैं,'' डॉ मनीष मोटवानी कहते हैं। इनमें से एक पहल है रोटरी वेरिफ़ाइड बिज़नेस, जिसके अंतर्गत 330 कॉर्पोरेट्स, लघु व्यवसायों और व्यापारियों को प्रमाणन प्रदान किया जाता है ताकि ''आपसी प्रचार और बाज़ार में उनकी पहचान को बढ़ावा मिल सके।'' इस वर्ष 2,500 संस्थाओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाएंगे।

दूसरी पहल, रोटरी इंटर्नशिप एम्प्लॉयमेंट प्रोग्राम (RIEP) के अंतर्गत ऐनेट्स और रोटरेक्टरों को 3 से 6 महीनों का प्रशिक्षण दिया जाता है, जिसके बाद उन्हें रोटेरियनों के स्वामित्व वाले उद्यमों में नियुक्त किया जाता है। ''वर्तमान में 80 इंटर्न प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं और यह संख्या शीघ्र ही बढ़कर 500 तक पहुँचने वाली है।'' तीसरी पहल के रूप में सभी क्लबों में मासिक फायरसाइड मीटिंग्स आयोजित की जा रही हैं जिनका उद्देश्य सदस्यों के बीच आपसी जुड़ाव और आत्मीयता को और मजबूत करना है।

''121 क्लबों में फैले 6,800 सदस्यों के साथ वह 15 प्रतिशत शुद्ध सदस्यता वृद्धि का लक्ष्य लेकर चल रहे हैं।'' वैश्विक अनुदानों और सीएसआर निधीयन के संयोजन से अनेक महत्वाकांक्षी परियोजनाओं का शुभारंभ किया जाएगा जिनमें शामिल हैं - ₹18 करोड़ की लागत से रोटरी हार्ट एवं मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल, देवनार; ₹5.6 करोड़ की लागत से रोटरी आई हॉस्पिटल, मुलुंड; और ₹4.7 करोड़ की लागत से केएचएम हॉस्पिटल, कांदिवली में रोटरी हार्ट हॉस्पिटल। इसके अतिरिक्त पालघर के 25 गाँवों को मॉडल हैबिटैट के रूप में विकसित किया जाएगा (₹20 करोड़; सीएसआर + वैश्विक अनुदान) तथा 40 रो ई डिस्पेंसरी भी स्थापित की जाएँगी।

मोटवानी को 7.5 मिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक के टीआरएफ योगदान को पार करने का पूरा विश्वास है।

वह 2001 में अपने पिता रोटेरियन रमेश मोटवानी और पीआरआईडी अशोक महाजन से प्रेरित होकर रोटरी से जुड़े।

मनीष मोटवानी
बैरियाट्रिक सर्जन, रोटरी क्लब मुलुंड हिल व्यू, रो ई मंडल 3141

मनोज के त्रिपाठी
बिल्डर, रोटरी क्लब श्री जगन्नाथ धाम, रो ई मंडल 3262

अभूतपूर्व चिकित्सा परियोजनाएँ

ओड़िशा के दूरदराज के इलाकों में रोटरी की सार्वजनिक छवि को अनेक चिकित्सा परियोजनाओं ने नई ऊँचाई दी है। ''हमने वैश्विक अनुदान परियोजनाओं की योजना बनाई है जो ग्रामीणों को स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करेंगी। जबकि पुरी में एक डायग्नोस्टिक सेंटर (वैश्विक अनुदान: 56,000 डॉलर) बनाया जा रहा है, रोटरी क्लब बारबिल ने केओंझर जिले में रोटरी नेत्र अस्पताल (वैश्विक अनुदान: 90,000 डॉलर) स्थापित किया। एक और नेत्र अस्पताल (वैश्विक अनुदान: 66,000 डॉलर) का उद्घाटन बालासोर जिले के जलेश्वर में किया जाएगा और रोटरी क्लब भुवनेश्वर मेट्रो रीढ़ की हड्डी की चोटों के इलाज के लिए एक धर्मार्थ अस्पताल, पिपिली हेल्थ सेंटर को उच्च तकनीकी उपकरण (वैश्विक अनुदान: 44,000 डॉलर) दान करेगा, त्रिपाठी बताते है।''

125 क्लबों में 4,600 से अधिक सदस्यों के साथ उन्होंने अब तक 422 नए सदस्यों को शामिल किया है और अगले चरण में 78 और सदस्य रोटरी से जुड़ेंगे। लक्षित 10 नए क्लबों में से चार पहले ही अधिकृत किए जा चुके हैं। उन्होंने मंडल के रोटेरियनों को अपोलो और उत्कल हेल्थ कार्ड भी वितरित किए जिनकी मदद से वे नियमित चिकित्सा जाँच करवा सकेंगे।

एक महाकाय मंडल-व्यापी वितरण अभियान के तहत 1,000 से अधिक महिलाओं को वेट ग्राइंडर, ट्राइसाइकिल, व्हीलचेयर, हियरिंग एड और कृत्रिम अंग प्रदान किए गए। नयागढ़, गंजाम, गजपति और बेरहामपुर जिलों में आयोजित शिविरों में 1,250 लाभार्थियों को कृत्रिम अंग, हियरिंग एड, सफेद छड़ी और व्हीलचेयर वितरित किए गए। उनका टीआरएफ योगदान लक्ष्य 500,000 डॉलर का है। वह 2002 में क्लब सदस्य और जनरल सर्जन दीपांकर दास गुप्ता से प्रेरित होकर रोटरी से जुड़े।

सदस्यों की गुणवत्ता में निवेश

केरल के वायनाड जिले के मनंथवाड़ी में सेंट जोसेफ मिशन हॉस्पिटल में ₹70 लाख की एक वैश्विक अनुदान परियोजना के अंतर्गत नौ मशीनों वाला एक डायलिसिस केंद्र स्थापित किया जाएगा। ''यह डायलिसिस केंद्र वंचितों को नि:शुल्क सत्र प्रदान करेगा जबकि बाकी लोगों को रियायती दरों पर सेवा दी जाएगी,'' बिजोश मैनुअल ने कहा। रोटरी क्लब कालपेट्टा एक रक्त संग्रह वैन का उद्घाटन करेंगे (वैश्विक अनुदान: ₹40 लाख)।

91 क्लबों के 3,200 रोटेरियनों के साथ मैनुअल अपने कार्यकाल की अवधि में कम से कम 800 नए सदस्यों को शामिल करने के साथ ही 18-20 नए क्लबों की स्थापना करना चाहते हैं। ''मैंने क्लबों से कहा है कि वे नए सदस्यों को शामिल करने से पहले उनकी सच्चाई और योग्यता की जांच करें। हम सिर्फ संख्या बढ़ाने के लिए सदस्य नहीं जोड़ना चाहते,'' उन्होंने समझाया। 40,000 डॉलर की लागत वाली करीब 3-4 वैश्विक अनुदान परियोजनाएँ योजनाबद्ध है क्योंकि क्लब आमतौर पर साल के आखिरी छह महीनों में अपनी सेवा गतिविधियाँ तेज़ कर देते हैं।

मैनुअल चाहते हैं कि रोटारेक्टरों की संख्या दोगुनी करके 500 सदस्यों तक पहुँचाई जाए, जिसके लिए 30 जून तक 20 नए रोटरेक्ट क्लब गठित किए जाएँगे। ''इस साल से हम रोटरेक्ट को नई ऊर्जा दे रहे हैं, जिसे इसके आधार का विस्तार करके और मजबूत किया जाएगा।'' उनका टीआरएफ योगदान का लक्ष्य 360,000 डॉलर है।

वह 2008 में रोटरी से जुड़े क्योंकि ''मैं ऐसे लोगों के साथ संपर्क बनाना चाहता था जिनके विचार मेरे जैसे हों और उनके साहचर्य का आनंद लेना चाहता था,'' वह मुस्कुराते हुए कहते हैं।

बिजोश मैनुअल
परफ्यूमरी, रोटरी क्लब कबानी वैली-मनंथवाड़ी, रो ई मंडल 3204

GGs के ज़रिए 100,000 के मेडिकल इक्विपमेंट प्रोजेक्ट प्लानिंग स्टेज में हैं, और क्लबों को अभी अपने लाभार्थी अस्पतालों के बारे में फैसला करना है।

डीजी राजन विद्यार्थी
रो ई मंडल 3110

राजन विद्यार्थी
चार्टर्ड अकाउंटेंट, रोटरी क्लब बरेली
रो ई मंडल 3110

नेत्र देखभाल के लिए वैश्विक अनुदान परियोजनाएं

एक रोटरेक्टर रह चुके राजन विद्यार्थी कहते हैं कि उन्हें जरूरतमंदों तक पहुँचने के कार्य से प्रेरणा मिलती है, वह याद करते हैं।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के कुछ हिस्सों में 144 क्लबों के 3,760 सदस्यों के साथ वह 4,000 सदस्यों का आंकड़ा पार करने के साथ ही 6 अन्य क्लबों की स्थापना करना चाहते हैं। अब तक वह 9 नए क्लब गठित कर चुके हैं। नेत्र सर्जरी उपकरण (वैश्विक अनुदान: 32,000 डॉलर) को अलीगढ़ के सरकारी अस्पताल में दान किया गया; ''साथ ही 1,00,000 डॉलर की लागत से वैश्विक अनुदान के अंतर्गत 2-3 चिकित्सा उपकरण परियोजनाएं चरणबद्ध हैं और क्लबों को अभी उनके लाभार्थी अस्पतालों का चयन करना है।'' *प्रोजेक्ट शिक्षा उदय* के अंतर्गत सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों को 25,000 स्कूल बैग वितरित किए गए; वहीं *प्रोजेक्ट ज्योति उदय* ने अब तक 60 नेत्र जांच शिविर आयोजित किए हैं जिससे लगभग एक लाख छात्रों को लाभ मिला। आने वाले समय में ग्रामीण और शहरी स्कूलों में लगभग 40 और नेत्र जांच शिविर आयोजित किए जाएंगे।

समान अवसर को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रोटरी कल अग्र रॉयल द्वारा आयोजित विशेष बच्चों की खेल प्रतियोगिता में 250 प्रतिभागियों ने अपनी एथलेटिक क्षमताएँ दिखाई। लगभग 100 लड़कियों को निजी क्लीनिकों में आयोजित विशेष शिविरों में सर्वाइकल कैंसर से बचाव के लिए एचपीवी टीकाकरण दिया गया और ''हम जून के अंत तक 500 और लड़कियों तक पहुँचेंगे,'' विद्यार्थी कहते हैं। उनका टीआरएफ योगदान का लक्ष्य 500,000 डॉलर है। वह 1999 से रोटेरियन हैं। वह आगे कहते हैं, ''मुझे रोटरी के दो स्तंभ, साहचर्य और सेवा बहुत आकर्षित करते हैं।''■

ऊष्मा और आशा

किरण ज़ेहरा

रोटरेक्ट क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन, रो ई मंडल 3080, के सदस्य अपनी क्रिसमस उत्सव की पहल के तहत खिलौनों से भरे बैग लेकर पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़, के एडवांस्ड पीडियाट्रिक सेंटर पहुँचे। क्लब अध्यक्ष दिलरीत कौर कहती हैं, हम हर बिस्तर के पास रुके और इलाज करा रहे बच्चों को छोटे-छोटे उपहार दिए। बच्चे उठकर बैठ गए, देखभाल करने वालों - खासतौर पर माताओं - ने राहत की साँस ली, और कमरे में फैली चिंता कुछ पलों के लिए कम हो गई।

खुशियों-का-पिटारा नामक इस परियोजना के तहत लगभग 300 खिलौने वितरित किए गए। यहाँ आने वाले अधिकांश बच्चे वंचित पृष्ठभूमि से हैं, जबकि कुछ लंबे समय से अस्पताल में भर्ती हैं। हम उनके लिए थोड़ा मनोरंजन करना चाहते थे और उन्हें कुछ खुशनुमा पल देना चाहते थे। बच्चों ने अपने उपहार तुरंत खोले और वे खिलौने देखकर बेहद खुश हो गए। सभी खिलौने उम्र-वर्ग का ख्याल रखकर चुने गए एवं सुरक्षित थे। डॉ प्रवीण कुमार, विभागाध्यक्ष, बाल रोग, पीजीआईएमईआर ने इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा, दयालुता के छोटे-छोटे प्रयास कठिन चिकित्सीय यात्राओं के दौरान बच्चों का मनोबल बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

एक अन्य पहल *सरदी की वर्दी* के तहत, क्लब ने इनर व्हील क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन और 'शिक्षा सब के लिए' संगठन के सहयोग से पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़, में 350 से अधिक परिवारों को पहले से उपयोग किए गए ऊनी कपड़ों के 100 कार्टन वितरित किए। इसमें इनर व्हील क्लब द्वारा प्रदान किए गए ₹60,000 मूल्य के नए शीतकालीन वस्त्र भी शामिल

रोटरेक्टर्स ज़रूरतमंदों को गर्म कपड़े बांटते हुए।

ग्रैंड एलुमनाई मीट में रोटरेक्ट क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन के 13 पूर्व अध्यक्ष।

थे। इस पहल से उन मरीज के परिवारजनों - जो प्रायः आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग से हैं - को सहायता मिली जो अस्पताल के आसपास बाहर रहते हुए कड़ाके की सर्दी का सामना करते हैं। वितरण में गवर्नमेंट गर्ल्स मॉडल स्कूल, चंडीगढ़, की एनएसएस इकाई ने सहयोग किया।

एलुमनी मीट

ग्रैंड एलुमनी मीट में 1984 से 2025 बैच तक के क्लब के रोटरेक्ट सदस्य एकत्र हुए, जिनमें 1983 के संस्थापक बैच के सदस्य और पिछले दो दशकों के 13 पूर्व अध्यक्ष भी शामिल थे। दिलरीत कहती हैं, यह क्लब हमेशा व्यक्तिगत कार्यकाल या पदों से बड़ा रहा है। इस पुनर्मिलन ने दिखाया कि दशकों पहले मिले मूल्य आज भी जीवित हैं और हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं।

यह सिर्फ़ हमारे अतीत का जश्न नहीं था। यह एक याद दिलाना था कि सेवा तभी सबसे ज़्यादा सार्थक होती है जब वह वर्तमान की ज़रूरतों को पूरा करती है।

अमन गर्ग
इवेंट चेयर

यह उद्देश्यपूर्ण आत्ममंथन की एक शाम थी, जिसमें पुरानी परियोजनाओं, नेतृत्व की चुनौतियों, प्रस्तुतियों और भावपूर्ण संबोधनों पर चर्चा हुई। इस मिलन में मौके पर ही ₹30,000 एकत्र किए गए, और पूरी राशि बाढ़ राहत के लिए समर्पित की गई।

कार्यक्रम अध्यक्ष अमन गर्ग कहते हैं, यह केवल हमारे अतीत का उत्सव नहीं था, बल्कि यह याद दिलाने वाला अवसर था कि सेवा तब सबसे सार्थक होती है जब वह वर्तमान की आवश्यकताओं का उत्तर देती है।

वर्तमान सदस्यों द्वारा आयोजित इस, एलुमनी मीट ने क्लब की विरासत को सम्मानित करने के साथ-साथ एक तात्कालिक आवश्यकता का भी समाधान किया, यह दिखाते हुए कि सेवा के माध्यम से बने रिश्ते औपचारिक सदस्यता समाप्त होने के बाद भी कायम रखते हैं, वह मुस्कुराते है। ■

क्लब के सदस्यों द्वारा दिए गए तोहफ़ों के साथ बच्चे।

Membership & TRF contribution summary

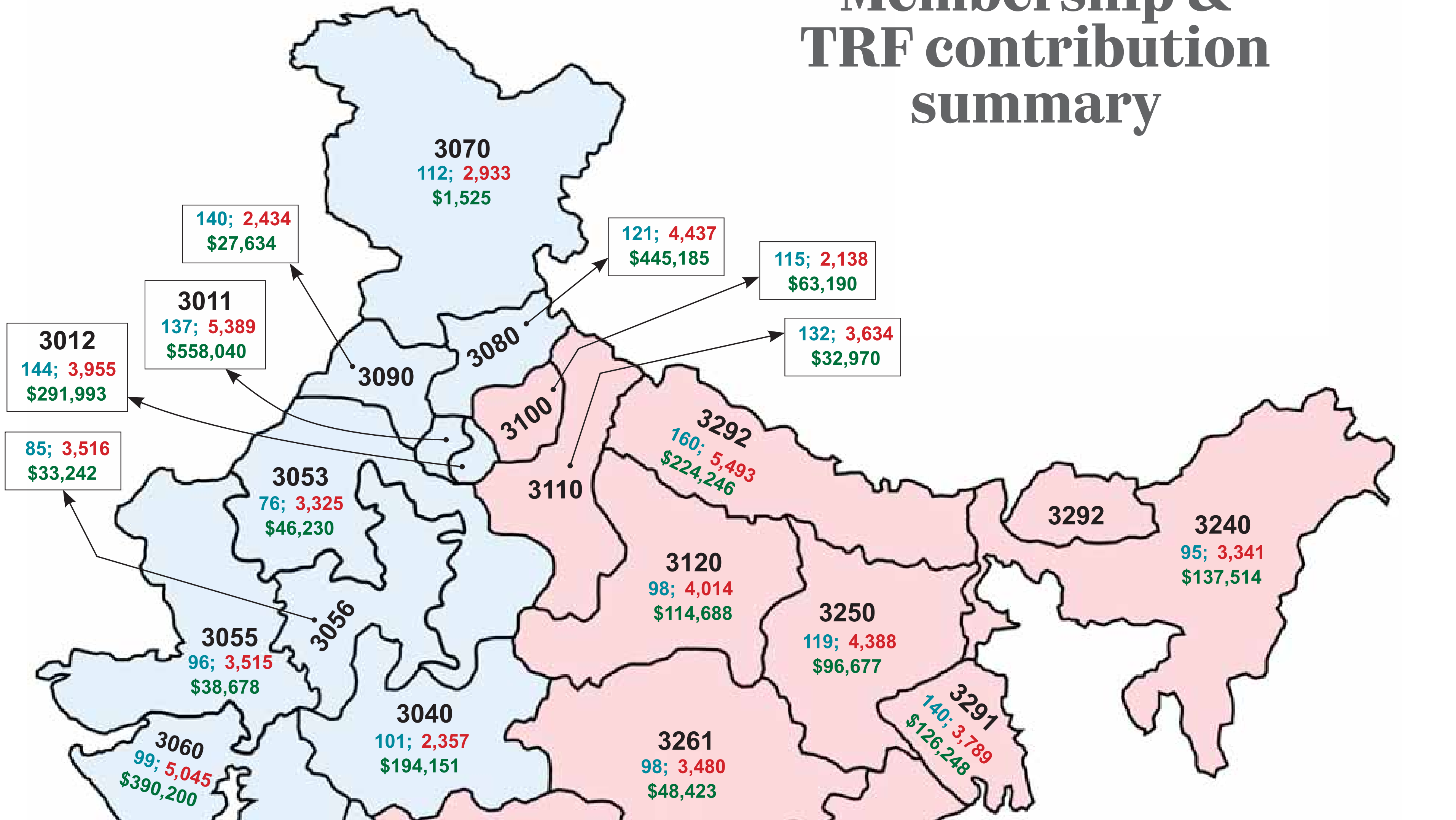

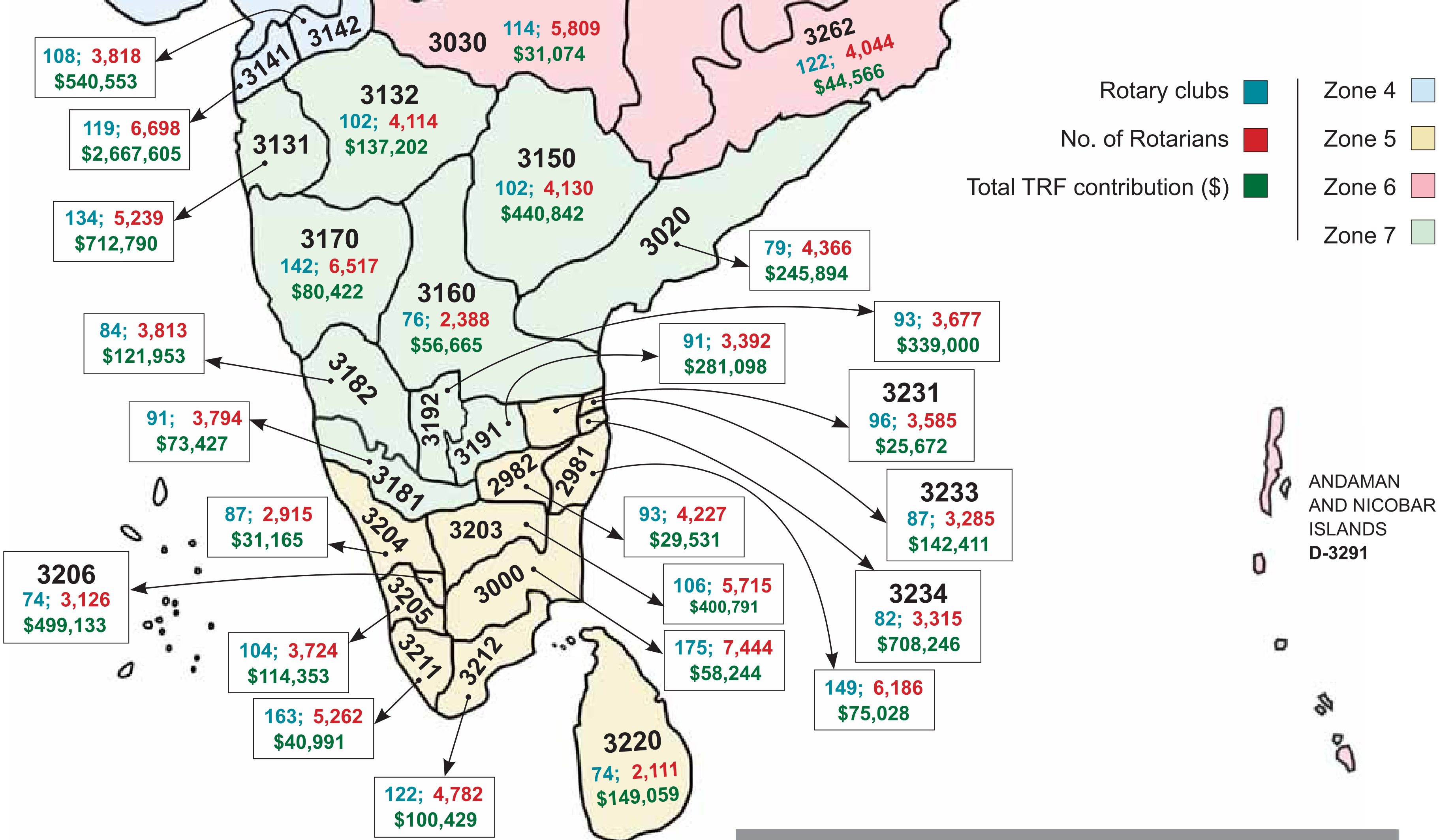

*Membership figures as on January 6, 2026.
*TRF contribution figures as on December 31, 2025.

Rotary worldwide

Rotary clubs	36,389	Rotary members	1,151,491
Rotaract clubs	9,323	Rotaract members	142,591
Interact clubs	18,936	Interact members	435,666
RCCs	14,298		

As on January 23, 2026

स्वच्छ वायुः हमारी साझा ज़िम्मेदारी

प्रीति मेहरा

नागरिक अपनी भूमिका निभाएंगे तभी हम बेहतर एक्यूआई स्तर सुनिश्चित कर सकते हैं

दीपावली बीते महीनों हो चुके हैं, फिर भी देश के कई शहर भीषण वायु प्रदूषण की चपेट में हैं। इसका क्या अर्थ है? यही कि वायु प्रदूषण कोई ऐसा त्योहार से जुड़ा अस्थायी मामला नहीं है जिसे लोग नज़रअंदाज़ कर दें। न ही इसके लिए केवल उन किसानों को दोषी ठहराया जा सकता है जो नई फसल काटने के बाद पराली जलाते हैं। वास्तव में, दिल्ली और अन्य उत्तर भारतीय राज्यों ने पिछले दिसंबर में वायु प्रदूषण का सबसे बुरा दौर देखा, जबकि उस समय किसान स्पष्ट रूप से इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं थे।

राजधानी के आम नागरिकों को यह समझने में देर नहीं लगी कि वायु प्रदूषण कई सिरों वाला एक ऐसा दानव है जिसके लिए कई कारण ज़िम्मेदार हैं। इनमें वाहनों का प्रदूषण, निर्माण कार्य, औद्योगिक उत्सर्जन, कूड़ा जलाना और भौगोलिक एवं मौसम संबंधी कारक शामिल हैं। पराली जलाना और दीपावली के पटाखे हवा को ज़रूर खराब करते हैं, लेकिन केवल उन्हें ही इसके लिए पूरी तरह उत्तरदायी नहीं माना जा सकता।

एक बात अब और भी स्पष्ट होती जा रही है कि वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) न केवल दिल्ली जैसे शहरों में, बल्कि पूरे उपमहाद्वीप में चिंता का विषय है। पिछले साल मुंबई धुंध की चादर में लिपटा रहा, जिससे वहां के नागरिकों को भी अपने शहर के एक्यूआई पर नज़र रखने के लिए मजबूर होना पड़ा। चेन्नई में भी, दिसंबर-जनवरी के दौरान प्रदूषण अस्वास्थ्यकर स्तर तक पहुँच गया, जबकि लखनऊ या कानपुर की तुलना में वहां की हवा अपेक्षाकृत साफ़ रहती है।

तो, वास्तव में एक्यूआई क्या है और यह हमें कैसे प्रभावित करता है? सरल शब्दों में कहें तो, यह स्वास्थ्य और प्रदूषण निगरानी एजेंसियों द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक आंकड़ा है जो यह दर्शाता है कि किसी विशेष क्षेत्र या शहर के हिस्से में हवा कितनी प्रदूषित है। यह आंकड़ा जितना अधिक होगा, हवा उतनी ही विषैली होगी और इसके साथ स्वास्थ्य संबंधी जोखिम भी उतने ही बढ़ जाएंगे। दिन के अलग-अलग समय पर जारी किए जाने वाले इन आंकड़ों को वायुमंडलीय प्रदूषण की सीमा और गंभीरता दर्शाने के लिए अलग-अलग रंगों में वर्गीकृत किया जाता है।

इस प्रकार, 0-50 तक के एक्यूआई स्तर को हरा कोड दिया गया है, जो दर्शाता है कि वायु की गुणवत्ता अच्छी है; 51 से 100 को पीला चिह्नित किया गया है जिसका अर्थ हवा की ममध्यमम गुणवत्ता है; 101 से 150 नारंगी रंग में है और यह हवा संवेदनशील समूहों के लिए अस्वास्थ्यकर है; 151 से 200 अस्वास्थ्यकर है और इसे लाल रंग से दर्शाया गया है; 201 से 300 को अत्यधिक अस्वास्थ्यकर मानकर बैंगनी रंग दिया गया है और 300 से ऊपर कुछ भी खतरनाक होता है जिसे मैरून रंग से चिह्नित किया गया है।

एक्यूआई की गणना करते समय निम्नलिखित मानकों पर विचार किया जाता है: पर्टिकुलेट मैटर (पीएम 2.5: सांस के जरिए शरीर में जाने वाले सूक्ष्म कण जो 2.5 माइक्रोमीटर या उससे कम होते हैं,

और झच् 10: जो 10 माइक्रोमीटर या उससे कम होते हैं), नाइट्रोजन डाइऑक्साइड (एनओ2), सल्फर डाइऑक्साइड (एसओ2), कार्बन मोनोऑक्साइड (सीओ), ओज़ोन (ओ3), अमोनिया (एनएच3) और लेड या सीसा (पीबी)।

पिछले साल देशभर से मिले आंकड़ों ने एक चिंताजनक पूर्वानुमान दिया है कि यदि सुधारात्मक कदम नहीं उठाए गए, तो हमारे बच्चों, बुजुर्गों और बीमार नागरिकों को भारी कष्ट झेलना पड़ेगा। यहाँ तक कि जो लोग स्वयं को स्वस्थ समझते हैं, उनका स्वास्थ्य भी जोखिम में पड़ जाएगा। यदि वह हवा जिसमें हम सांस लेते हैं अस्वास्थ्यकर गुणवत्ता की है, तो श्वसन संबंधी बीमारियाँ केवल बढ़ेंगी ही।

हम जानते हैं कि वायु की गुणवत्ता चिंता का विषय है, और यह सीधे तौर पर ग्लोबल वार्मिंग में योगदान देती है। हम व्यक्तिगत रूप से अपने घर, कस्बे, शहर और व्यापक रूप से अपने देश में वायु की गुणवत्ता सुधारने के लिए क्या कर सकते हैं?

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि बेहतर वायु गुणवत्ता के लिए आवाज़ उठाएँ और अधिकारियों को वाहन यातायात को कम करने और नागरिकों के लिए सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने की दिशा में कदम उठाने के लिए प्रेरित करें। सबसे अधिक वायु प्रदूषण वाहनों के यातायात से ही होता है। सार्वजनिक परिवहन को एक आकर्षक विकल्प बनाया जाना चाहिए, और पर्याप्त प्रोत्साहन के साथ इसे इतना सुविधाजनक बनाना चाहिए कि लोग स्वाभाविक रूप से इसे अपनाएँ। साइकिल चलाने को प्रोत्साहित करना और बाधा रहित अच्छी साइकिल लेन बनाना एक बेहतरीन कदम होगा। यूरोप का एम्स्टर्डम शहर ऐसा ही एक उदाहरण है, जो वाहनों के यातायात से संबंधित अपने सख्त नियमों के लिए वैश्विक स्तर पर सराहा जाता है।

दुर्भाग्यवश, भारत में सार्वजनिक परिवहन या साइकिल का उपयोग करने वाले लोगों के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन मौजूद नहीं हैं। इस बारे में सोचिए। यदि हमें निजी वाहनों का उपयोग करते समय पार्किंग के लिए छह गुना अधिक और ईंधन के लिए पांच गुना अधिक भुगतान करना पड़े, तो हम स्वाभाविक रूप से काम पर जाने के लिए बस या मेट्रो का सहारा लेंगे। और यदि बसें अच्छी सुव्यवस्थित, साफ़-सुथरी, समय की पाबंद हों और पूरी आबादी को ले जाने के लिए पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हों, तो लोगों को महंगे निजी परिवहन का उपयोग करने की आवश्यकता ही क्यों होगी? इसलिए, लंबी अवधि में बेहतरीन सार्वजनिक परिवहन की मांग को और मज़बूत करना एक ऐसी महत्वपूर्ण भूमिका है जिसे हम सभी निभा सकते हैं।

हालांकि, अल्पावधि में जब अत्यधिक वायु प्रदूषण आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा हो, तो कुछ ऐसे उपाय हैं जो मददगार साबित होंगे। बाहर की हवा को अंदर आने से रोकने के लिए सभी दरवाज़े और खिड़कियां बंद कर दें। आजकल, कई लोग बेहतर वायु गुणवत्ता बनाए रखने के लिए एयर प्यूरीफायर में निवेश कर रहे हैं। लेकिन इन्हें भी नियमित रखरखाव की आवश्यकता होती है, और इनके फिल्टर को समय-समय पर बदलना ज़रूरी है।

आप सूक्ष्म कणों, नमी और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों के स्तर की जांच करने के लिए नियमित रूप से घर के अंदर की वायु गुणवत्ता की निगरानी कर सकते हैं। यदि आपके घर में शिशु, बच्चे या बुजुर्ग हैं, तो ऐसा करना उचित होगा। निगरानी आपको यह तय करने में मदद करती है कि स्थिति से कैसे निपटा जाए, एयर प्यूरीफायर का उपयोग कब करना है और कमरे को कब हवादार बनाना है। जब वायु प्रदूषण अपने न्यूनतम स्तर पर हो, तब कमरे का वेंटिलेशन करना भी महत्वपूर्ण है।

एक वैक्यूम क्लीनर में निवेश करें और इसका बार-बार उपयोग करें क्योंकि यह धूल के बारीक कणों को सोख लेता है। पर्दे, तौलिए, बेडशीट और कुशन को भी अक्सर धोना चाहिए ताकि सभी प्रकार के एलर्जी पैदा करने वाले तत्व कम हो सकें।

यदि आपको लत है, तो घर के अंदर कभी भी धूम्रपान न करें। यह परिवार के सदस्यों के लिए प्रदूषण और स्वास्थ्य जोखिम को बढ़ाता है। रसोई में एग्जॉस्ट फैन का उपयोग भी प्रदूषकों को बाहर निकालने में मदद करता है, विशेष रूप से तब जब धुआं पैदा करने वाले पकवान पकाए जा रहे हों।

घर के अंदर लगाए जाने वाले पौधे घर के अंदर के प्रदूषण को कम कर सकते हैं क्योंकि वे फॉर्मेल्डिहाइड और बेंजीन जैसे वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों को सोख लेते हैं। लेकिन इसे प्रभावी बनाने के लिए आपको बहुत बड़ी संख्या में पौधों की आवश्यकता होगी, जो शायद एक व्यावहारिक समाधान नहीं है।

वायु प्रदूषण से कोई भी अछूता नहीं है। यह हम में से हर एक पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है और आप इसके आदी नहीं हो सकते, जैसा कि मैंने पिछले दिनों किसी को कहते हुए सुना था। मैं तब दंग रह गया जब एक परिचित ने टिप्पणी की कि दिल्ली के लोग प्रदूषित वातावरण में रहने के आदी हो गए हैं।

चीन के बीजिंग में, जिसे कभी दुनिया की मस्मॉग राजधानीफ के रूप में जाना जाता था, औद्योगिक उत्सर्जन पर अंकुश लगाने और शहर के परिवहन परिदृश्य को पूरी तरह बदलने ने सबसे बड़ी भूमिका निभाई। परिवहन के क्षेत्र में यह सुधार सार्वजनिक परिवहन में वृद्धि, साइकिल चलाने पर ज़ोर देने और ई-वाहनों के बड़े बेड़े के माध्यम से किया गया। हम जानते हैं कि वायु प्रदूषण को रोका जा सकता है, लेकिन यह तभी संभव है जब इसके लिए मज़बूत इच्छाशक्ति हो।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

रो ई मंडल 3012

रोटरी क्लब जिंदल नगर

जी एस मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में आयोजित एक रक्तदान और थैलेसीमिया जांच शिविर में लगभग 70 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। इस जागरूकता कार्यक्रम में पीडीजी रमेश अग्रवाल ने अनुवांशिक रक्त रोग से बचने के तरीकों पर उपयोगी जानकारी दी।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3040

रोटरी क्लब इंदौर सेंट्रल

चार दिवसीय मॉडर्न पेंटाथलॉन फेडरेशन ऑफ इंडिया चैंपियनशिप में 700 एथलीटों ने भाग लिया। इस अवसर पर डीजी सुशील मल्होत्रा और पीडीजी सोहनलाल पारख, पीडीजी नितिन दफ़रिया और पीडीजी रमेश तिवारी उपस्थित थे।

रो ई मंडल 3100

रोटरी क्लब मुरादाबाद

समाज में जागरूकता फैलाने के लिए इंटरेक्ट क्लब ऑफ मुरादाबाद के छात्रों के साथ मिलकर एक नेत्र और अंग दान रैली आयोजित की गई। डीजीएन काव्या रस्तोगी ने पंचायत भवन से रैली को झंडी दिखाकर रवाना किया।

रो ई मंडल 3170

रोटरी क्लब होनावर

इंट्रैक्टरों के बीच खेल भावना, टीम वर्क और भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट रोटरी-इंटरेक्ट प्रीमियर लीग में दस इंटरेक्ट टीमों ने भाग लिया।

रो ई मंडल 3030

रोटरी क्लब नागपुर होराइजन

आरसीसी नवेगांव देशमुख के 32 बच्चों के रक्त के नमूने सीबीसी और सिकल सेल रोग की जांच के लिए लोक कल्याण पैथ लैब भेजे गए। चार महीने के अंतराल के बाद, यही परीक्षण दोबारा किए जाएंगे और इस अवधि के दौरान, उन्हें नंदिनी देशमुख द्वारा प्रायोजित पौष्टिक आहार दिया जाएगा।

रो ई मंडल 3120

रोटरी क्लब कुशीनगर

कसिया के उच्च प्राथमिक विद्यालय, मुंडेरा रतनपट्टी, में बच्चों को रोटरी व्हील लोगो वाले स्कूल बैग और छतरियां वितरित की गईं।

रो ई मंडल 3131

रोटरी क्लब पुणे हेरिटेज

प्रोजेक्ट महादान के तहत, एक विशेष अभियान के माध्यम से जुटाए गए 4.5 टन से अधिक खाद्यान्न और कपड़ों के 600 बैग आश्रय गृहों और अनाथालयों में वितरित किए गए। एकत्रित की गई ₹12 लाख की राशि का उपयोग कृत्रिम अंगों और डायलिसिस मशीनों की स्थापना के लिए किया जाएगा।

Rotary PEOPLE OF ACTION

छात्रों के लिए एक आनंददायक RYLA

टीम रोटरी न्यूज़

RYLA में एक इंटरेक्टिव सेशन।

रोटरी क्लब बोकारो स्टील सिटी, रो ई मंडल 3250, ने तीन दिवसीय आवासीय रोटरी यूथ लीडरशिप अवॉर्ड्स (RYLA) कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें कक्षा 9 से 12 तक के 101 छात्रों ने भाग लिया। इनमें झारखंड के भुरकुंडा से आए 10 प्रतिभागी भी शामिल थे।

नए रास्ते, नए सपने नए अवसरों की खोज विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य संरचित, संवादात्मक और गतिविधि-आधारित पद्धति के माध्यम से छात्रों को अपनी क्षमता पहचानने, आत्मविश्वास बढ़ाने और नेतृत्व कौशल विकसित करने में सहायता करना था।

RYLA में अध्यक्ष पूनम रेहान, क्लब सचिव घनश्याम दास, पीडीजी महेश केजरीवाल ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। टीम-बिल्डिंग गतिविधियों ने छात्रों में सहयोग और आपसी सौहार्द को प्रोत्साहित किया। प्रत्येक दिन की शुरुआत ऊर्जा से भरपूर योग और जुम्बा सत्रों से हुई।

दूसरे दिन विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों के सत्र आयोजित किए गए।

छात्रों को उल्लास, ऊर्जा, उड़ान और उमंग नामक चार समूहों में विभाजित किया गया, जिन्होंने नाटक, नृत्य, मिमिक्री, एकल प्रस्तुतियाँ और रैंप वॉक प्रस्तुत किए। सांस्कृतिक संध्या का समापन बॉनफायर और बड़ा खाना (एक सामुदायिक भोजन) के साथ हुआ, जिसमें छात्र, रोटरी सदस्य और विद्यालयों के प्रधानाचार्य एक साथ शामिल हुए।

कार्यक्रम का समापन छात्रों की प्रतिक्रिया, सहभागिता प्रमाणपत्रों के वितरण एवं क्लब सदस्य संजय तिवारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।■

रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय से संदेश

क्लब नेतृत्वकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण अनुस्मारक

rotary.org के माध्यम से ऑनलाइन योगदान करते समय, सदस्यों को अपने 'माई रोटरी' खाते का उपयोग करना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होता है कि दान उनकी रोटरी सदस्यता प्रोफाइल में समय पर और सही तरीके से दर्ज हो। हालाँकि 'गिव एस गेस्ट' विकल्प सुविधाजनक लग सकता है, लेकिन यह मुख्य रूप से गैर-रोटेरियन दानकर्ताओं के लिए है और इसके कुछ नुकसान भी हैं:

- एक नई रोटरी आई डी बन जाती है, जिससे सदस्य के वास्तविक प्रोफाइल से जुड़ने में देरी होती है
- योगदान स्वतः रो ई मुख्यालय में वर्ल्ड फंड के अंतर्गत दर्ज हो जाते है, जिससे क्लब या मंडल को कोई क्रेडिट नहीं मिलता
- सुधार अगले रोटरी वर्ष में स्थानांतरित नहीं किए जा सकते, जिससे मान्यता और लेखा-मिलान जटिल हो जाता है

हम क्लब नेतृत्वकर्ताओं से अनुरोध करते हैं कि वे नियमित रूप से अपनी *क्लब रेकग्निशन समरी* की समीक्षा करें ताकि गलती से वर्ल्ड फंड में दर्ज हुए किसी भी योगदान की पहचान की जा सके। कृपया इन्हें वर्तमान रोटरी वर्ष के भीतर ठीक कराने के लिए तुरंत आरआईएसएओ से संपर्क करें।

वार्षिक कोष 50:50 माइल्स्टोन पुरस्कार का परिचय!

हमें यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि वार्षिक कोष 50:50 माइल्स्टोन पुरस्कार की शुरुआत की जा रही है। यह विशेष सम्मान न्यासी भरत पांड्या और ज़ोन 4, 5, 6 और 7 के आरआरएफसी की पहल पर शुरू किया गया है। यह सम्मान रोटरी संस्थान के वार्षिक कोष में योगदान की भावना का उत्सव है। 50:50 माइल्स्टोन पुरस्कार आपके क्लब की 'विश्व में अच्छा करने' के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करने का अवसर है। अपने सदस्यों को प्रोत्साहित करें, अपने क्लबों को सक्रिय करें, और गर्व के साथ इस माइलस्टोन को पार करें!

कैसे पात्र बनें

क्लबों के लिए: 31 मार्च 2026 तक कम से कम 50 प्रतिशत सदस्य वार्षिक कोष में 50 डॉलर या उससे अधिक का योगदान करें।

मंडलों के लिए: 31 मार्च 2026 तक कम से कम 50 प्रतिशत क्लब वार्षिक कोष में 500 डॉलर या उससे अधिक का योगदान करें।

किसी भी प्रश्न या मार्गदर्शन के लिए, कृपया अपने **ज़ोन के आरआरएफसी** या **आरआईएसएओ** से संपर्क करें।■

स्वास्थ्य सेवा पहलें

रोटरी क्लब तापी सूरत, रो ई मंडल 3060, ने एसवीएनएम ट्रस्ट के सहयोग से सुपा स्थित एसवीएनएम अस्पताल में एसवीएनएम रोटरी पैथोलॉजी प्रयोगशाला का उद्घाटन किया, ताकि सुपा और आसपास के गांवों को किफायती डायग्नोस्टिक सेवाएं प्रदान की जा सकें। एथर इंडस्ट्रीज़ से प्राप्त सीएसआर अनुदान ने ₹6.5 लाख की इस परियोजना का समर्थन किया। क्लब ने मारोली, सूरत, में वैश्विक अनुदान के तहत लगभग ₹27 लाख की अनुमानित लागत से एक पूर्ण सुसज्जित विज़न सेंटर भी स्थापित किया, जो 40 से अधिक आसपास के गांवों को निःशुल्क प्राथमिक नेत्र-देखभाल सेवाएं प्रदान करता है। दृष्टिबाधितों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम - एक पहल - को स्वामी विवेकानंद नेत्र मंदिर ट्रस्ट के सहयोग से प्रज्ञाचक्षु स्किल डेवलपमेंट एवं ट्रेनिंग सेंटर में शुरू किया गया।

SVNM रोटरी पैथोलॉजी लेबोरेटरी में क्लब के सदस्य, जिनमें PDG तुषार शाह (दाएँ से तीसरे) भी शामिल हैं।

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

जवानों के लिए रसोई सुविधा

रोटरी क्लब बॉम्बे सीकोस्ट, रो ई मंडल 3141, ने कश्मीर की मचल घाटी में तैनात भारतीय सेना के जवानों के लिए एक पूर्ण रूप से सुसज्जित रसोई एवं भोजन कक्ष दान किया। क्लब सदस्य हरीश शानी के योगदान से बनी यह सुविधा अत्यधिक उप-शून्य तापमान में सेवा दे रहे सैनिकों को गर्म और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराती है। जवानों ने इस सुविधा का नाम 'मॉम्स किचन' रखा है।

नए लगाए गए किचन में जवान।

सर्वाइकल कैंसर जागरूकता

रोटरी क्लब बैंगलोर लेकसाइड, रो ई मंडल 3191, ने एम्बिटेल टेक्नोलॉजीज़ से प्राप्त सीएसआर अनुदान के सहयोग से ग्रामीण कर्नाटक में किशोरियों के लिए सर्वाइकल कैंसर जागरूकता एवं टीकाकरण कार्यक्रम शुरू किया। आर एल जलप्पा अस्पताल एवं रिसर्च सेंटर, कोलार, के साथ मिलकर लागू की गई इस पहल का उद्देश्य सरकारी स्कूलों की 9-14 वर्ष आयु की 1,000 से अधिक बालिकाओं का टीकाकरण करना है।

एक स्कूल में वैक्सीनेशन अभियान।

वंचितों के लिए घर

रोटरी क्लब मार्थांडम हनी सिटी, रो ई मंडल 3212, ने दो बच्चों वाले एक परिवार को अन्नै इलम नामक घर का निर्माण कर सौंपा, जिसमें पति 90 प्रतिशत दृष्टि बाधित है और पत्नी ट्रांसवर्स मायलाइटिस के कारण स्थायी रूप से व्हीलचेयर पर निर्भर हैं। इस परियोजना का उद्घाटन डीजीई गांधी कृष्णन द्वारा किया गया और इसे दानकर्ताओं एवं स्वयंसेवकों के सहयोग से कार्यान्वित किया गया।

DGE गांधी कृष्णन और क्लब के सदस्य, लाभार्थियों के साथ, गृह प्रवेश समारोह में।

पैदल चलकर मांसपेशियों को मज़बूत बनाए

गीता मथाई

विकासवाद के पैमाने पर हमने चार पैरों पर चलकर शुरुआत की थी। जैसे-जैसे हमारे मस्तिष्क का विकास हुआ, हम दो पैरों पर चलने लगे। इसने हमारे हाथों को अन्य गतिविधियों के लिए मुक्त कर दिया और इससे बुद्धि एवं सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान मिला।

यद्यपि पैदल चलना एक प्राकृतिक कौशल है, लेकिन मशीनी क्रांति के विश्व पर छा जाने के कारण हम इसे खोते जा रहे हैं। आज, शायद ही कोई पैदल चलता है। यहाँ तक कि छोटे बच्चों के पास भी मोटर चालित स्कूटर, ट्राइसाइकिल और बैटरी से चलने वाली कारें हैं। वयस्कों में, कई लोग वाहन के बिना 100 मीटर भी चलने को तैयार नहीं हैं।

हम में से अधिकांश लोग अपने नब्बे के दशक तक सक्रिय, स्वतंत्र और गतिशील जीवन जीना चाहते हैं। किसी भी अप्रत्याशित घटना को छोड़कर, ऐसे स्वस्थ जीवन की तैयारी आदर्श रूप से किशोरावस्था की शुरुआत में शुरू होनी चाहिए, लेकिन शुरुआत करने में कभी देर नहीं होती।

वर्तमान चिकित्सा अनुसंधान प्रतिदिन कम से कम 40 मिनट की शारीरिक गतिविधि की सलाह देते हैं। सुझाई गई सभी गतिविधियों जैसे जॉगिंग, दौड़ना, तैराकी, नृत्य या टेनिस जैसे खेलों में से पैदल चलना अपनाना सबसे आसान है। इसके लिए किसी विशेष प्रशिक्षण या महंगे उपकरण की आवश्यकता नहीं होती, इसे कहीं भी किया जा सकता है, इसके लिए साथी की आवश्यकता नहीं होती, और इसमें चोट लगने की संभावना सबसे कम होती है।

जैसे-जैसे हमारी उम्र बढ़ती है, चलने की सही तकनीक पर ध्यान दिया जाना चाहिए। झुककर चलना, खराब पोस्चर और गलत चाल ऐसी गलतियाँ हैं जिनसे बचा जा सकता है। चलते समय अपना सिर ऊंचा और गर्दन सीधी रखें। आँखों को 15-20 फीट आगे केंद्रित होना चाहिए, ठुड्डी जमीन के समानांतर, पेट को हल्का सा अंदर की ओर खींचा हुआ, पैर कंधों की चौड़ाई के

बराबर और हाथ शरीर के आर-पार नहीं, बल्कि शरीर के साथ समकोण पर स्वाभाविक रूप से झूलते हुए होने चाहिए।

सुबह सबसे पहले टहलने के कई फायदे हैं। रात भर आराम करने वाली मांसपेशियाँ और मानसिक सतर्कता, दोनों को एक किक-स्टार्ट मिल जाता है। दिन में बाद में, अन्य प्रतिबद्धताएँ या आगंतुक इस दिनचर्या में बाधा डाल सकते हैं।

पैदल चलने के कई प्रकार होते हैं। टहलना या धीरे-धीरे चलना फिटनेस में सुधार नहीं करता है। यदि आप चलते समय गा सकते हैं या लंबी बातचीत कर सकते हैं, तो आप अपनी लक्षित हृदय गति (220 में से अपनी आयु घटाकर गणना की जाती है) के 50-80 प्रतिशत तक पहुँचने के करीब भी नहीं हैं।

तेज चलने के दौरान, आपको 9-10 मिनट में एक किलोमीटर की दूरी तय कर लेना चाहिए, सांसें तेज होनी चाहिए लेकिन सांस फूलनी नहीं चाहिए, और केवल छोटे वाक्यों में बोलना चाहिए। प्रति किलोमीटर 10 मिनट से कम का लक्ष्य रखें।

पावर वॉकिंग में लगभग 8 किमी/घंटा की गति शामिल होती है, जिसमें हाथ तेजी से आगे-पीछे होते हैं।

रेस वॉकिंग एक ओलंपिक खेल है जिसमें एक पैर हर समय जमीन के संपर्क में रहना चाहिए।

नॉर्डिक वॉकिंग में दो स्की पोल्स का उपयोग किया जाता है, जो दोनों तरफ जमीन में गड़ते हैं, जिसमें शरीर का ऊपरी हिस्सा भी शामिल होता है। यह कुशल और व्यावहारिक है; ये छड़ें आवारा कुत्तों, बंदरों या चेन छीनने वाले बदमाशों को दूर भगाने में भी मदद कर सकती हैं।

यदि आप घर से बाहर नहीं जा पा रहे हैं, तो आप त आकार में एक जगह खड़े होकर चलने का प्रयास कर सकते हैं। इसके लिए भी सही जूते पहनना अनिवार्य हैं।

इन्फिनिटी वॉकिंग एक और सुरक्षित और लोकप्रिय तरीका है। छत या गैरेज पर, एक केंद्रीय बिंदु की कल्पना करें और आठ के अंक के आकार में चलें। जापानियों ने 3 मिनट के नियम के साथ इसकी प्रभावशीलता में सुधार किया है: तीन मिनट तक चलें, फिर तीन मिनट तक जॉगिंग करें या धीरे दौड़ें। चूंकि अधिकांश गाने लगभग तीन मिनट के होते हैं, इसलिए संगीत सुनना इस दिनचर्या के पालन को आसान बनाता है।

सिर सीधा रखते हुए शरीर की मुद्रा को सीधा बनाए रखें। मुँह बंद करके नाक से सांस लें, और हाथों को मुट्ठी में भींचने से बचें। यदि आप अपनी दिनचर्या में कभी-कभी उल्टा चलना शामिल करते हैं, तो कार्यकुशलता और संतुलन में सुधार होता है।

यदि आपने लंबे समय से व्यायाम नहीं किया है, तो पैदल चलना सहज है और जोड़ों और मांसपेशियों पर न्यूनतम दबाव डालता है। पहले सप्ताह के दौरान दिन में 10 मिनट से शुरुआत करें। प्रत्येक सप्ताह धीरे-धीरे अवधि, गति और दूरी बढ़ाएं जब तक कि आप लगभग 45 मिनट में 4 किमी तक न पहुंच जाएं। पहले समय पर ध्यान दें, फिर गति पर, दोनों पर एक साथ कभी नहीं। सप्ताहांत या छुट्टियों पर दूरी दोगुनी करने से अतिरिक्त हृदय संबंधी लाभ मिलता है।

पैदल चलने से पहले और बाद में धीरे-धीरे स्ट्रेचिंग करना चोट को रोकने में मदद करता है और मांसपेशियों की कार्यक्षमता में सुधार करता है, भले ही यह समय की बर्बादी जैसा लगे।

वरिष्ठ नागरिकों में, शारीरिक गतिविधि की कमी सबसे पहले चढ़ने को कठिन बनाती है, फिर चलने को, फिर खड़े होने को और अंततः बैठने को भी। लंबे समय तक गतिहीनता से पोस्चरल निमोनिया, मांसपेशियों का क्षय, संज्ञानात्मक गिरावट और असमय मृत्यु हो सकती है।

जब व्यायाम करने की सलाह दी जाती है, तो बहुत से लोग विरोध करते हैं, ''मेरे पास समय नहीं है, डॉक्टर। आप कल्पना नहीं कर सकते कि मैं कितना व्यस्त हूँ!'' वास्तव में, हर किसी का जीवन भागदौड़ भरा है; यहाँ तक कि जो लोग घंटों टेलीविजन धारावाहिक देखने में बिताते हैं, वे भी एक प्रकरण (एपिसोड) छोड़ने का जोखिम नहीं उठा सकते। (हालाँकि आप उस समय स्पॉट वॉकिंग कर सकते हैं)।

पैदल चलना शुरू करना आसान है। इसके लिए केवल इच्छाशक्ति और टालमटोल को खत्म करने की आवश्यकता है।

लेखिका बाल रोग विशेषज्ञ हैं और उन्होंने स्टेइंग हेल्दी इन मॉडर्न इंडिया *पुस्तक लिखी है*

परिवर्तन की शक्ति

इंदौर में ओष्ठ विदर की मुफ्त सर्जरी

रोटरी क्लब इंदौर रॉयल, रो ई मंडल 3040, द्वारा इंदौर के डीएनएस अस्पताल में ओष्ठ एवं तालु विदर और चेहरे की अन्य विकृतियों का मुफ्त सर्जिकल उपचार प्रदान किया जा रहा है। इस चिकित्सा परियोजना के तहत, सर्जरी का पूरा खर्च क्लब द्वारा वहन किया जाता है जिसमें यात्रा, आवास, सर्जरी के बाद की देखभाल और अन्य उपचारों का खर्च, यदि जरूरत होती है, भी शामिल होता है।

24 वर्षीय नंदिनी इसकी पहली लाभार्थियों में से एक थीं। खालसा कॉलेज में आयोजित एक सर्जरी जागरूकता शिविर में क्लब से संपर्क करने के बाद, रोटेरियन जगप्रीत सिंह टुटेजा ने उन्हें सहयोगी संस्था 'इनगा फाउंडेशन' के पास भेजा। डीएनएस अस्पताल में डॉ अवनी पांडे के नेतृत्व में एक क्रैनियोफेशियल टीम द्वारा उनका ऑपरेशन किया गया। आने वाले महीनों में उनकी अतिरिक्त सुधारात्मक सर्जरियाँ की जाएगी। रोटेरियन अनीता पांडे द्वारा उन्हें मनोवैज्ञानिक परामर्श दिया जा रहा है। ■

रोटरी क्लब इंदौर रॉयल की अध्यक्ष यत्ती अरोड़ा (दाएं से चौथी), डॉ अवनी पांडे और आरटीएन जगप्रीत सिंह तुतेजा (बाएं), लाभार्थी नंदिनी के साथ।

सरकारी स्कूल में वॉटर हीटिंग प्रणाली

रोटरी क्लब सुरेंद्रनगर, रो ई मंडल 3060, द्वारा गुजरात के सुरेंद्रनगर जिले के ध्रांगध्रा तालुका के पास स्थित आदिवासी छात्रों के एक सरकारी प्राथमिक स्कूल, वीरेंद्रगढ़ आश्रमशाला, में सोलर वॉटर हीटिंग प्रणाली स्थापित की गई। यह सुविधा सर्दियों के दौरान सभी 150 बच्चों के लिए गर्म पानी सुनिश्चित करेगी, जिससे उनके स्वास्थ्य, स्वच्छता और आराम में सुधार होगा। ■

सावंतवाड़ी में नेत्र देखभाल वैन

रोटरी क्लब सावंतवाड़ी, रो ई मंडल 3170, द्वारा महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले के 35 गांवों में आंखों की देखभाल की सुविधा पहुंचाने के लिए एनएबी आई हॉस्पिटल को एक ऑप्थल्मिक वैन (कीमत ₹40 लाख) प्रदान की गई। यह परियोजना एक वैश्विक अनुदान के तहत पूरी की गई, जिसमें रोटरी क्लब सेंट सिमंस आइलैंड, रो ई मंडल 6920, वैश्विक भागीदार था।

इस परियोजना की शुरुआत एजी विनया बाड़ ने की थी जब वह क्लब अध्यक्ष (2022-23) थीं। क्लब की प्राथमिक संपर्क होने के नाते उन्होंने डीजी अरुण भंडारे, पीडीजी वेंकटेश देशपांडे, पीडीजी शरद पई और डीआरएफसी अजय मेनन के साथ मिलकर काम किया। रोटेरियन उज्वल साठे के स्वामित्व वाली चिंतामणि मोटर्स ने इस नेत्र देखभाल वैन को तैयार किया है। ■

पूर्व अध्यक्ष विनया बाद (बीच में), और उनके साथ (बाएं से) PDG वेंकटेश देशपांडे, गौरीश धोंड और DRFC अजय मेनन, ऑप्थेल्मिक वैन के लॉन्च के मौके पर।

तिरुवन्नामलई, तमिलनाडु, में रोटरी डायलिसिस केंद्र

डीजी वी सुरेश ने रोटरी क्लब मूनसिटी तिरुवन्नामलई, रो ई मंडल 3231, द्वारा स्थापित एक डायलिसिस केंद्र का उद्घाटन किया। इसका उद्देश्य गुर्दे की बीमारियों से जूझ रहे आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना है। 15 मशीनों वाले इस नए केंद्र में प्रति वर्ष लगभग 7,700 लोगों को सेवा देने की क्षमता है, जिससे इस शहर के वंचित मरीजों को मदद मिलेगी। ■

बाएं से: RID 3231 के DG वी सुरेश, रोटरी सोशल वेलफेयर ट्रस्ट के चेयरमैन एस कृष्णकुमार, PDG श्रीधर बलरामन और जे के एन पलनी, डायलिसिस केन्द्र में।

Rotary PEOPLE OF ACTION

सम्मान के साथ आत्मनिर्भरता

जयश्री

उड़ीशा के एक ग्रामीण ने अपने हाथ पर 'रोटरी' शब्द का टैटू गुदवाया है - यह उसका रोटरी क्लब जाजपुर, रोटरी मंडल 3262, के रोटेरियनों को धन्यवाद देने का अपना तरीका है, जिन्होंने उसे एक व्हीलचेयर उपहार में दी थी। डीजी मनोज कुमार त्रिपाठी कहते हैं, अब वह एक छोटी दुकान खोलने और गरिमा के साथ अपनी आजीविका कमाने को लेकर आश्वस्त है। त्रिपाठी ने *प्रोजेक्ट मददगार* को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो रोटरी मंडल 3262 के 125 रोटरी क्लबों की सामूहिक शक्ति के साथ निष्पादित एक बड़े पैमाने की आजीविका वृद्धि पहल थी।

एक परिवार रोटरी क्लब द्वारा गिफ्ट किया गया वेट ग्राइंडर घर ले जाते हुए।

पूरे उड़ीशा में 1,000 से अधिक व्यक्तियों को ऐसे उपकरणों के साथ सहायता प्रदान की गई जिन्होंने उन्हें स्वतंत्रता, आत्मविश्वास और टिकाऊ आजीविका कमाने योग्य बनाया। सावधानीपूर्वक चुने गए लाभार्थियों को सिलाई मशीनें, वेट ग्राइंडर, सुनने की मशीन, व्हीलचेयर और कृत्रिम अंग वितरित किए गए। इस परियोजना की खासियत न केवल इसका पैमाना था, बल्कि वह सूक्ष्म नियोजन भी था जिसने यह सुनिश्चित किया कि सही सहायता सही हाथों तक पहुंचे।

लाभार्थियों की पहचान पूरे मंडल में रोटरी क्लबों द्वारा आयोजित विशेष सरकारी सहायता प्राप्त शिविरों के माध्यम से की गई। पहचान के लिए आधार कार्ड, आर्थिक स्थिति की पुष्टि के लिए बीपीएल कार्ड और शारीरिक विकलांगता को प्रमाणित करने के लिए दिव्यांग प्रमाण पत्र PWD का उपयोग किया गया। त्रिपाठी कहते हैं, हम यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि वितरित की गई हर वस्तु में जीवन परिवर्तित करने की क्षमता हो।

परियोजना के तहत, 100 महिलाओं को सिलाई मशीनें मिलीं, जिससे उन्हें सिलाई कौशल को पुनर्जीवित करने, गृह-आधारित उद्यम शुरू करने और अपने परिवार की आय बढ़ाने में मदद मिली। अन्य 100 महिलाओं को वेट ग्राइंडर दिए गए, जिससे भोजन तैयार करने एवं छोटे केटरिंग के व्यवसायों में अवसर खुले।

मददगार का असली प्रभाव तब सामने आया जब डीजी ने एक सुदूर गाँव का दौरा किया। जब वह एक ऐसी महिला के घर गए जिसे वेट ग्राइंडर मिला था, तो उसने उनका स्वागत एक गर्मजोशी भरी मुस्कान और ताजे पिसे हुए मसाले की एक छोटी कटोरी के साथ किया। उसने गर्व से कहा, यह उसी ग्राइंडर से पिसा है जो रोटरी ने मुझे दिया था। त्रिपाठी मुस्कुराते हुए कहते हैं, यह एक सरल

भाव था, लेकिन इसने *मददगार* के सार को बखूबी प्रस्तुत किया।

कई अन्य लोगों के लिए, इस परियोजना ने गतिशीलता और स्वतंत्रता को बहाल किया। व्हीलचेयर और कृत्रिम अंगों ने उन लाभार्थियों में नया आत्मविश्वास जगाया जो लंबे समय से बुनियादी आवाजाही के लिए दूसरों पर निर्भर थे। त्रिपाठी याद करते हैं कि वे तब बहुत भावुक हो गए थे जब कृत्रिम अंग लगवाने वाले एक बुजुर्ग व्यक्ति ने उनके पास 'चलकर' आकर कहा कि वह सालों में पहली बार बिना किसी सहारे के खड़े हुए हैं। इसी तरह का दिल छू लेने वाला अनुभव उस महिला का था जिसे सुनने की मशीन मिली थी। एक दुर्घटना में अपनी सुनने की शक्ति खो देने के बाद, उसने उन्हें बताया कि वह आवाज़ की दुनिया को भूल चुकी थी। जब उसने कहा कि वह आवाजों और रोजमर्रा के शोर को सुनकर फिर से जीवित महसूस कर रही है, तो यह बहुत ही सुखद अनुभव था, वह याद करते है।

डीजी मनोज कुमार त्रिपाठी और श्रम मंत्री गणेश राम सिंह खुंटिया, एक परिवार को सिलाई मशीन देते हुए।

प्रोजेक्ट मददगार *के तहत एक महिला को व्हील चेयर दी गई।*

परियोजना ने रोकी जा सकने वाली दृष्टिहीनता पर भी ध्यान दिया, जिसके तहत उन लोगों के लिए 100 मोतियाबिंद के ऑपरेशन किए गए जो इलाज का खर्च नहीं उठा सकते थे। उन लोगों के लिए, इसका मतलब था काम पर लौटना, अपने प्रियजनों को फिर से देखना और रोजमर्रा की उन खुशियों को वापस पाना जिन्हें लंबे समय से वे खो चुके थे।

परियोजना की कुल लागत ₹35 लाख थी, जिसे मंडल कोष (₹14 लाख) और क्लबों के योगदान के माध्यम से पूरा किया गया था। सभी सामग्रियाँ विक्रेताओं से रियायती दरों पर खरीदी गई थी। इस परियोजना का उद्घाटन 23 दिसंबर को भुवनेश्वर में राज्य के श्रम मंत्री गणेशराम खुंटिया, स्थानीय विधायक सुशांत राउत और अन्य जिला अधिकारियों द्वारा किया गया था। वितरण गतिविधियां पूरे रोटरी मंडल 3262 में एक सप्ताह तक जारी रहीं।

इस प्रभाव से उत्साहित होकर, डीजी ने आगामी महीनों में इसी तरह की अन्य पहलों की रूपरेखा तैयार की है। वह कहते हैं, ''मंडल के क्लब अब बजाज इंडिया के सहयोग से ई-ऑटो, गुलाबी ऑटोरिक्शा और हाथ-ठेले उपलब्ध कराने पर काम कर रहे हैं ताकि महिलाओं को उनकी पारिवारिक आय और बढ़ाने में मदद मिल सके।'' ■

जैसा है वैसा ही रिपोर्ट करना

मीडिया में ईमानदारी और निष्पक्षता मानो खत्म होती जा रही हैं, लेकिन अभी भी आशा बाकी है।

संध्या राव

लगभग पचास वर्ष पहले, एक भारतीय राजनेता ने कहा था, ''जब उनसे झुकने को कहा गया तो वे रेंगने लगे।'' यह कथन वरिष्ठ नेता एल के आडवाणी से जुड़ा माना जाता है, जो उन्होंने आपातकाल (1975-77) के दौरान मीडिया की भूमिका पर टिप्पणी करते हुए कहा था। यह कथन आज और भी अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है और इस सचाई को रेखांकित करता है कि प्रेस, जिसे कभी लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता था, अपनी स्वतंत्रता और निष्पक्षता को कमजोर करता दिख रहा है।

इसी संदर्भ में हमें हरिंदर बावेजा की आत्मकथा *दे विल शूट यू, मैडम: माय लाइफ थ्रू कान्फ्लिक्ट* को पढ़ना चाहिए। व्यापक व्यावहारिक अनुभव वाली एक वरिष्ठ पत्रकार के रूप में उन्होंने निष्पक्ष दृष्टिकोण से अपनी उस यात्रा का वर्णन किया जो समकालीन भारतीय इतिहास को कहीं समृद्ध करती है तो कहीं उस पर चोट भी करती है। दिलचस्प बात यह है कि उनका पहला बड़ा असाइनमेंट (*प्रोब* पत्रिका के लिए) 1984 में आया। ''ऑपरेशन ब्लू स्टार अभी-अभी समाप्त हुआ था और पंजाब तनाव से जूझ रहा था। पता नहीं क्यों मुझे उस ऑपरेशन के बाद की स्थिति को कवर करने के लिए क्यों चुना गया जिसके गंभीर परिणाम देश ने झेले थे? मैं हैरान थी, लेकिन मैंने विरोध नहीं किया।'' उन्हें यह समझने में ज़्यादा समय नहीं लगा कि ऊपरी तौर पर इसके कारण यह थे कि वह एक सेना अधिकारी की संतान थीं, सिख थीं और एक महिला थीं। लेकिन जैसा कि वह आगे स्पष्ट करती हैं, ''मैं एक गहन भारतीय पहचान के साथ पली-बढ़ी थी। मैं एक पत्रकार थी, न कि सिख पत्रकार या महिला पत्रकार।'' यह प्रतिबद्धता पूरी किताब में स्पष्ट रूप से झलकती है, भले ही इसका संपादन और अधिक सावधानीपूर्वक किया जा सकता था।

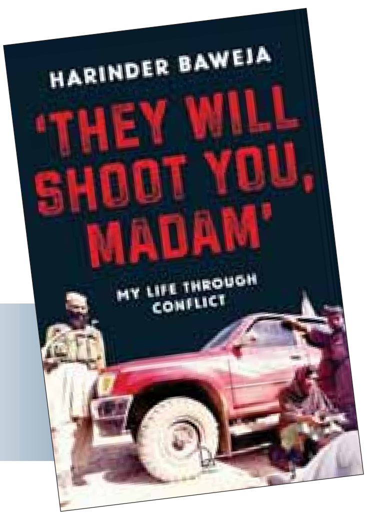

हरिंदर बावेजा ने चालीस से अधिक वर्षों के अपने करियर में कई अलग-अलग मीडिया संस्थानों के लिए काम किया। उनकी किताब *दे विल शूट यू, मैडम* में उनके कुछ प्रमुख असाइनमेंट शामिल हैं जो राजनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, उनकी शुरुआत ऑपरेशन ब्लू स्टार से होती हैं, जिसमें वह पंजाब में फैली अशांति का विवरण प्रस्तुत करती हैं, जिसके बाद तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद दंगे भड़क उठे। ''मैंने जितनी अधिक हिंसा देखी, उतना ही अधिक मैं उसकी तह तक जाना चाहती थी। 'आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता' - बार-बार दोहराई जाने वाली यह पंक्ति सबसे बड़ा असत्य है। पंजाब, कश्मीर, पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान सहित विभिन्न संघर्ष क्षेत्रों और समाजों में लंबे समय तक बिताए गए वर्षों के बाद मुझे यह समझ में आया कि कट्टरपंथीकरण में धर्म की बड़ी भूमिका होती है।''

इस किताब में वर्णित विभिन्न परिस्थितियों में यह दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है और ये सभी विवरण तथ्यों, साक्षात्कारों और प्रत्यक्ष अवलोकन पर आधारित हैं। उनके विश्लेषण पर संदेह करने का कोई विशेष कारण भी नहीं दिखता, चाहे वह कश्मीर का मुद्दा हो, बाबरी मस्जिद-राम मंदिर विवाद हो, अफ़ग़ानिस्तान में तालिबान का उदय हो, भारत-पाकिस्तान की जटिलता हो या फिर वे अन्य विषय जिन पर वह चर्चा करती हैं। उन्होंने 1994 में अनुमति प्राप्त कर पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर (पीओके) की यात्रा की और वहाँ की स्थिति का प्रत्यक्ष अनुभव पाठकों तक पहुँचाया। प्रतीत होता है कि उन्होंने वहाँ की स्थिति का निष्पक्ष चित्रण किया, अन्यथा उन्हें बाद में ब्लैकलिस्ट करके दोबारा वहाँ जाने से क्यों रोका जाता? उनका 'अपराध' यह था कि *इंडिया टुडे* में उन्होंने एक लेख प्रकाशित किया और पीओके (आज़ाद कश्मीर) के तत्कालीन प्रधानमंत्री सरदार अब्दुल क़य्यूम ख़ान का साक्षात्कार छापा, जिसके कुछ अंश इस किताब में भी शामिल हैं। उदाहरण के लिए, जब उन्होंने उनसे पूछा कि क्या प्रशिक्षित उग्रवादियों को नियंत्रण रेखा (एलओसी) पार करने की अनुमति दी जाती है, तो उन्होंने उत्तर दिया था: ''हम भारतीय-नियंत्रित कश्मीर को अपने क्षेत्र का हिस्सा मानते हैं। यह कोई रहस्य नहीं है कि उग्रवादी आते-जाते रहते हैं। संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों के अनुसार, कश्मीरियों के एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ जाने पर कोई प्रतिबंध नहीं है।''

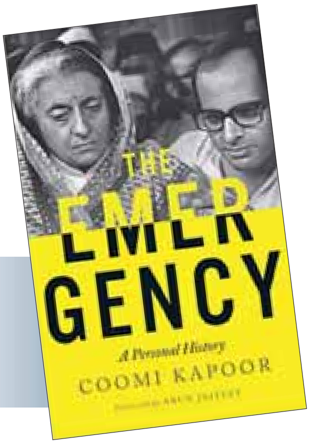

हर उदाहरण में, वह पत्रकारिता के उस धर्म-सिद्धांत का पालन करती हैं जिसके अंतर्गत किसी भी कहानी के जितने संभव हो उतने पक्ष प्रस्तुत किए जाना चाहिए। कश्मीर के विषय में बात करते हुए, वह विभिन्न दृष्टिकोण साझा करती हैं; इसके साथ ही वह सुरक्षा अभियानों के एक कम-प्रकाशित पहलू को उजागर करते हुए हमें मुहम्मद युसूफ़ पर्रे उर्फ़ कुका पर्रे से परिचित कराती हैं-जिसे खुफिया एजेंसियों ने सेना की अवैध सेना का नेता बनने के लिए मनाया था, और जो इख़वान-उल-मुस्लिमीन का प्रमुख था, जो कश्मीर के 'मुक्तिकरण' के लिए प्रो-पाकिस्तान हिज़्बुल मुजाहिद्दीन और जमात-ए-इस्लामी से लड़ रहा था। जैसा कि हरिंदर टिप्पणी करती हैं: जो लोग आत्मसमर्पण करने का विकल्प चुनते थे, उन्हें पुनर्वासित करने के बजाय, सरकार ने उन्हें आतंकवाद विरोधी अभियानों में इस्तेमाल करने का निर्णय लिया। इससे घाटी में हिंसा के जटिल जाल में एक और परत जुड़ गई।

दे विल शूट यू, मैडम में कई बातों को शामिल किया गया है, जिसमें पहलगाम हमले तक की बात है, जिसमें मासूम टूरिस्ट की जान चली गई, सुरक्षा की कमी सामने आई, और जितने लोगों को बचाया जा सका, उसमें स्थानीय लोगों की बहादुरी भी उजागर हुई।

कुछ भी पूरी तरह से काला या सफेद नहीं होता खासकर जब मामला राजनीतिक हो। स्पष्ट, सहज और पठनीय शैली में लिखी गई यह किताब न केवल पढ़ने में आसान है बल्कि प्रत्येक अध्याय में दी गई जानकारियों और विश्लेषणों से यह स्पष्ट होता हैं कि हर संघर्ष के पीछे कितनी जटिल समस्याएँ निहित हैं। इसके साथ ही यह पागलपन की उन सीमाओं को भी उजागर करती है जिनकी वजह से प्रतिशोध का खेल (tit-for-tat) अनवरत चलता रहता हैं। वह बताती हैं कि बहुत से आत्मसमर्पण करने वाले उग्रवादी महसूस करते थे कि 'असल उग्रवादी' बने रहना उनके लिए बेहतर था। आत्मसमर्पण करने के बाद उनके पास कोई आजीविका का साधन नहीं था और वे अपने घर को छोड़ने से डरते थे। उन्हें लगता था कि उन्हें मार दिया जाएगा। आम जनता की भावना अभी भी विद्रोहियों के पक्ष में थी और जैसा कि (एक विद्रोही) ने कहा, उन्हें अक्सर अपने ही विस्तारित परिवार द्वारा ताना दिया जाता था। 'वे मुझसे पूछते हैं कि मैंने आत्मसमर्पण करके क्या पाया।' जितना यह जटिल लगता है, उससे भी जटिल है सेना और बीएसएफ के बीच प्रतिद्वंद्विता: सलीम जावेद, जिनसे मैं मिली, अपनी चोटें दिखा रहा था। उसका 'अपराध?' उसने सेना के सामने आत्मसमर्पण किया था, बीएसएफ के सामने नहीं। मुझे तब झटका लगा जब किसी ने कहा, 'बीएसएफ अधिकारी हमें कहते हैं कि फिर से हथियार उठाओ और उसे उनके सामने सौंप दो।' यह तीव्र प्रतिद्वंद्विता आतंकवाद विरोधी अभियानों को कमजोर कर रही थी।

यह किताब व्यापक रूप से घटनाओं और विषयों को कवर करती है, यहाँ तक कि पहलगाम हमले को भी जिसमें निर्दोष पर्यटकों की जानें गईं, इस घटना ने एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल में सुरक्षा की कमी को उजागर किया और इससे स्थानीय लोगों की बहादुरी सामने आई जिन्होंने जितना संभव हो सका उतने लोगों की जान बचाई। हरिंदर बावेजा संतुलित और संयमित लहजे में अपराधियों को इंगित करने से भी नहीं हिचकिचाती। हमारे सामने कुछ चौंकाने वाले तथ्य भी आते हैं कि भारतीय सैनिकों ने कारगिल युद्ध में कितने असंभव दबावों के तहत लड़ाई लड़ी, जो यह याद दिलाते हैं कि हमारे पास वास्तव में बहुत कुछ जश्न मनाने के लिए नहीं है। अन्य शब्दों में, यह किताब वास्तविकता बयां करती है।

दरअसल, यह किताब मुझे 2015 में प्रकाशित *द इमरजेंसी* नामक किताब की याद दिलाती है, जिसे अद्भुत पत्रकार कूमी कपूर ने लिखा था। यह उनका उस समय का व्यक्तिगत संस्मरण हैं जब उनके पति वीरेन्द्र कपूर और अनगिनत अन्य लोगों को असुरक्षित और प्रतिशोधी नेतृत्व द्वारा जेल में बंद किया गया। जाना-पहचाना लगता है? लेकिन यह लगभग पचास साल पहले की बात है! फिर भी, यह याद करने का सही समय है कि जब अधिकांश प्रेस झुक गई थी, कुछ ने हिम्मत दिखाई और संघर्ष जारी रखा। उन्होंने लिखा: जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने इतना दबाव होने के बावजूद भी सरकार के खिलाफ लड़ाई कैसे जारी रखी, जिसमें गंभीर वित्तीय और व्यक्तिगत परिणाम भी शामिल थे, तो रामनाथ गोयनका (*द इंडियन एक्सप्रेस* समूह के प्रमुख) ने उत्तर दिया, 'मेरे पास दो विकल्प थे: अपने दिल की सुनना या अपनी जेब की। मैंने अपने दिल की सुनी।' इंडियन एक्सप्रेस उन कुछ अखबारों में से एक था जिसने साहसिक रूप से प्रकाशन जारी रखा, जबकि कई समाचारों के कॉलम सेंटीमीटर रोज़ाना सेंसर द्वारा ब्लैक आउट कर दिए जाते थे।

यहाँ *द इमरजेंसी* से एक छोटा पद्यांश है: उन्हें (इंदिरा गांधी) दिसंबर 1971 के बाद मिली प्रशंसा (जब भारत ने पूर्वी पाकिस्तान को आज़ाद कराने/बांग्लादेश का निर्माण करने में मदद की) और उसके बाद हुए विधानसभा चुनावों में उनकी भारी जीत ने श्रीमती गांधी की महामानसिकता को हवा दी। चापलूसों के माहौल में घिरी, श्रीमती गांधी ने पार्टी को एक एकल-पात्र शो की तरह चलाया। उन्होंने अपने पिता द्वारा स्थापित लोकतांत्रिक ढाँचे को नष्ट करना शुरू कर दिया। उन्होंने शक्तिशाली मुख्यमंत्रियों को विधायकों से सलाह लिए बिना हटा दिया और उनकी जगह हल्के पदाधिकारी नियुक्त किए। उनके कैबिनेट मंत्री उनके आदेशों को पूरा करने वाले रबर स्टैम्प थे ये शब्द आश्चर्यजनक रूप से भयावह और प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

रो ई मंडल 3181

रोटरी क्लब उप्पिनंगड़ी

क्लब अध्यक्ष जॉन कैन्यूट, सचिव श्रीकांत पटेल, कोषाध्यक्ष अब्दुल रहमान और एजी राजाराम के बी की उपस्थिति में पीडीजी विक्रम दत्ता द्वारा एक दिव्यांग बच्चे को श्रवण यंत्र दिया गया। मंडल टीआरएफ वार्षिक कोष के अध्यक्ष सूर्यनारायण के भी वहां मौजूद थे।

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3191

रोटरी क्लब बैंगलोर राज राजेश्वरी नगर सेंटेनियल

आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के 130 युवा छात्रों की मदद के लिए पट्टनगेरे सरकारी स्कूल में यूनिफॉर्म वितरित की गई।

रो ई मंडल 3203

रोटरी क्लब पोल्लाचि

कोयंबटूर स्थित गंगा अस्पताल के सहयोग से श्री सरस्वती त्यागराज कॉलेज में कैंसर और मधुमेह जांच शिविर आयोजित किया गया। महिलाओं में स्तन कैंसर की जांच के लिए मैमोग्राम परीक्षण किया गया।

रो ई मंडल 3211

रोटरी क्लब मावेलिकारा

मार्शल आर्ट विशेषज्ञों की एक टीम द्वारा सेंट मैरी कैथेड्रल पब्लिक स्कूल, मावेलिकारा, में लड़कियों के लिए एक सप्ताह का आत्मरक्षा प्रशिक्षण आयोजित किया गया। उन्हें स्थितिजन्य जागरूकता और मानसिक तैयारी के बारे में भी सिखाया गया।

रो ई मंडल 3182

रोटरी क्लब चिकमगलूर-कॉफी लैंड

153 चार्टर सदस्यों के साथ, रो ई मंडल 3182 का सबसे बड़ा इंटरेक्ट क्लब प्राइड यूरो स्कूल में स्थापित किया गया। मंडल-इंटरेक्ट क्लब के उपाध्यक्ष रविंद्रनाथ नायडू ने नए अध्यक्ष विजेंद्र जैन और सचिव हर्षिता को पद का पिन लगाया।

रो ई मंडल 3231

रोटरी क्लब तिरुवन्नामलई गैलेक्सी

ग्रामीण समुदाय के लाभ के लिए नायडू मंगलम टी एम प्राइमरी स्कूल में बालाजी नेत्रालय नेत्र अस्पताल के साथ मिलकर एक विशाल नेत्र जांच शिविर आयोजित किया गया।

रो ई मंडल 3291

रोटरी क्लब साल्ट लेक मेट्रोपॉलिटन कोलकाता

79वें *मातृ रक्षा* और मोतियाबिंद शिविर में 150 लोगों की एनीमिया, मासिक धर्म संबंधी रोग, मधुमेह, बीपी, हड्डी रोग और मोतियाबिंद की समस्याओं के लिए जांच की गई। *मातृ रक्षा* परियोजना से अब तक करीब 7,500 महिलाएं लाभान्वित हो चुकी हैं।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

ENHANCE ENGAGEMENT BY ASKING MEMBERS WHAT THEY WANT

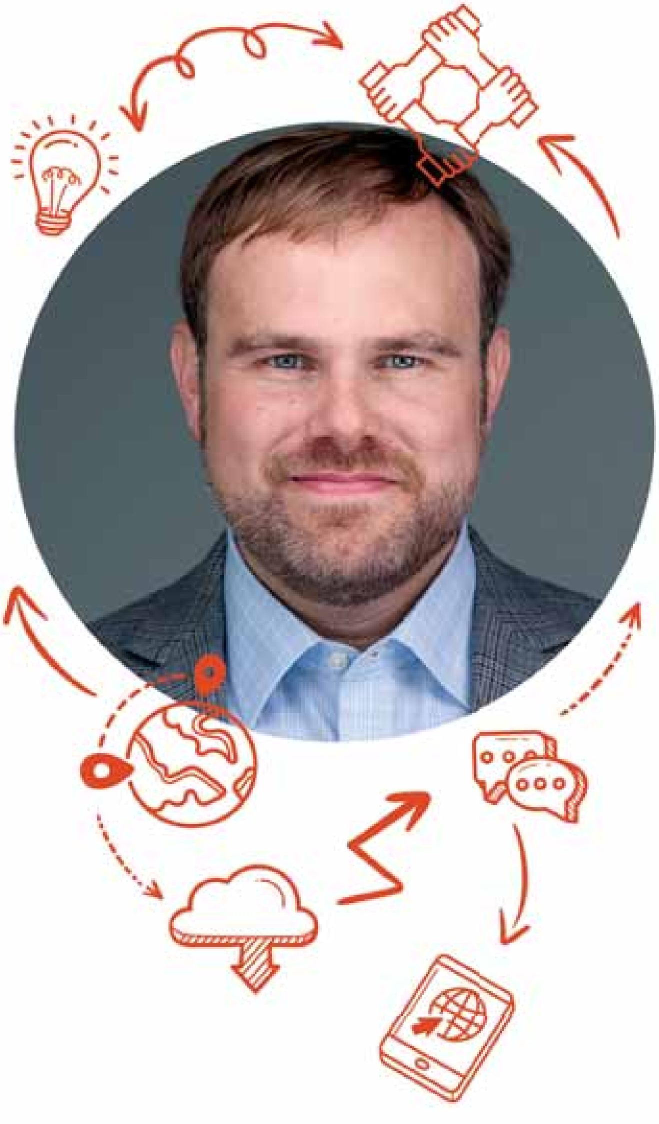

Ensure that members know Rotary's full scope

Scott Learned attended his first Rotary meeting at age six. He came along to help his dad, a Rotarian, with a presentation about how useful computers could be.

Learned eventually became president of that club, the Rotary Club of Boise, Idaho, USA, and found that it, like many other clubs, sometimes faced challenges retaining members. While reviewing exit interviews for clues on how to keep people engaged, he realized that the familiarity he'd grown up with was missing.

"It seemed some exiting members didn't fully get introduced to the big picture of Rotary," says Learned, who is now District 5400's learning facilitator. "They didn't understand how they were part of something bigger and how their work, their gifts, could travel far beyond their club and actually impact lives in other communities and even on other continents."

Learned saw an opportunity to bridge that gap. As his district's Action Plan champion, he used resources from rotary.org/actionplan to guide conversations with members about what they wanted from Rotary, building on what he'd learned from the exit interviews. When club leaders ask members what they want from Rotary and then recommend relevant programs and activities, it creates a positive club experience that helps retain members and attract new ones.

Learned found that several clubs had already started revamping their introductory materials to address the situation. He combined the ideas he heard with the materials other Rotarians generously shared to create Rotary 101, a program that ensures that members have the knowledge they need to find meaningful ways to engage with all Rotary has to offer.

Scott Learned (left) with his dad, Kevin Learned

Programs and offerings empower members to make an impact

"Our goal is to educate and empower members," Learned says. "We want every Rotarian to understand the avenues available to them to make an impact locally and globally." Newer members might discover programs like Rotary Friendship Exchange or learn how to use resources like the Learning Center. And long-term members might find new ways to be people of action, like getting involved with their district resource network or the Cadre of Technical Advisers.

Through Rotary 101, members are introduced to essential aspects of our organization, including local club dynamics, Rotary International's structure, and the work of The Rotary Foundation. By clarifying Rotary's structure and highlighting transformative projects, members get a deeper understanding of our global impact.

Find opportunities to survey members on their satisfaction

A valuable component of this Rotary introduction is the participant survey. Through this questionnaire, the district can continue to refine its Rotary 101 content based on members' interests and needs. This is similar to **Rotary's customizable member satisfaction survey**. By asking members for feedback regularly and then responding to it, clubs can identify what their members like and dislike about their club experience and develop plans to address those concerns and preferences.

That "take a leap and make it your own" mentality is one of the key ideas the Rotary introduction seeks to spark and nurture.

"If there's a project or issue that interests you, it's very likely there's a Rotarian working on it, and you're within an introduction or two from meeting them and taking action," Learned says. "Rather than six degrees of separation, at Rotary it's only two or three degrees, because our global network connects people all over the world with a common intent to do good. To me, that truly is the power of Rotary that club onboarding helps everyone to see."

Visit rotary.org/actionplan to find the Action Plan Toolkit to help you enhance engagement, including the member satisfaction survey.

हौले-हौले पढ़ना, जल्दी-जल्दी पीना

LBW

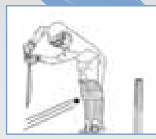

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

ज्यादातर लोग धीरे-धीरे पीते हैं और जल्दी-जल्दी पढ़ते हैं। मैं इसके बिल्कुल विपरीत हूँ। मैं लेखन को स्वाद लेकर पढ़ता हूँ और शराब को एक घूँट में गटक जाता हूँ। जैसा कि कहावत है, यह सब अपनी-अपनी पसंद की बात है। और जाहिर है, ये दोनों काम अलग-अलग किए जाने चाहिए - बेहतर होगा कि दोपहर में पिया जाए और रात में पढ़ा जाए। आखिर बुढ़ापा और रिटायरमेंट किसलिए होते हैं? पढ़ने और पीने के लिए। हालाँकि, पढ़ने और पीने-दोनों के साथ अपने-अपने जोखिम जुड़े होते हैं। दोनों ही आपको नरमदिल और विचारशील बना देते हैं, और कभी-कभी मैं उन लोगों की संतुष्टि से ईर्ष्या करता हूँ जो न पढ़ते हैं और न पीते हैं। वे बहुसंख्या में हैं और सिर्फ इसी कारण अनुकरणीय हैं। अगर मैं बाइबल की उस पुरानी कहावत को थोड़ा संशोधित करके कहूँ, तो: 'न तो पाठक बनो और न ही पियक्कड़।' असल बात यह है कि दोनों ही गतिविधियाँ बेहद ही नशीली हैं। एक बार आप इस राह पर चल पड़े, तो जब तक आप बहुत मज़बूत इरादों वाले न हों, आपका आर्थिक बंटाधार होना तय है।

आपको अपनी व्हिस्की भी चाहिए और अपनी किताबें भी। मैंने दोनों की तुलनात्मक लागत का पूरा विश्लेषण किया है, क्योंकि अच्छे से अच्छे समय में भी पैसा सीमित ही होता है। खासकर सेवानिवृत्ति के बाद, संसाधनों का कुशल आवंटन करना अनिवार्य हो जाता है। और मेरा विश्वास कीजिए, जैसा कि अब समाप्त हो चुके 'योजना आयोग' का कोई भी अध्यक्ष आपको बता देगा, कि कुशल आवंटन से कठिन कुछ भी नहीं होता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो आज कुशल है, ज़रूरी नहीं कि वह कल भी रहे। हो सकता है कि आज आप तीन बड़े पैग पिएं, एक अध्याय पढ़ें और संतुष्ट महसूस करें। लेकिन कल आपको शायद इसके बिल्कुल विपरीत की आवश्यकता हो। तो हर महीने की पहली तारीख को आपको व्हिस्की की कितनी बोतलें और कितनी किताबें खरीदनी चाहिए? अर्थशास्त्र इसे गतिशील अनुकूलन की समस्या कहता है जिसका कोई एक समाधान नहीं होता है।

जब मैंने 53 साल पहले काम करना शुरू किया था, तब मेरे सामने यह समस्या नहीं थी। एक प्रकाशन संस्थान में नौकरी करने के कारण, किताबें प्रचुर मात्रा में थीं और लगभग, या पूरी तरह से मुफ्त मिल जाती थीं। तो एक तरह से व्हिस्की भी मुफ्त ही हो गई, क्योंकि अब मैं महीने की पहली तारीख को पाँच बोतलें खरीद सकता था - तीन मेरे लिए और दो उन अपरिहार्य मेहमानों के लिए जो इस बात का फायदा उठाने आ जाते थे कि घर की रखवाली करने के लिए उनकी पत्नी नहीं थी।

जैसा कि आपने अनुमान लगा लिया होगा, यह सब सिर्फ किताबों और शराब तक सीमित नहीं था। सिगरेट का खर्च भी तो था। मैं महीने की पहली तारीख को दो कार्टन खरीदा करता था। मुझे महीने में 300 सिगरेटों की जरूरत होती थी। और हालाँकि भौतिकशास्त्री और गणितज्ञ इस बात पर जोर देते हैं कि तीन चरों वाली प्रणाली स्वाभाविक रूप से अस्थिर होती है, लेकिन मैंने इसे भी स्थिर करने में सफलता पा ली थी। यह किसी भी गणितज्ञ द्वारा खोजे गए समाधानों में से लगभग एक 'परफेक्ट' समाधान था। इसका राज़ यह था कि बाकी दो खर्चों (शराब और सिगरेट) को स्थिर रखते हुए, किताबों को परिवर्तनीय लागत बना दिया जाए। पचास रुपये में मैं एक दर्जन किताबें ले आता था और साथ ही एक दर्जन और मुफ्त मिल जाती थीं, क्योंकि कंपनी उन्हें अपने स्टॉक से हटा दिया करती थी।

लेकिन हर अच्छी चीज़ का अंत होना ही होता है और 45 साल पहले मैं बहुत कम वेतन पर एक पत्रकार बन गया। साथ ही, मैंने शादी भी कर ली। आमदनी घट गई और खर्चे बढ़ गए। अब आप कल्पना कर सकते हैं कि संसाधनों के आवंटन की समस्या कितनी कठिन हो गई होगी। अब सवाल सिर्फ शराब और किताबों के बीच आपसी बंटवारे का नहीं था, बल्कि एक और बहुत बड़े मुद्दे का था: कुशलता, जिसे अब मेरी पत्नी द्वारा परिभाषित किया जाता था। अंततः हम एक समझौते पर पहुँचे। वह नहीं पढ़ेगी, या बहुत कम पढ़ेगी, लेकिन यह वही तय करेगी कि कितनी बोतलें खरीदी जानी हैं। निष्पक्षता के हित में, और काफी सौदेबाजी के बाद, यह तय हुआ कि दोनों चीजें दो-दो ही खरीदी जाएंगी। इसमें मुझे पउए के जरिए और उसे पत्रिकाओं के जरिए चोरी-छिपे हेरफेर करने की अनुमति थी। उसका कहना था कि पत्रिकाएँ किताबें नहीं होतीं, और मैं कहता था कि पउआ कोका-कोला की तरह होता हैं। उसने कहा कि तुम मेरी पत्रिकाएँ पढ़ सकते हो और मैंने कहा कि तुम मेरा पउआ साझा कर सकती हो। आप समझ रहे हैं न? यह दो देशों के बीच होने वाले व्यापारिक समझौते जैसा था। एक अजीब तरीके से हम दोनों को फायदा हुआ। मैंने और अधिक पउए खरीदे जिससे नकदी प्रवाह में मदद मिली, और इससे उसे और अधिक पत्रिकाएँ पढ़ने की सुविधा मिली। ■

Contact: +918903660689

www.rjmantra.com

ADMISSIONS OPEN

FOR 2026

THIS IS WHAT HAPPENS WHEN MANTRITES PLAY 365 DAYS A YEAR

- Enhances Grit and Resilience
- Fires up Team Spirit
- Boosts Confidence and Focus

Join the dynamic learning community where the younger generation is conditioned for future-ready skills

RJ MANTRA — LEARN THE MAGIC OF LEARNING

RJ MANTRA ENGLISH SCHOOL

(Affiliated to CISCE- TN 082)

Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month. Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month.
Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26 | issue, including cover, 84. Price: ₹40

ADVT.

Rotary Club of VIRUDHUNAGAR

UNITE FOR GOOD

BACK TO RID 3212

VIGNANA RATHAM

Science made easy

The "Science on Wheels" initiative, designed to promote scientific awareness among school students, has successfully concluded its educational outreach over the past six months across the states of Karnataka, Goa, and Maharashtra (Innerwheel Dist. 317) and is now Back to RID 3212.

We are pleased to inform that institutions and organizations in Tamil Nadu interested in availing the services of the "Science on Wheels" program may commence advance bookings starting from this month.

DO YOU WANT

to have **VIGNANA RATHAM** travelling to a school in your Town / City / District?

We would love to partner with you in this mission.

Project Chairman
Rtn. R.Vadivel

Project Concept
Dr. Pasupathy

LEKHA ads/FEB 26/ Rotary/BW

GET IN TOUCH WITH US
94422 48586

IDHAYAM
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

PARIKSHAN
CHARITABLE TRUST
Empowering society through Science...